राज
कॉमिक्स विशेषांक
मूल्य 25.00 संख्या 137
कलियुग
नागराज, सुपर कमाण्डो ध्रुव और शक्ति

★ चंडकाल एवं निशाचर के बारे में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें: **महाकाल और निशाचर।**

फिर हम क्या करें, असुरराज शंभूक? मानवों को हम नष्ट तो आसानी से कर सकते हैं, पर इससे भीषण देवासुर संग्राम होने की आशंका है। यह युग चाहे कलियुग हो, पर मानवों की भक्ति अभी भी देवों के प्रति है, और इस कारण हम उन पर भारी नहीं पड़ सकते। ... वैसे भी हमको मानवों के नष्ट होने से कोई फायदा नहीं है। क्योंकि हमको तो उनकी भक्ति चाहिए।
उनकी भक्ति हमें तभी मिलेगी, जब वे हमारी शक्ति को मानेंगे! यही तो निशाचर कर रहा था। परन्तु असफल रहा। अब तो देवता भी सतर्क हो गए होंगे। हमारे ऐसे किसी भी प्रयास को वे विफल करने की पूरी कोशिश करेंगे।
... अगर असुरी शक्ति का प्रयोग करना निष्फल है वत्स...
...तो देवों की शक्ति का प्रयोग करो। उनकी ही शक्ति से उनको मात दो। क्योंकि अपनी शक्तियों की काट खुद उनके पास नहीं होगी।
गुरुवर शुक्राचार्य! सदैव की तरह आपका सुझाव मेरी बुद्धि को पार करता हुआ शून्य में चला गया है!
देवों की शक्ति का प्रयोग भला हम कैसे कर सकते हैं!
देवों ने अपने वरदानों के रूप में अपनी शक्तियों को ऐसे बांटा है, जैसे कुबेर मुद्राएं बांटता फिरता है। बस ऐसे किसी प्राणी से, देवों की शक्ति छीन लो।
फिर मैं उस शक्ति को ऐसा परिष्कृत कर दूंगा कि देवता स्वयं भी उसको काट नहीं पाएंगे!

ओह! इसके लिए हमको उन मानवों को ढूंढना होगा, जो देवों द्वारा वर प्राप्त किए हुए हैं। और ऐसे लोगों को ढूंढना ज्यादा मुश्किल नहीं होगा। क्योंकि कलियुग में ऐसे ज्यादा मानव नहीं हैं। परन्तु उनका पता लगाकर उनसे शक्ति छीनने का काम बहुत शीघ्रता से करना पड़ेगा। क्योंकि हमारे ऐसा करते ही देव हमको रोकने की कोशिश अवश्य करेंगे।
तुम बहुत आगे की सोच रहे हो असुरराज शंभूक। पहले ऐसे मानव तो ढूंढो, और उनसे शक्ति छीनने के लिए महापापी असुर योद्धाओं को भेजो...
...उसके पश्चात आगे की योजना बनाते हैं!
दुनिया में ऐसे मानव सचमुच गिने-चुने ही हैं, जिनके अन्दर देवों के आशीर्वाद के कारण शक्तियां हैं। और इनमें से एक है...
...नागराज-
पिछले कुछ दिनों से अपराधों की वारदातें भी एकाएक बढ़ गई हैं, और अपराधियों की हिम्मत भी! एकाएक ऐसा क्या हो गया कि इनका नागराज फोबिया भी खत्म हो गया है?
क्या हो सकता है इसका कारण?

कुछ दिनों पहले तक तो पूरी दुनिया से ही हिंसा और अपराध बढ़ने की खबरें आ रही थीं। अब दुनिया का तो पता नहीं पर महानगर में अभी भी ये घटनाएं इतनी हैं कि मुझे और मेरे जासूस सर्पों को दिन-रात व्यस्त रख सकें।
नागराज यह नहीं जानता था कि अपराधों की इस बाढ़ का कारण निशाचर द्वारा अपने पीछे छोड़ दिया गया पाप है–
तड़ाकक
और यह पाप, अभी भी पापी मानवों को सत्य को खत्म करने की प्रेरणा दे रहा था–
तड़ाक
और नए-नए तरीके भी सुझा रहा था–
तेरा काम करने का तरीका बड़ा बोरिंग है, नागराज! एक जैसा! तेरे जासूस सांप अपराध होते देखते हैं, तुझे सन्देश भेजते हैं...
कौन?
...और तू आ टपकता है, तुझे जाल में फंसाने का इससे अच्छा तरीका और क्या हो सकता है?
नागमणि! प्रोफेसर नागमणि!
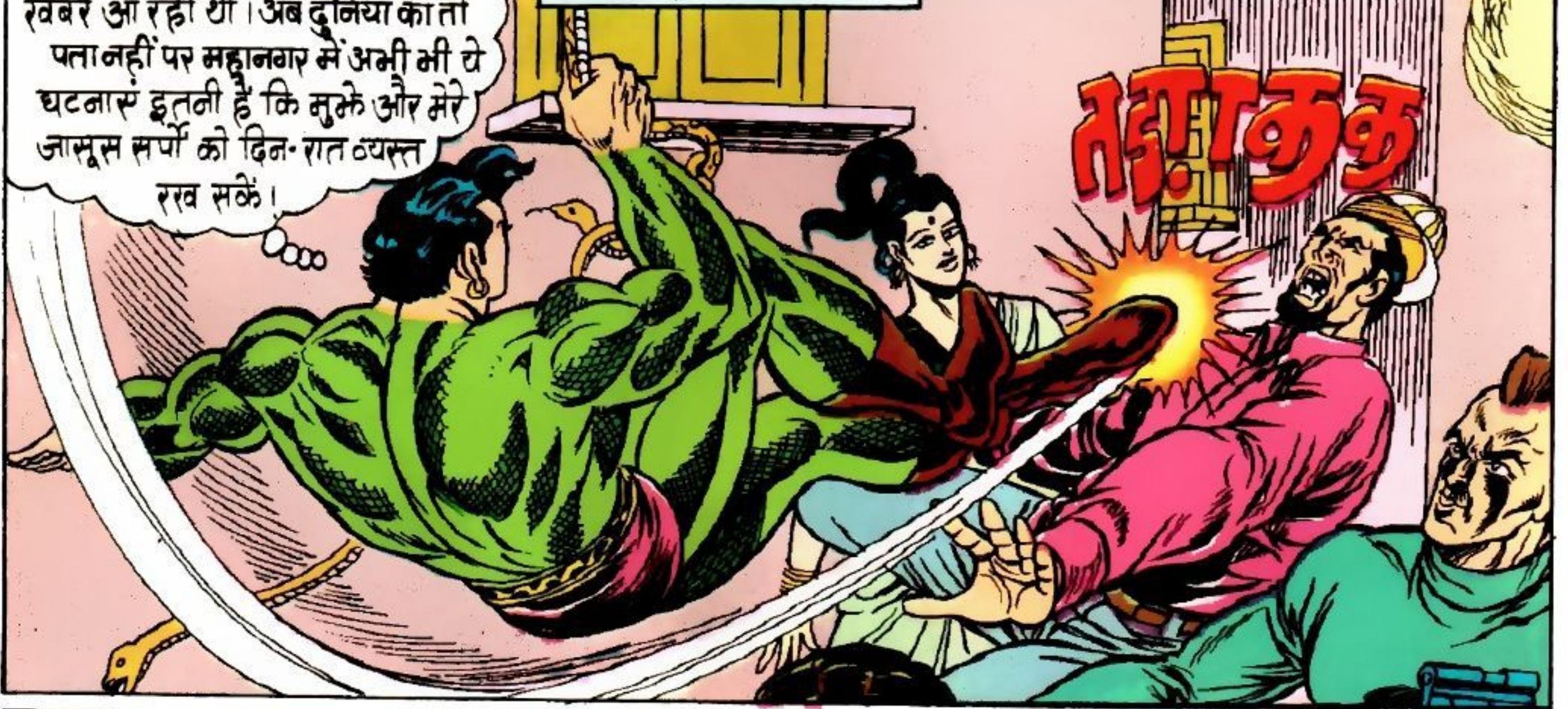
★ इस संबंध में जानने के लिए पढ़ें:- **स्नेक पार्क**

और इसे मैं अपने शरीर पर इसका परीक्षण करने की इजाजत नहीं दे सकता। इसको रोकना होगा!
आऽऽऽह!
पहले दो गुंडों को तो नागराज ने वार करने से रोक लिया–
लेकिन नागराज अपने शरीर पर पड़ने वाले वारों को बचाने का आदी नहीं था! कुछ नुकीले हथियारों ने अपना निशाना ढूंढ़ ही लिया–
आऽऽह! ये तो किसी किस्म के इंजेक्शन हैं! जानवरों को काबू में करने वाले 'ट्रैंक्विलाइजिंग डॉर्ट्स' की तरह!
तू भी तो एक जानवर ही है नागराज! एक इच्छाधारी सांप!
नहीं, नागमणि! मैं इच्छाधारी नाग मानव नहीं, बल्कि इच्छाधारी मानव नाग हूं। पर तूने मुझ पर चलाया क्या है? क्या है इन इंजेक्शनों में?
हा हा हा! अब तक मैं तुझे हराने के लिए नए-नए किस्म के जहर बनाने में अपना समय वेस्ट कर रहा था नागराज! लेकिन इस बार मुझे एक नया आइडिया मिला!
और इस बार मैंने जहर नहीं जहर की काट बनाई है। तेरे जहर की काट! एक सुपर 'एंटीवेनम'!
और अब ये 'एंटीवेनम' तेरे शरीर में प्रवेश करके तेरे जहर को पानी बना रहा है। अब जल्दी ही तेरा जहर भी खत्म हो जाएगा और उस जहर में पलने वाले तेरे सूक्ष्म नाग भी। फिर खत्म होंगी तेरी शक्तियां, और फिर खत्म होगा तू!
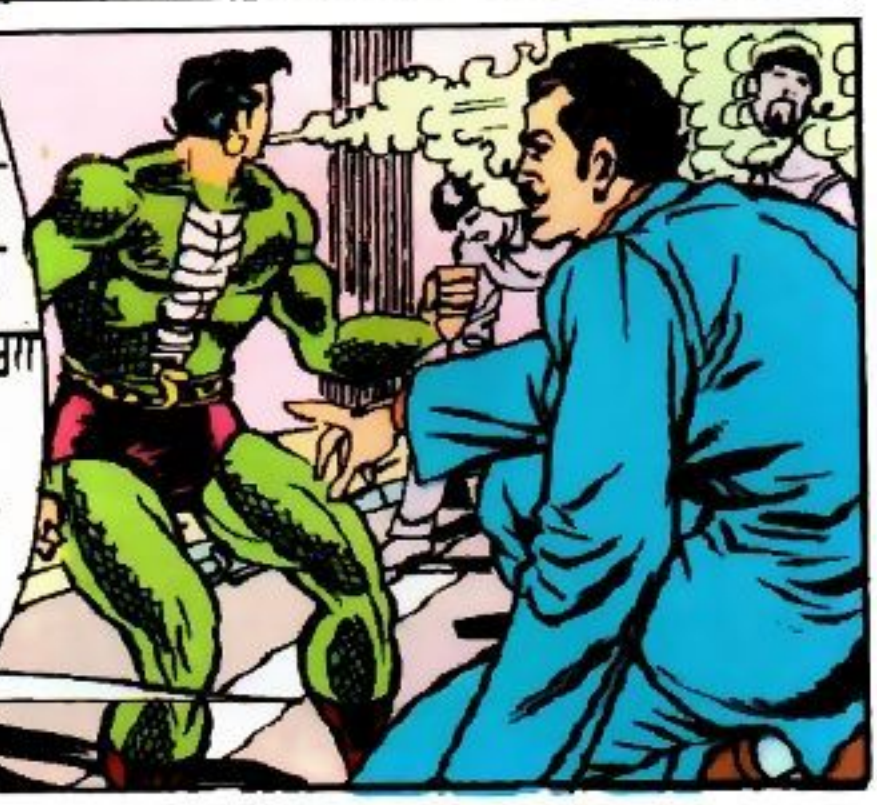
शायद नागमणि सत्य कह रहा है। मेरी विष फुंकार ने बाकी बचे दो गुंडों को बेहोश तो कर दिया है, लेकिन इस बार न तो उसमें पहले की तरह सा प्रेशर था और न ही तीव्रता ! क्या सचमुच मेरा जहर पानी बन रहा है ?
नागराज को कुछ ही पलों में जवाब मिल गया-
मुझे अपनी रगों में बहते सांप मरते महसूस हो रहे हैं। साथ ही साथ मुझे कमजोरी भी लग रही है, इसका एक ही अर्थ हो सकता है कि मेरा जहर सचमुच पानी बन रहा है !
और मेरा कितना जहर पानी बनेगा, यह 'एंटी वेनम' की मात्रा पर निर्भर करेगा, जो मेरे शरीर के अन्दर है !
खैर, वह मात्रा चाहे जितनी भी हो, फिलहाल तो मेरे सूक्ष्म सर्प नष्ट होने के कारण मुझे इतनी कमजोरी लग रही है कि मैं खड़ा तक नहीं हो पा रहा हूं !
गिर गया नागराज ! मैं इसी वक्त का इन्तजार कर रहा था ! अब मैं इस तलवार से तेरी गर्दन काटूंगा, और तू कुछ नहीं कर पाएगा !
सांय
मैं फिलहाल शक्तिहीन ही सही, पर मुझे मारना अभी भी इतना आसान नहीं है। मेरे सर्पों को जिन्दा रहने के लिए सिर्फ तभी मेरे जहर की जरूरत पड़ती है, जब वे सूक्ष्म रूप में रहते हैं ! इसीलिए मैं उनको सूक्ष्म रूप में रहने नहीं दूंगा ! तब न वे मरेंगे...

... और न ही तुम्हें ... आह... मुझ पर वार करने देंगे!
कमजोर होते नागराज की यह बचने की आखिरी कोशिश थी-
पर ऐसा करने से मैं कमजोरी से लगभग बेहोश हो जाऊंगा!
?
और कुछ पलों तक यह कोशिश कारगर सिद्ध होती रही-
अच्छी चाल है नागराज! पर इस दीवार को तोड़ने में मुझे ज्यादा वक्त नहीं लगेगा! मेरा 'एंटी-स्नेक स्प्रे' तेरे सांपों को इधर-उधर भागने पर मजबूर कर देगा!
आऽऽह! मेरे सांप भी शरीर से निकल गए हैं, और मेरा विष भी तेजी से नष्ट होता जा रहा है। इस दुहरी कमजोरी की हालत में मैं नागमणि का तो क्या, एक नेवले तक से मुकाबला नहीं कर सकता...
... पर मैं नागमणि को सफल होने नहीं दे सकता! नहीं दे सकता!...
... नहीं दे सकता!
नागराज ने अपनी बची-खुची शक्ति बटोरी-
और कमजोर नागराज का भी वह वार नागमणि को बेहोश करने के लिए काफी था-
लेकिन नागराज को बचाने वाला कोई भी नहीं था-
आऽऽह! नागमणि तो मेरी जान नहीं ले सका, पर मेरी जान अपने आप ही निकलने वाली है, मेरे सर्प तो फिर द्विगुणित हो सकते हैं, पर मेरा विष दुबारा नहीं बन सकता। और अगर विष दुबारा न बना तो सर्प भी द्विगुणित नहीं हो पाएंगे!...

...और मेरे शरीर के सूक्ष्म सर्प मेरे विष में ही पनप सकते हैं।... विष की मात्रा अगर जल्दी ही न बढ़ी तो कमजोरी के कारण मेरी हृदय गति भी रुक सकती है! ये विष तो मुझे देव कालजयी ही वरदान में दे सकते हैं! उनका ही ध्यान करना होगा!
नागराज ने देव कालजयी का ध्यान लगाया-
और कालजयी तड़प उठे-
ओह! मेरा भक्त नागराज मुझे पुकार रहा है! पर मैं उसकी मदद के लिए पृथ्वी पर नहीं जा सकता! क्योंकि देवराज को देवों पर दैत्यों के हमले की आशंका है...
...और उन्होंने हर देवगण से हर समय स्वर्ग में ही उपस्थित रहने को कहा है। मैं उनकी आज्ञा टाल कर पृथ्वी पर नहीं जा सकता!
नागराज चौंक उठा-
ओह! देव कालजयी! अब तक मेरी पुकार सुनकर अवश्य आ जाते! उनका न आना इस बात का संकेत है कि या तो वे मेरी पुकार नहीं सुन पा रहे हैं, या स्वयं आने में असमर्थ हैं!
ओह! नागराज का मानसिक संकेत मेरे पास आ रहा है। नागराज किसी मुसीबत में है! अपने आपको मेरे द्वारा यहां पहुंचाना चाहता है। मैं अभी उसे दूर प्रेषित तंत्र से यहां बुला भेजता हूं!
अब मैं क्या करूं? इस धरती पर तो देव कालजयी जैसा विष मिल पाना असंभव है। चाहे हिमालय की ऊंचाई छान मारूं या महासागरों की गहराई... ओह! महासागर!
एक स्थान है, जहां से देव कालजयी का विष मिल सकता है। परन्तु इस अवस्था में मैं अपने आप वहां तक नहीं पहुंच सकता! मुझे मानसिक संपर्क साधना होगा, नागद्वीप में...
"...महात्मा कालदूत से"

महात्मा कालदूत ने अपनी तरंगों को प्रेषित करना शुरू कर दिया, और नागराज का शरीर कणों में बदलकर नागद्वीप स्थित महात्मा कालदूत की गुफा में खिंचना शुरू हो गया-

कुछ ही पलों बाद नागराज सशरीर कालदूत की गुफा में उपस्थित था-

अधमरी हालत में-

नागराज! यह तुमको क्या हो गया है? किसने बना दी तुम्हारी ऐसी हालत? बताओ नागराज, बताओ!
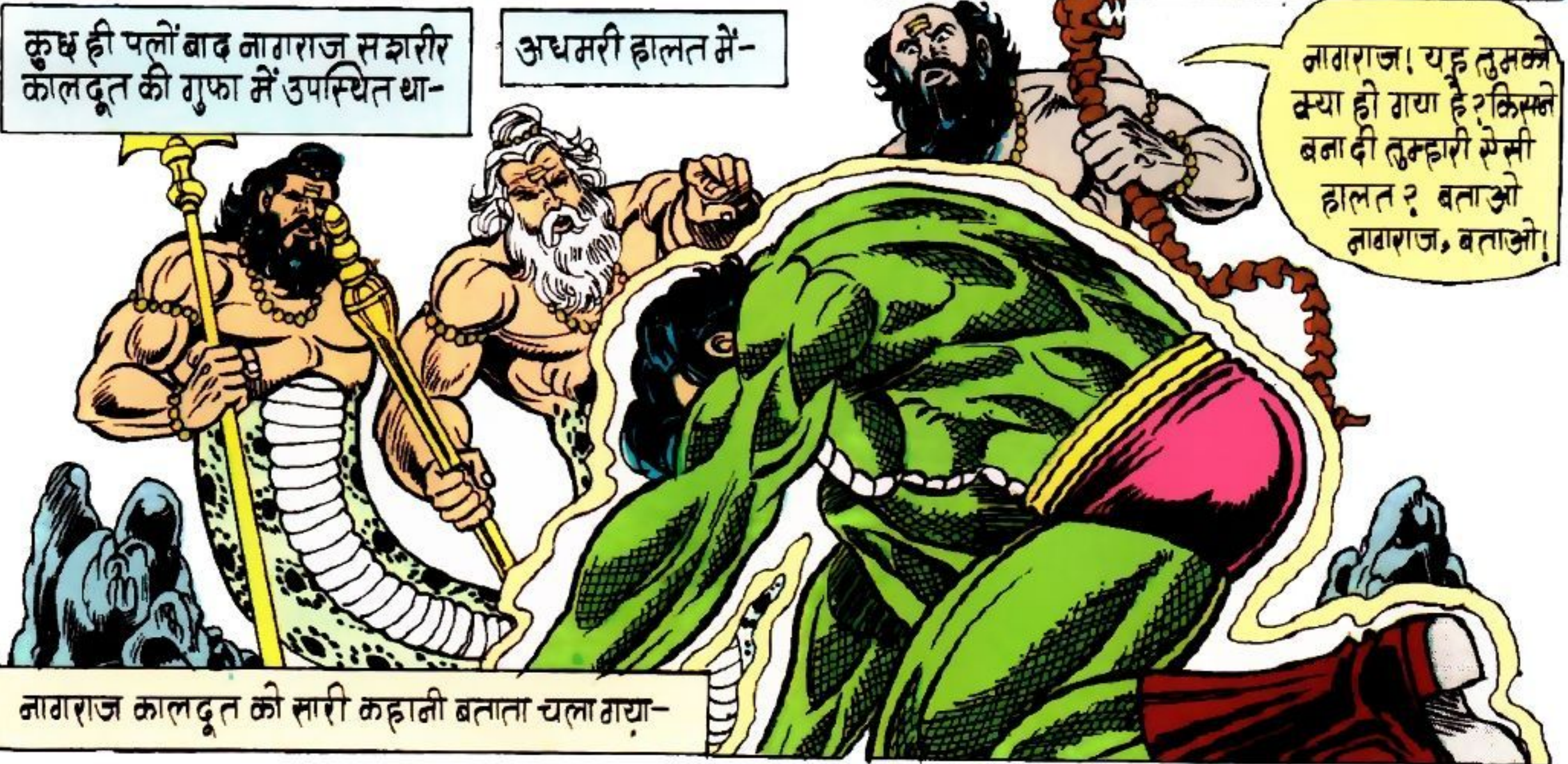
नागराज कालदूत को सारी कहानी बताता चला गया-

अरे हां! उन पौधों ने तुम्हारे बाल-शरीर का वह अतिरिक्त विष सोख लिया था, जिसके कारण तुम मूर्च्छित अवस्था में थे। वह अतिरिक्त विष तो अभी भी उन पौधों के फलों में मौजूद है। मैं अभी मंगवाता हूं वे विशेष फल!

★ इस संबंध में जानने के लिए पढ़े:-क्राइम किंग

कुछ ही मिनटों बाद नागराज देव कालजयी के विष से भरे वे अद्भुत फल चबा रहा था-
अब कुछ चैन पड़ा महात्मन्! परन्तु अभी भी भीषण कमज़ोरी का आभास हो ही रहा है!
यह विष तुम्हारे शरीर के रक्त में विष का स्तर बढ़ाएगा तो, पर कुछ समय भी तो लेगा, नागराज! और वह स्तर बनने के बाद ही तुम्हारे सूक्ष्म सर्प द्विगुणित होना शुरू होंगे। और उनकी संख्या सन्तोषजनक होने के बाद ही तुम पूरी शक्ति महसूस कर पाओगे!
तब तक तुम आराम करो, और हम तुम्हारी इस नई समस्या पर विचार करते हैं कि तुम्हारे विष में प्रतिविष मिलने पर ऐसी स्थिति को उत्पन्न होने से कैसे रोका जा सकता है...
परन्तु नागराज को आराम करने का समय नहीं मिलने वाला था-
क्योंकि कोई नागराज की तलाश में नागद्वीप के पास ही प्रकट हुआ था-
देव कालजयी और देवराज इन्द्र का अनुमान पूरी तरह से सही नहीं था-
असुर स्वर्ग पर हमला करने के बजाय, पृथ्वी को अपना निशाना बना रहे थे-
अगर मेरी आसुरी शक्तियां सही काम कर रही हैं तो नागराज नामक मानव यहीं इसी द्वीप में मौजूद है। उसके अन्दर देव कालजयी के वरदानस्वरूप जो शक्तियां हैं मुझे उनको लेकर असुरलोक जाना है। मेरे जैसे और भी असुर ऐसे ही अन्य मानवों की तलाश में आए हुए हैं। पर सफल मुझे ही होना है। क्योंकि जो असुर इस काम को अन्जाम देगा, उसे असुरलोक में बड़ा मान सम्मान यश और पद मिलेगा।
और यह यश और पद नेवलाश बली को ही मिलेगा!
अरे! कौन है तू दुष्ट? नागद्वीप पर आने का साहस तूने कैसे किया?
इसके इरादे अच्छे नहीं लगते। खत्म कर दो इसे!

तीव्र विष में बुझे भाले, उस जहर को नेवलाग बली के शरीर में उतार देने के लिए लपके-

नेवलाग को मारेगा? नेवलाग बली को! ले, मार ले! फिर मत कहना कि असुर मौका नहीं देते! पीछे से वार करते हैं!

और नेवलाग के शरीर पर लिपटे सर्प का मुंह खुलकर आश्चर्यजनक रूप से फैलने लगा-

भाले उस खुले मुख में घुसते चले गए-

और जब मुंह दोबारा खुला तो उसमें से दो के बजाय कई भाले निकलकर नागद्वीप के प्रहरियों की तरफ लपके-

और आश्चर्यचकित नागमानवों के शरीरों को जगह-जगह से चीरते चले गए-

हा हा हा! देखा मेरा सर्प मुख किसी भी वार को अपने मुंह में बन्द कर सकता है!
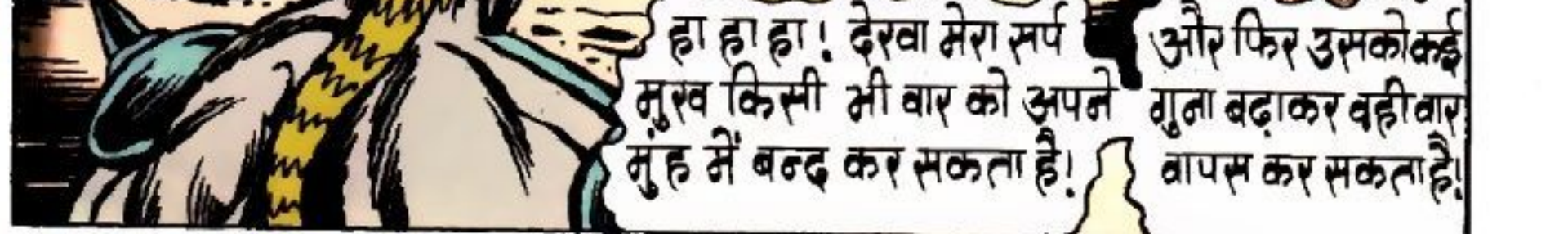
और फिर उसको कई गुना बढ़ाकर वही वार वापस कर सकता है!

दुम जमीन से टकराई-

और जमीन कांप उठी। भूकंप की तरंगें पूरे नागद्वीप में फैलने लगीं-

कंपन की इन तरंगों ने महात्मा कालदूत की गुफा को भी हिला डाला-
ये कंपन कैसे हैं? क्या भूकंप आ रहा है?
नहीं, महात्मन्! यह कोई दूसरी मुसीबत लगती है! बाहर से कोई अजनबी आवाज मुझे पुकार रही है!
अभी देखता हूं! अब कम से कम मुझमें खड़ा होने की ताकत तो आ गई है। पर ये मुसीबत आ कहां से गई?
नागराज और कालजयी तुरन्त गुफा से बाहर निकल आए-
कौन है रे तू दुष्ट? नागराज को क्यों ढूंढ रहा है?
पहले बता! नागराज कहां है? तू तो तीन सिर वाला है। नागराज हो ही नहीं सकता! नागराज तो एक सिर वाला है। हरी खाल! अरे! मैं नेवलाग बली भी कितना मूर्ख निकला! यही तो है नागराज!
देव कालजयी की शक्तियों वाला नागराज! ला, अपनी शक्तियां मुझे दे दे! दे दे!
आ ऽऽऽ ह!
वरना मेरा अगला वार तेरे प्राण हर लेगा!
प्राण तो तेरे निकलेंगे असुर नेवलाग! मैं तुझे देखते ही पहचान गया था कि तू एक असुर है! और असुरों को मारने में कालदूत को महारत हासिल है!

★ पश्चिमी किंवदंतियों का देवता थोर, बिजली के देवता जियस का बेटा है, और उसके हथौड़े मोजिर में अद्भुत शक्तियां हैं।

★ पश्चिमी किंवदंतियों के अनुसार दैत्यों की एक जाति।

चीखेगा केहरीनाद जरूर चीखेगा! और केहरीनाद जब चीखता है तो हर चीज कांप उठती है!
आऽऽऽ ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ
आऽऽऽह! इसकी चीख ने तो मेरे शरीर के हर अंग को हिला दिया है। और इस चीख के कंपन से इमारतों के शीशे तक टूट गए हैं। और प्लास्टर झड़कर गिर रहे हैं!
TSSSTSTTTSSSSSSS
इसका मुंह बन्द करना पड़ेगा। ताकि इसकी चीख बन्द हो जाए!
और केहरीनाद का मुंह पिघले लोहे से भर गया—
पर चीख नहीं रुकी! अब सिर्फ फर्क इतना था कि वह चीख तेज सीटी के स्थान पर एक दबी गुदगुदाहट में बदल गई थी—
ओह! अब चीख को स्थायी रूप से ही रोकना पड़ेगा!
लोहा फिर से हवा में लपक चला—
और केहरीनाद की गर्दन ही धड़ से जुदा हो गई—
खचाक
और एक अट्टहास गूंज उठा—
हा हा हा! अच्छा किया। बहुत अच्छा किया! सर रखे-रखे मेरे कंधे दर्द करने लगे थे। पर अब तू क्या करेगी। मेरी चीख को कैसे रोकेगी? सोच, सोच, तब तक मैं दस बारह इमारतें तोड़ लेता हूं!
?

कहानी 19 पेज से जारी

आऽऽऽऽई ईईऽऽऽऽ
मैं तेरा मुंह बन्द करवाकर ही रहूंगी दुष्ट!
लोहे के एक खोल ने हवा में उड़कर—

केहरीनाद के कटे सिर को अपने घेरे में समेट लिया—
धप्प

लेकिन यह स्थिति ज्यादा देर तक बनी नहीं रही—
क्या करती है शक्ति! मेरा दम घोटेगी क्या? अब चुपचाप अपनी कमर में बंधी खोपड़ी मुझे दे दे!

क्योंकि मैं जानता हूं कि यही खोपड़ी तेरी शक्तियों का स्त्रोत है। अब जब तक तू यह खोपड़ी मुझे नहीं देगी, मैं गूंज फैलाता रहूंगा!

तो फिर अपनी मौत का सामना करने को तैयार हो जा दुष्ट! अब तुझे भस्म करने के अलावा और कोई रास्ता नहीं है।
शक्ति का तीसरा प्रलयंकारी नेत्र खुल गया—

और केहरीनाद का शरीर लपटों में घिरकर मोम की भांति पिघलने लगा—

परन्तु अगले ही पल शक्ति को चकित हो जाना पड़ा—
?
क्योंकि पिघले शरीर में से फिर एक आकृति जन्म ले रही थी—

और यह आकृति केहरीनाद की ही थी-
हा हा हा !
असंभव ! यह नहीं हो सकता ! मेरी प्रचंड अग्नि से कोई प्राणी नहीं बच सकता । यह कोई चाल है। माया है राक्षसों की !
माया नहीं, यह मेरी असली काया है शक्ति ! असुर गुरू शुक्राचार्य ने हम सबको मृत संजीवनी औषधि खिलाकर भेजा है। और उसके असर से हम मर तो सकते हैं, पर फिर जिन्दा हो उठते हैं।
आऽऽह! यह मुझ पर ऊर्जा वार कर रहा है! और इस वार से मैं अपने शरीर को प्रकाश में बदलकर भी नहीं बचा सकती!
क्योंकि प्रकाश भी एक ऊर्जा ही है। ऊर्जा वार उसके आर-पार नहीं जाएगा!
इसी वक्त- नागद्वीप में-
नागराज बेबस नहीं है राक्षस! उसके शरीर के सर्प अवश्य अभी उसके शरीर में नहीं हैं। पर हम अभी भी उसके शरीर में हैं!
अरे ?
और हमको सूक्ष्मरूप में जिन्दा रहने के लिए उसके जहर की आवश्यकता नहीं पड़ती है!
अरे मूर्खो! कितनी बार बताऊं ! मुझ पर वार करोगे तो खुद मारे जाओगे! अच्छा, एक बार फिर देखलो! देखलो!

मैं एक नेवला राक्षस हूं। इसीलिए मुझे खास तौर से तुम नागों से निपटने के लिए भेजा गया है। नागों के शहंशाह नागराज से निपटने के लिए!
दूर से वार करो या पास से, नेवलाग बली तो नागराज का रक्त लेकर जाएगा ही जाएगा!
शीतनाग और सौडांगी के एक दो वार तो नेवलाग को लगे—
तड़क
शर्र्र्र्र
तब तो तुझ पर दूर से ही वार करना होगा!
लेकिन शीत नागकुमार के अगले वार को नेवलाग बली के सर्प फन ने मुंह में रोक लिया—
अब यह इसी से तुम पर वार... ओह! और वार करो, शीत नागकुमार! और वार करो! करते जाओ!
नहीं, कुमार! रुक जाओ!
तुम्हारी बर्फ इसके मुख में द्विगुणित होनी शुरू हो गई है।
तुम क्या कहना चाहते हो नागराज? कभी कहते हो कि वार न करो, कभी कहते हो कि वार करो!
क्या करूं मैं?
घटटटटपपप
वार करो! वार! रुको मत, शीत नाग कुमार! रुको मत!
वार सोखते, नेवलाग बली का सर्प मुख जैसे ही बन्द हुआ —
नागराज ने उसको सीलबन्द कर दिया—

और नेवलाग बली तड़प उठा—
...और नागराज ने मेरी कमजोरी को भांप लिया है!
आऽऽऽह! यह शिकंजा तो बहुत मजबूत है। मेरा सर्प मुख इसे खोल तो सकता है, पर इसे खोलने में समय लगेगा! और उतनी देर में तो इस शीत नाग की बर्फ सर्प मुख में द्विगुणित होती ही जाएगी। इसे द्विगुणित होने से रोक सकने की शक्ति मेरे पास नहीं है!...

बर्फ द्विगुणित होती गई, और नेवलाग बली का सर्प मुख भरता ही चला गया। फूलता ही चला गया—
और इसका परिणाम क्या होना था यह अंदाजा लगाना मुश्किल नहीं था—
फटाक
फटाक की आवाज के साथ सर्प मुख के चिथड़े उड़ गए—

और नेवलाग बली आग बबूला हो उठा—
तुम क्षुद्र नागों की यह हिम्मत! मेरा सर्प मुख नष्ट कर दिया। अब देख नेवलाग बली का कहर!
खचचचचक
आऽऽऽह!
ओह! यह तो एकाएक आक्रामक हो उठा है! और मेरे शरीर में अभी भी सूक्ष्म नागों की संख्या अपेक्षित स्तर पर नहीं पहुंची है!
अब मैं क्या करूं? कैसे मदद करूं सौडांगी और नागकुमार की? कैसे रोकूं नेवलाग बली को?
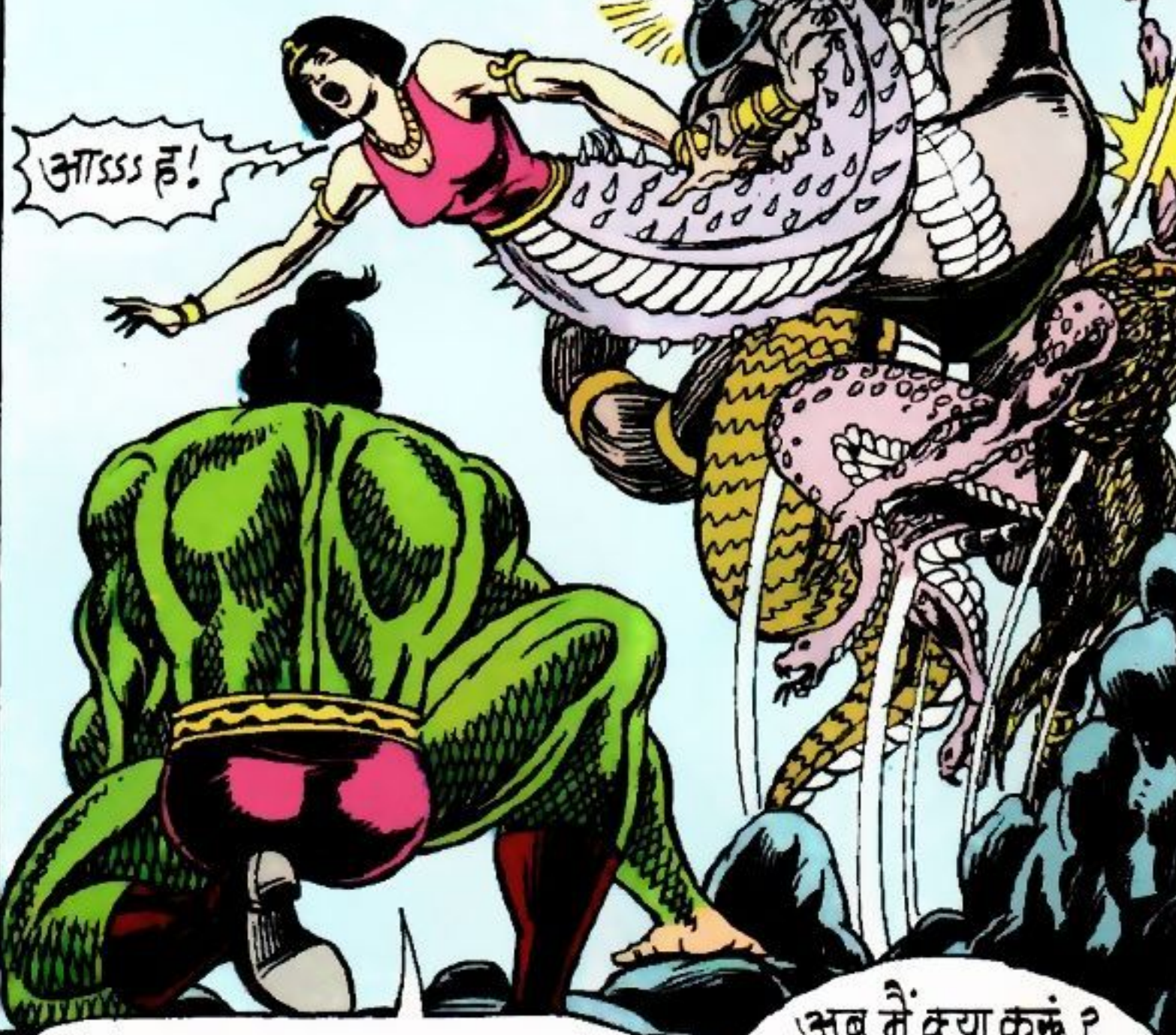
ऐसे, या तो ये मेरा रक्त ले लेगा, या फिर पूरे नागद्वीप के इच्छाधारी सर्पों का सफाया कर देगा! मुझे खुद भी बचना है, और नागद्वीप को भी बचाना है!
ये दोनों काम में एक साथ कैसे... वाह! एक रास्ता है। जिसमें यह दोनों काम एक साथ हो सकते हैं! और नेवलाग बली को परास्त भी किया जा सकता है!
अगले ही पल, नागराज के मस्तिष्क से मानसिक संकेत निकलकर—

पूरे नागद्वीप में फैलकर हर नागद्वीपवासी के मस्तिष्कों में एक खास सन्देश पहुंचाने लगे—

और थोड़ी ही देर बाद, पूरे नागद्वीप के सभी इच्छाधारी नाग, नागराज की तरफ बढ़ रहे थे, और नागराज के शरीर में प्रवेश कर रहे थे-
मेरे शरीर के नाग पनपने में समय लेंगे, पर मेरा सन्देश पाकर नागद्वीप के सर्प मेरे शरीर में प्रवेश करके मुझे शक्ति दे देंगे। और इस प्रकार से मुझे भी शक्ति मिल जाएगी और नागद्वीप वासियों को नेवलाग बली नुकसान भी नहीं पहुंचा पाएगा!
अब नागराज नेवलाग बली के लिए तैयार था-
फूऊऊऊऊऊ
बस, नेवलाग! अब तू और विनाश नहीं फैला पाएगा! क्योंकि अब खुद तेरा विनाश होगा!
अब जब नागद्वीप के सर्प मेरे शरीर में आ बसे हैं। मुझमें शक्ति भी आ गई है, और मेरे शरीर में विष का स्तर भी सामान्य हो गया है...
...और नागद्वीप के सर्प शरीर में आने के कारण मैं अपने शरीर में द्विगुणित हो चुके कुछ सर्पों को बाहर भी निकाल सकता हूं!
तड़ाक
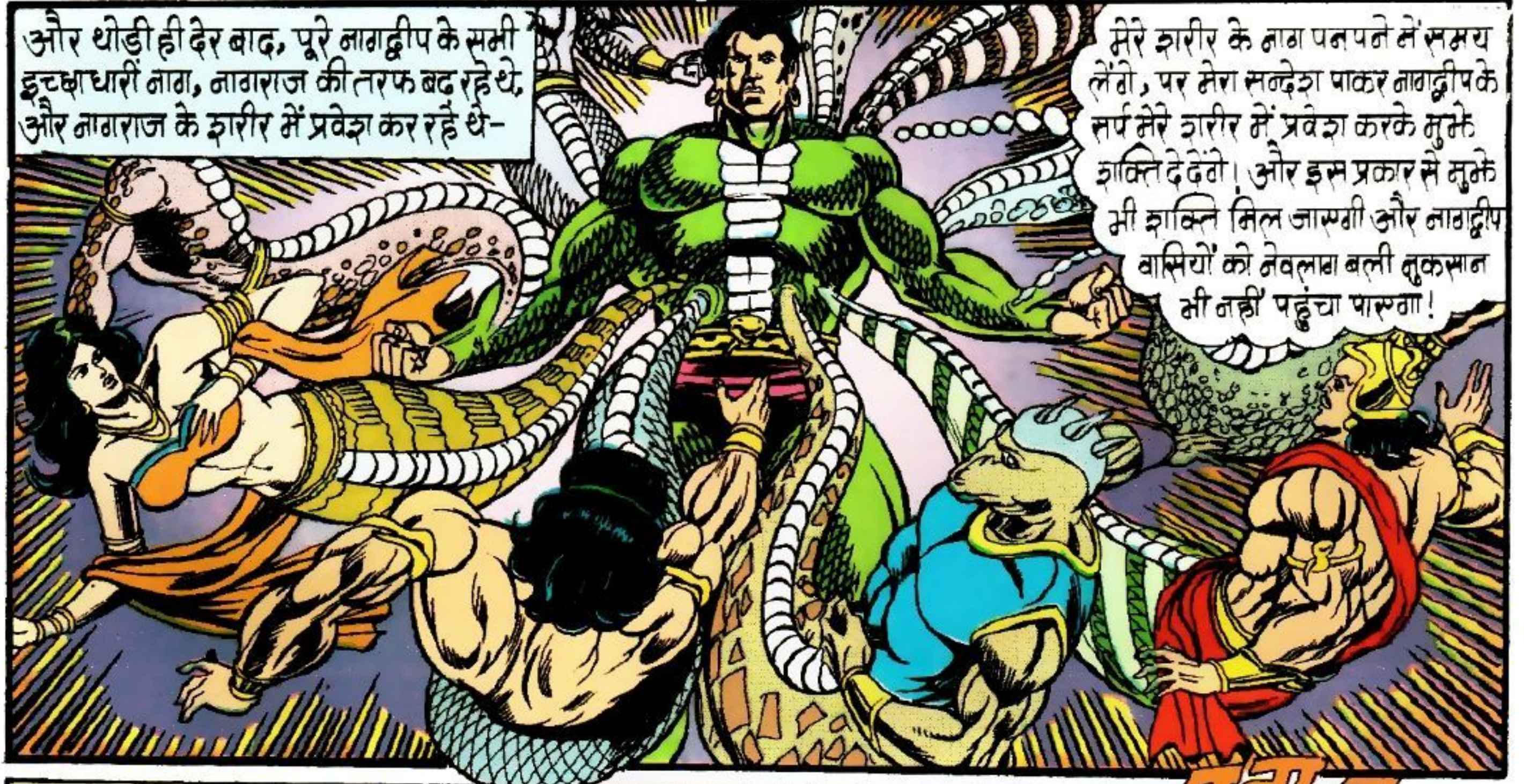
नेवलाग के हाथों से ढेरों हथियार निकल-निकलकर नागराज की तरफ लपकने लगे-
ओह! अब तक तो तेरे बदले दूसरे लड़ रहे थे! अब तू खुद सामने आ गया है! बहुत अच्छा! अब तेरा रक्त निकालना आसान हो जाएगा!
ये मेरा रक्त क्या निकालेंगे?

ये तो खुद मेरे शरीर के आर-पार निकल जाएंगे!
नागराज ने कणों में बदल देने वाली इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग किया-
अरे! गायब हो गया? कहां गया? खैर, जहां भी हो, मेरा श्याम तंत्र उसे ढूंढ निकालेगा!

'श्याम तंत्र' ने वाकई नागराज को ढूंढ निकाला-
और नागराज तड़प उठा-
ओह! वैसे तो तीन सैकंड बाद मैं खुद ही प्रकट हो जाता। पर इस तंत्र वार के बाद अब तो यह तरीका अपनाने की सोचूंगा भी नहीं!

आहा! आ गया चूहा सामने! अब देखता हूं कि तू बचकर कहां जाएगा?

नेवलाग बली ने एक विशालरूप धारण किया, और नागराज सच-मुच उसके शिकंजे में एक चूहे की तरह फंस गया-
अब तू कैसे बचेगा नागराज? बता!
गर्रर्र
नागराज एक बड़ी मुसीबत में फंस गया था-

लेकिन थोर, मुसीबत से बाहर निकल रहा था। नागद्वीप से बहुत दूर न्यूयार्क में-
बहुत खेल कर लिया मैंने तुमसे!
अब दिखाता हूं तुम्हें 'मोजिर' की शक्ति!
TRAFALGA
एक बिजली सी कड़कड़ाकर उस असुर की तरफ लपकी। वह असुर लड़खड़ा गया-

और अगले ही पल उसके ऊपर दर्जनों हथौड़े एक साथ टूट पड़े-

असुर लोक में हर दृश्य पर कड़ी नजर रखी जा रही थी-
यह थोर तो काफी शक्तिशाली लग रहा है। इस असुर को कुछ अतिरिक्त शक्ति देनी चाहिए, ताकि यह हथौड़े को थोर से छीन-कर ला सके!
कोई आवश्यकता नहीं है शम्भूक! इस हथौड़े में ऐसी कोई खास शक्ति नहीं है जो हमारे काम आ सके। जब ये असुर पिट जाएगा तो अपने-आप दूर प्रेषित होकर असुर लोक वापस आ जाएगा!

उस असुर की हड्डियां जगह-जगह से टूट गई थीं-
आऽऽह! मुझ जैसे मामूली असुर को किस पहाड़ से टकरा दिया असुरराज! इससे टकराना मूर्खता है...
...इसका हथौड़ा तो मैं किसी जन्म में छीन नहीं सकता! यहां रुकने का मतलब अपनी टूटी हड्डियों का चूरा करवाना है! इसलिए मैं तो यहां से चला!
?
चकित सा थोर अदृश्य होते दैत्य को देखता रह गया। पृथ्वी पर से एक मुसीबत तो टल गई थी-

★ शक्ति और ध्रुव की मुलाकात के विषय में जानने के लिए पढ़ें ध्रुव-शक्ति विशेषांक

मुम्बई में भी मैं ऐसी ही कुछ मुसीबतों से निपट रहा था, जो संसार में पाप का साम्राज्य कायम करना चाहती थीं!
पर इस मुसीबत से कैसे निपटें? इस पर तो मैंने अपने सारे वार आजमा कर देख लिए! कोई असर नहीं हुआ इस पर! अरे... वह अपनी खोपड़ी फिर से उठाने के लिए बढ़ रहा है!... मैं ऐसा नहीं होने दूंगी!
शक्ति की अग्नि लहर से खोपड़ी उछल कर दूर तो जा गिरी, पर उसे नुकसान नहीं पहुंचा सकी-
हा हा हा! यह खोपड़ी अनश्वर है शक्ति! इसे कोई भी ताकत नष्ट नहीं कर सकती!
मैं इसे नष्ट नहीं कर सकती, पर तेरे हाथों में पहुंचने से रोक तो सकती हूं!
अग्नि लहर ने कोलतार की सड़क में एक गड्ढा करना शुरू कर दिया! खोपड़ी उसके अन्दर धंसने लगी, और गड्ढा फिर कोलतार से भरने लगा-
अब तू अपनी खोपड़ी तक कभी पहुंच नहीं सकता केहरीनाद!
तूने अपनी मृत्यु को बुला लिया है शक्ति! क्योंकि अब केहरीनाद छोड़ेगा...
...अपना सबसे प्रचंड नाद!
आ!ऽऽड़
केहरीनाद के उस नाद ने शक्ति और ध्रुव दोनों को ही हवा में उड़ा दिया-
आऽऽऽह! यही इसकी सबसे बड़ी ताकत है! और मैं इसे रोक नहीं पा रही हूं!
सुनो शक्ति! इससे पहले कि मैं स्थायी रूप से बहरा हो जाऊं, तुम लोहे को पिघलाकर एक खास आकार दे दो! पतली चादर जैसा!
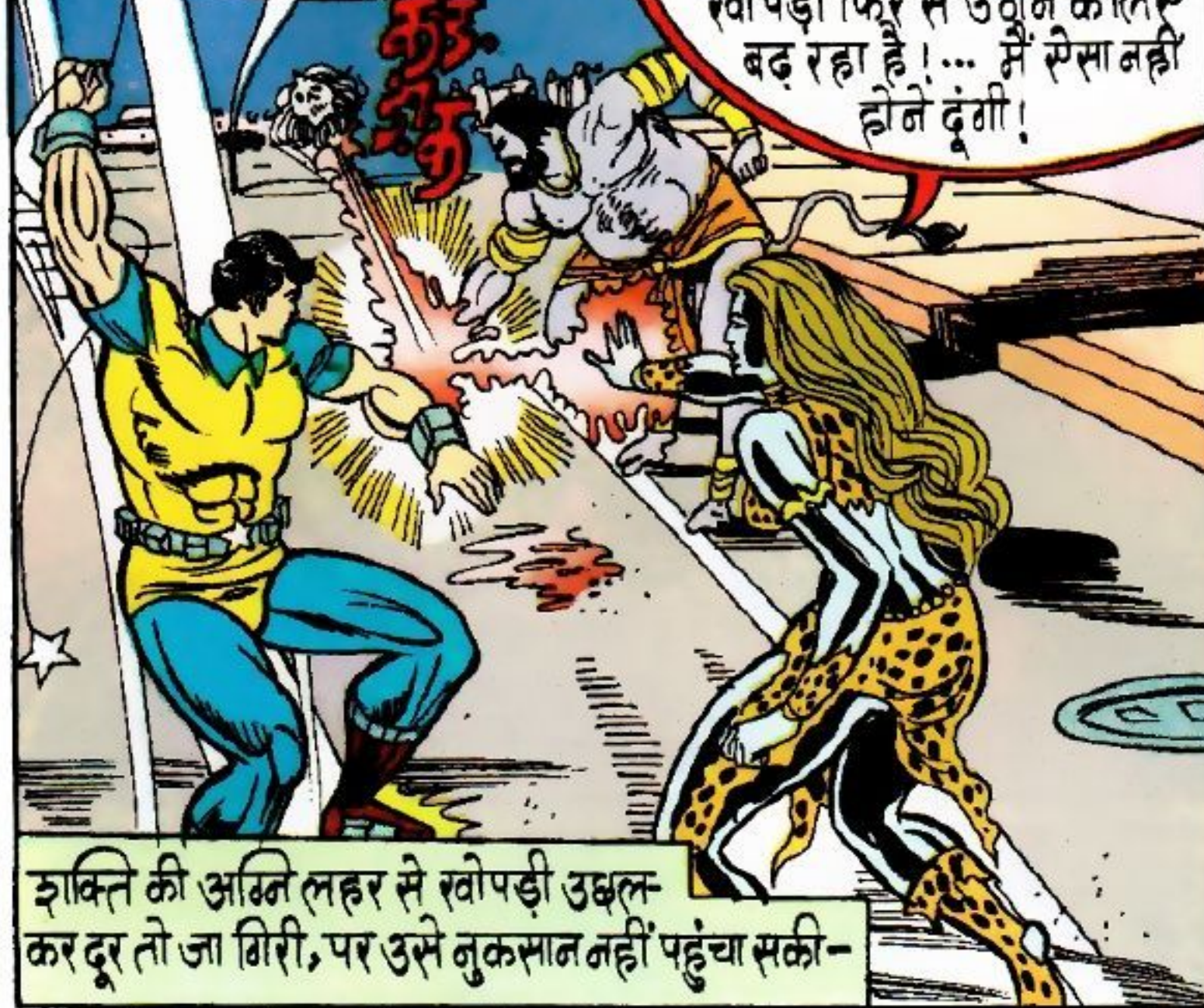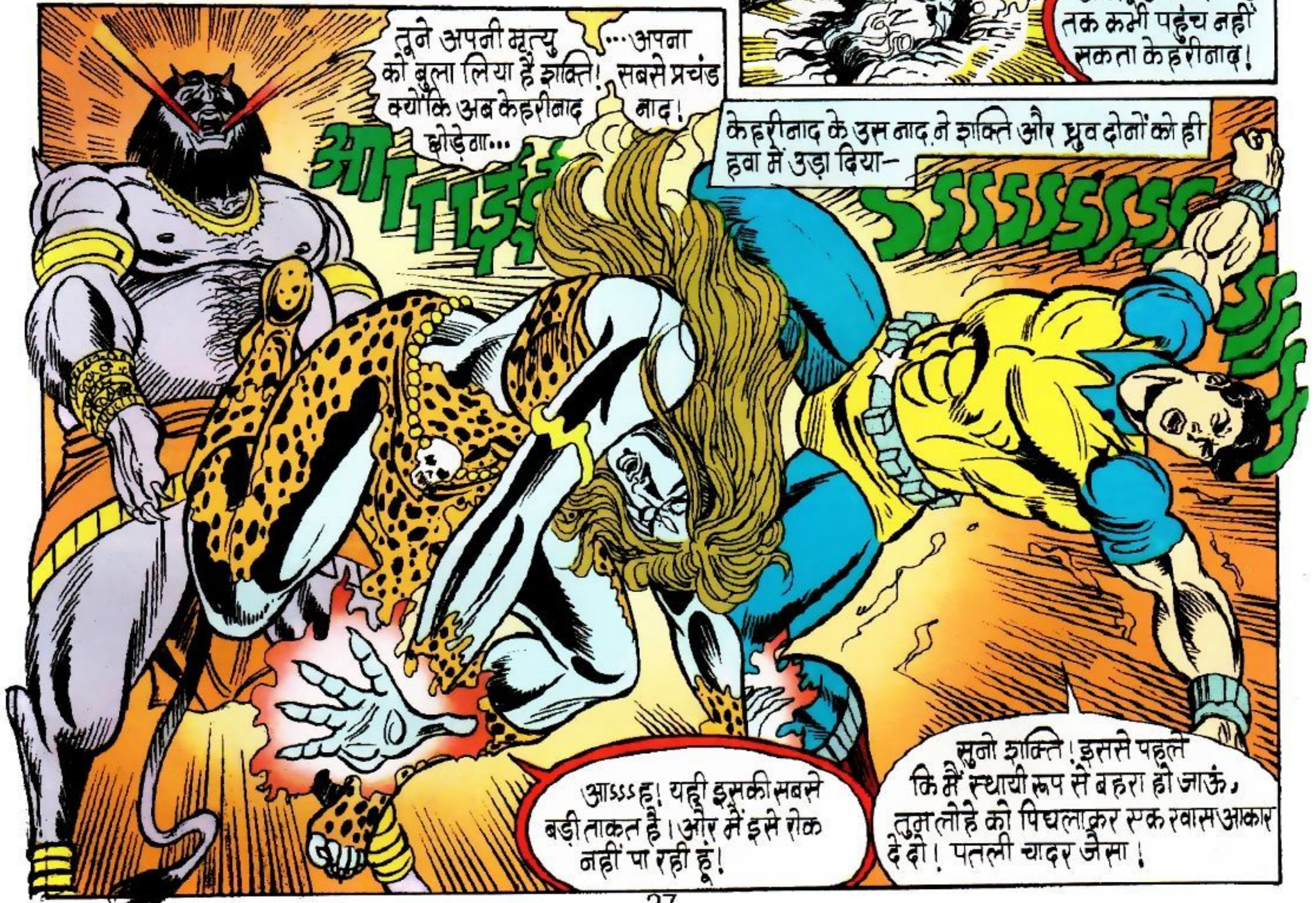
शक्ति के हाथों की प्रचंड ऊष्मा, जमीन में से लोहे के कणों को खींचती हुई उनको पिघलाकर आपस में जोड़ने लगी, और फिर वे कण एक खास आकार लेने लगे–
मैं इसका ध्यान बंटाता हूं शक्ति! तब तक तुम अपना काम करती रहो! पर जल्दी करना! वरना तुमको मैं तो शायद मिल जाऊं, पर मेरी हड्डियां नहीं मिलेंगी!
मुझ पर भरोसा रखो ध्रुव!

मेरी तरफ देख, केहरीनाद! देख!
मैं तो तेरी ही तरफ देख रहा हूं लड़के! पर तू अपनी मौत की तरफ देख रहा है!

तैयार हो जा मरने के लिए...आऽऽह!
मेरी आंखें! य... यह क्या चमका? तेरे हाथ में सूर्य कैसे आ गया?
इसे 'सूर्य' नहीं 'फ्लैश बम' कहते हैं! मैंने तो आंखें बन्द कर ली थीं! मुझे तो पता ही नहीं कि ये सूर्य जैसा चमकता है या चांद जैसा! पर तू तो कुछ पलों के लिए अन्धा हो गया है!
अन्धा ही सही! पर गूंगा तो नहीं हुआ हूं न? ले मेरी चीख सुन! सुन मेरा नाद!
केहरीनाद उस लोहे की चादर को नहीं देख पाया, जो उसकी बगल में आ गड़ी थी–
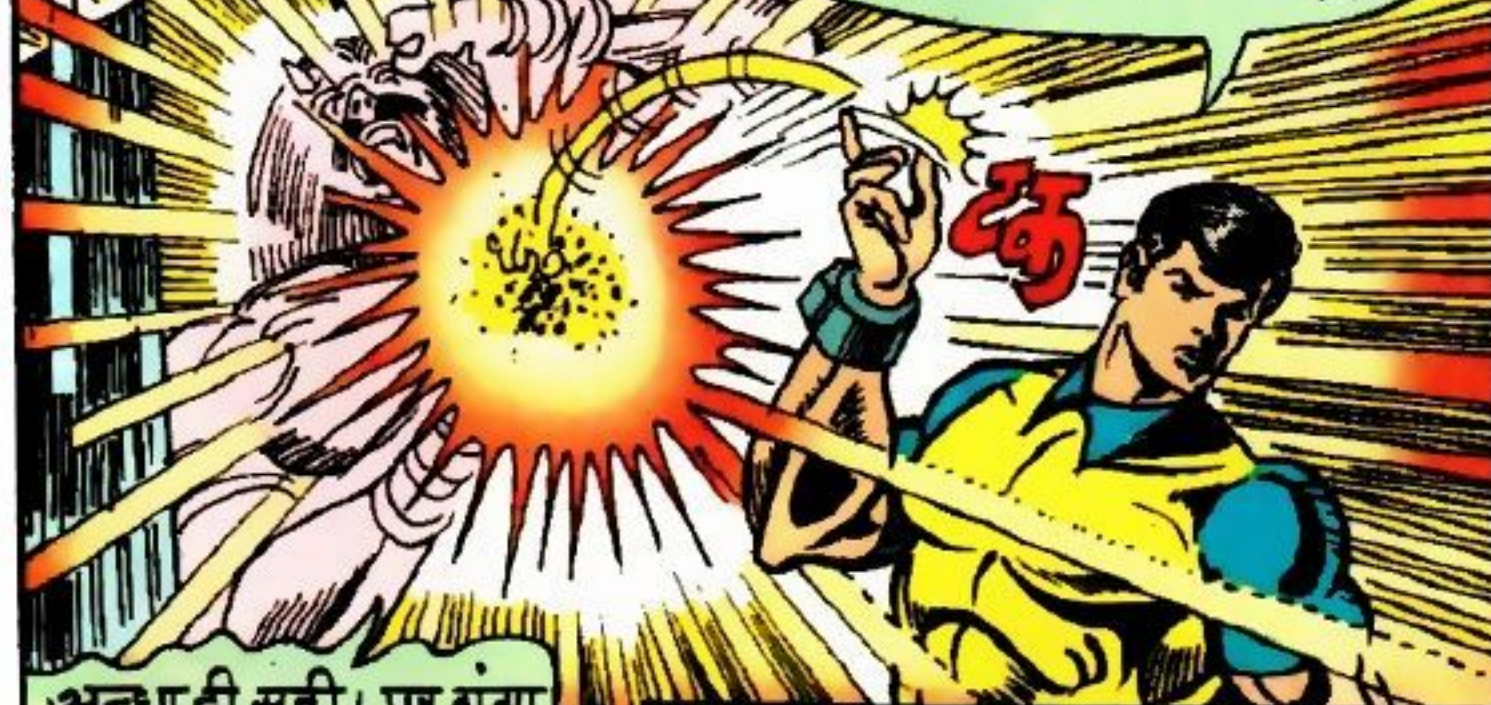
लेकिन ध्रुव भी यह नहीं देख पाया–
क्योंकि केहरीनाद के नाद ने उसको उठाकर दूर फेंक दिया था–
केहरीनाद चीखता ही जा रहा था–
पूरे दिल्ली की इमारतें अब कंपन से कांपने लगी थीं–

और लोहे की चादरें अब केहरीनाद को चारों तरफ से घेर चुकी थीं–

सिर्फ छत बननी बाकी थी–
और शक्ति ने इस निर्माण कार्य को पूरा करने में एक पल भी व्यर्थ नहीं किया–
केहरीनाद की चीख अभी भी जारी थी–

★ नागराज की इच्छाधारी शक्ति कहां गई? इस विषय में जानने के लिए पढ़ें: **इच्छाधारी** विशेषांक

अगर तू अपने आपको हाथी समझता है तो मुझे डायनासोर समझ नेवलाग बली! ...
... नागद्वीप के समस्त इच्छाधारी सर्पों! अपनी इच्छाधारी शक्ति मेरे शरीर में स्थानान्तरित कर दो!
नागराज की सिर्फ सर्प रूप में बदल सकने की इच्छाधारी शक्ति के साथ नागराज को सभी इच्छाधारी नागों की इच्छाधारी शक्ति भी मिलने लगी –
और नागराज ने विशाल इच्छाधारी रूप धारण करना शुरू कर दिया–
अब देखते हैं नेवलाग, कि तू मेरा रक्त निकालता है, या मैं तेरी जान निकालता हूं!
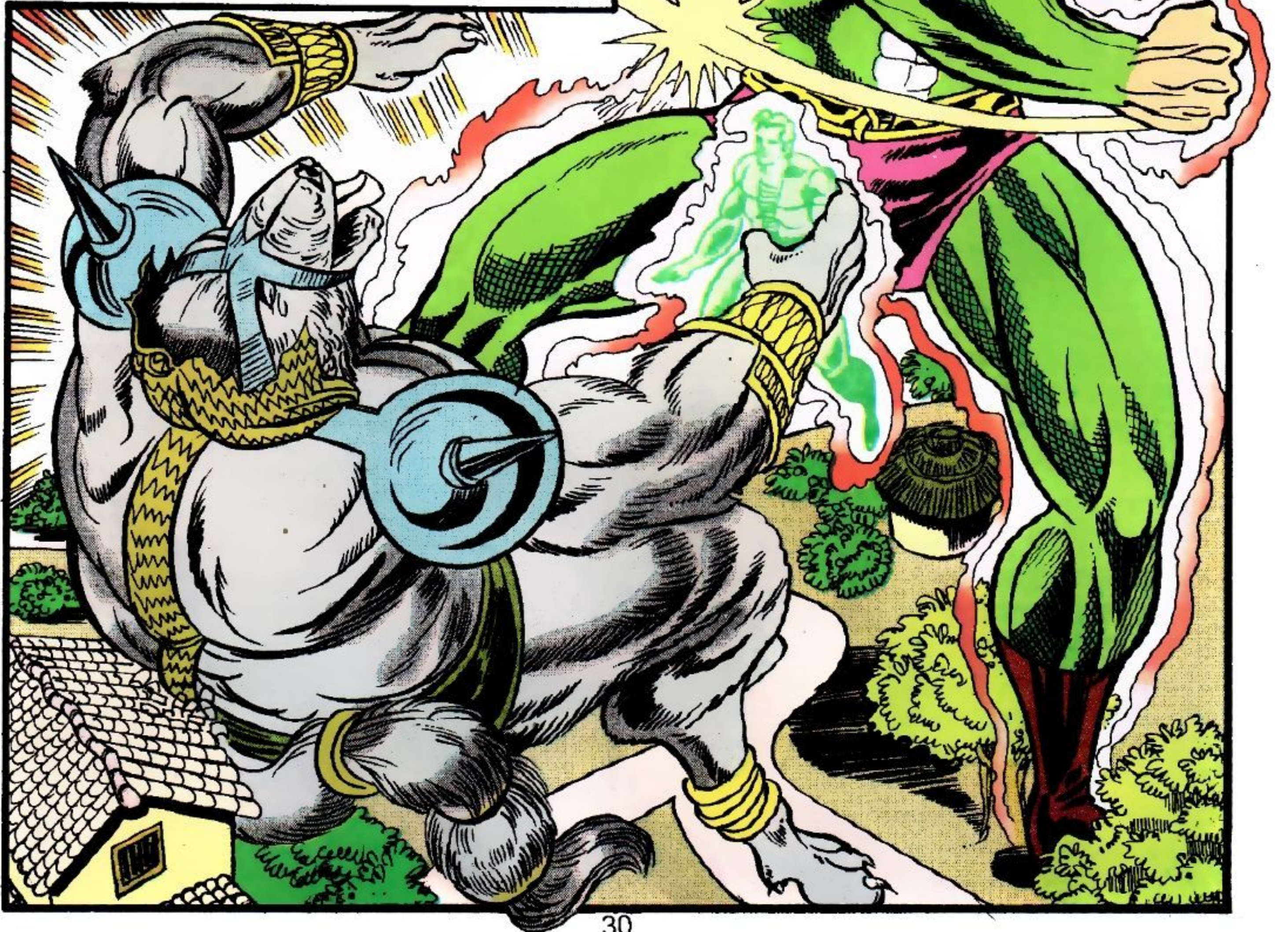
आऽऽऽह! तुमसे लड़ने के चक्कर में मैं भूल ही गया था कि मेरा पहला काम तेरा रक्त निकालना है। तुमसे लड़ना नहीं!
अब मेरे अन्दर नाग-द्वीप के तमाम चमत्कारी नागों की शक्तियां भी हैं। अब तेरे तंत्र मुझ पर असर नहीं करेंगे!
यह सिर्फ तुझे असंतुलित करने के लिए हैं, नागराज!...
... ताकि अगले ही पल मैं अपना विशालकाय आकार छोड़कर एक मच्छर जितने आकार में आ जाऊं!...
... और फिर मच्छर की ही तरह तेरा खून पी जाऊं!
चम
पुस
परन्तु नागराज का खून पीते ही–
आऽऽऽह! यह... यह मुझे क्या हो रहा है? मेरे शरीर में तेज जलन हो रही है! और... और मेरा शरीर गल रहा है!
पर कोई बात नहीं! मैं मृत संजीवनी पीकर आया हूं! गलूंगा! फिर जिन्दा ही उठूंगा!
नेवलाग बली सचमुच गलकर फिर जिन्दा होने लगा–
मेरा काम हो गया है नागराज! तेरी रक्त की एक बूंद मैंने अपने दांत में भर ली है... चलता हूं! पर तुमसे लड़ने में बड़ा मजा आया! खैर, पृथ्वी बची तो शायद फिर कभी मुलाकात हो जाए!
यह तो अदृश्य हो रहा है! पर मेरे एक बूंद रक्त से ये क्या करेगा? और 'पृथ्वी बची' से इसका क्या तात्पर्य था?
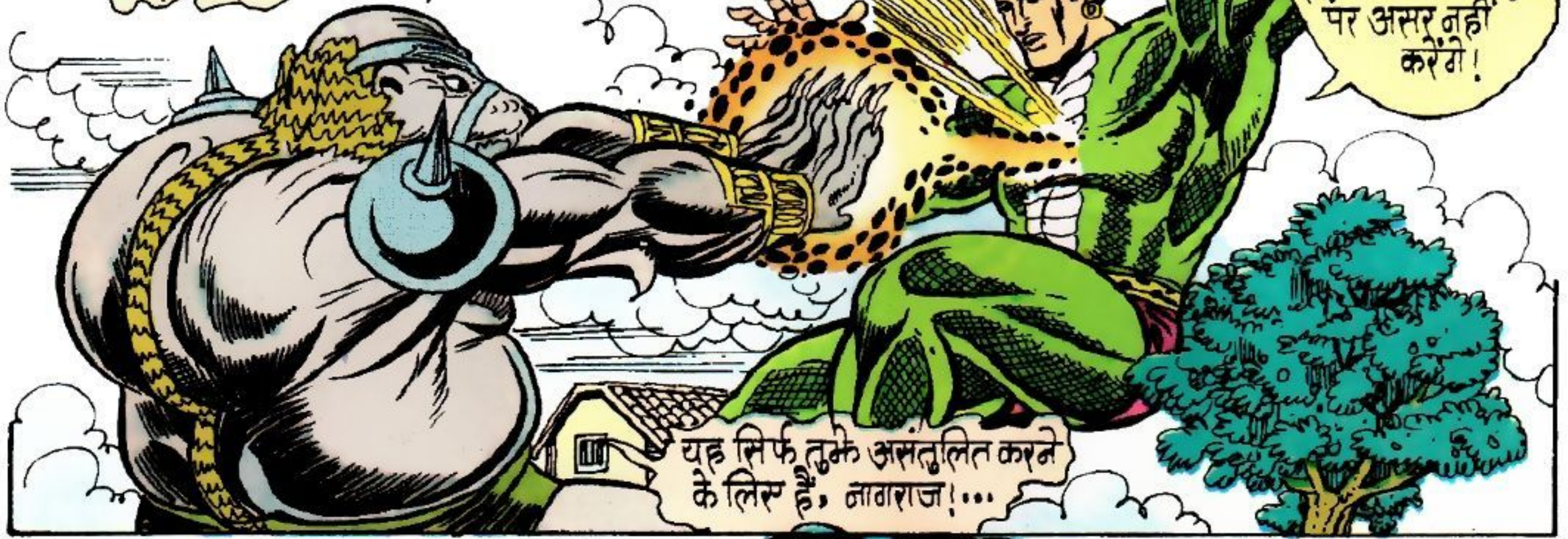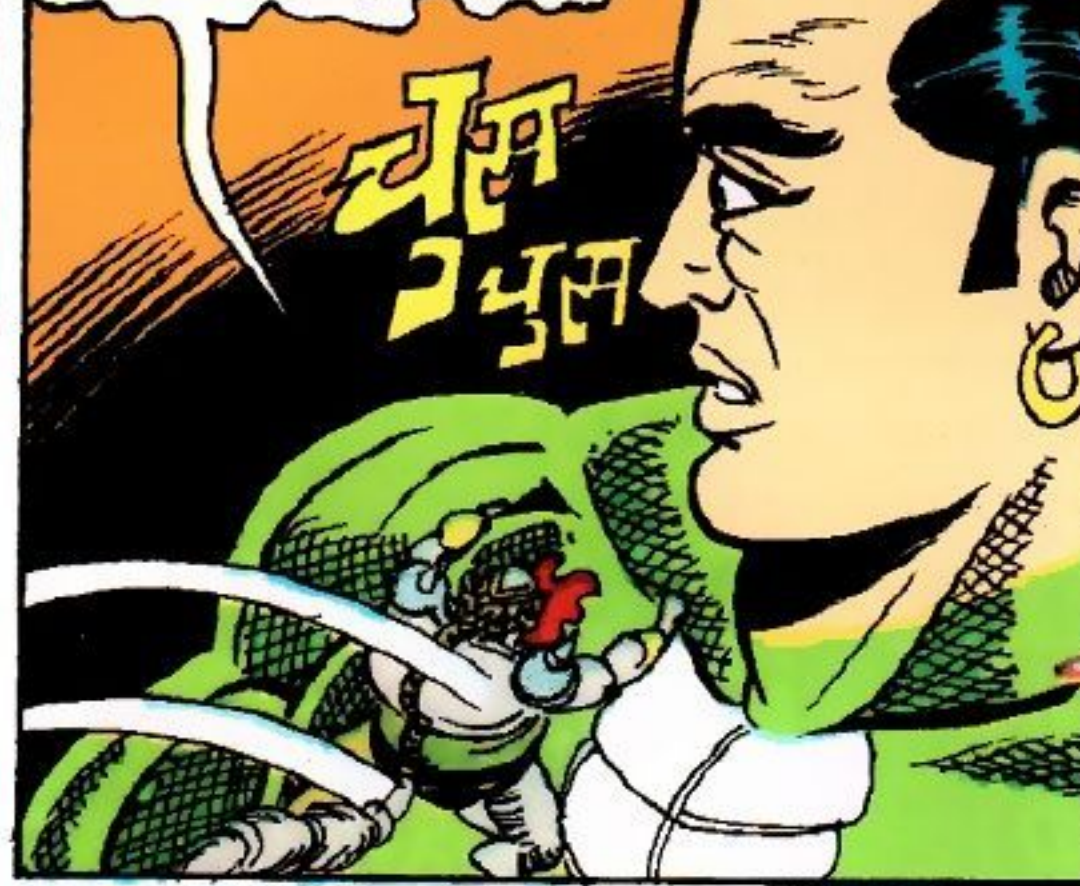
तात्पर्य पूरे ब्रह्मांड को जल्दी ही पता चल जाने वाला था-

धन्य हो नेवलाग बली! तुम्हारे अतिरिक्त अन्य सारे दैत्य किसी भी वरदान प्राप्त मानव से शक्ति लाने में असफल ही गए। पर तुमने अपने कुटिल दिमाग से दैत्यों का एक बड़ा काम कर दिया है!

इतनी प्रशंसा की आवश्यकता नहीं है, दैत्यराज! अन्य सभी मानव स्वयं किसी न किसी रूप में देवता ही थे! वह थोर, शक्ति और अन्य सभी!

सिर्फ नागराज ही मानव था, और उससे भी यह शक्तिशाली' नेवलाग बली सिर्फ मेरी मृतसंजीवनी के बल पर उसका रक्त ला पाया है, और वह भी... सिर्फ एक बूंद!

म... मैं चलता हूं दैत्यराज!

आज्ञा दीजिए!

...असुर गुप्तचरों के अनुसार जयंत एक गंधर्वी के प्यार में पागल हुआ पड़ा है! और अपने पिता देवराज इन्द्र के डर के कारण उससे छिप-छिपकर मिलता है! और इसी कारण जब वह गंधर्वी के साथ होता है तो कोई भी देवरक्षक उसके साथ नहीं होता! और वही वक्त होगा उसके शरीर में देवों की ही इस शक्ति को प्रवेश कराने का!
वह स्थान, जहां देवता रहते हैं और जिसे मानव अपनी जबान में 'स्वर्ग' कहते हैं! वहीं की एक सुनसान सीमा पर–
तुम असुरलोक की सीमा के इतनी पास मुझे मिलने के लिए बुलाते हो जयंत! तुमको डर नहीं लगता?
पिताजी से लगता है तभी तो तुमसे यहां पर मिलता हूं!
मेरा मतलब देवराज से नहीं, बल्कि असुरों से है जयंत? तुमको असुरों का भी भय नहीं है?
अरे, जब देवराज इन्द्र को यह पता नहीं लगा कि मैं यहां आता हूं तो असुरों को कैसे पता लगेगा?
छोड़ो यह भय! आओ, आराम से बैठते हैं!
परन्तु तभी–
आर्रर्र घघघ
जयंत! बचो, झरने के अन्दर एक जलखुंभी दैत्य छिपा बैठा है!
मर! असुरों के दुश्मन देवों के राजा के पुत्र जयंत! मर!

नरक के कीड़े, तेरी हिम्मत कैसे हुई स्वर्ग के युवराज पर हमला करने की? लगता है मृत्यु ने तुझको स्वर्ग की सीमा के अन्दर बुला लिया है!
घ्र्र्र्र्म
मौत तेरी आई है जयंत! और इस घड़ी तुझे बचाने वाला भी यहां पर कोई नहीं है!
कड़ड़ड़ड़ड़ड़म
हम देवों को बचाने वाले की आवश्यकता नहीं पड़ती है दैत्य! वह शक्ति हमारे अन्दर ही रहती है। सिर्फ जगाने की जरूरत पड़ती है। ऐसे!
परम शक्ति, शक्ति दे!
अब तेरे वार बेकार हैं, जलखुंभी!
देवकवच बना ही है तुम दैत्यों के हर वार को रोकने के लिए!
जलखुंभी दैत्य के वार के साथ ही, शुक्राचार्य द्वारा अलग की गई शक्ति जयंत के शरीर में समा गई थी—
जयंत का शरीर शक्ति को छोड़ने लगा, और उसका रूप भी बदलने लगा—

लेकिन तुम राक्षसों के पास ऐसा कोई कवच नहीं है जो तुमको देवों के वार से बचा सके!
हमको ऐसे किसी कवच की आवश्यकता ही नहीं है, देवकुमार! क्योंकि हमारे पास अदृश्य कवच है! जब तू मुझे देख ही नहीं पाएगा, तो वार किस पर करेगा?

मैं तुझे अदृश्य रूप में भी देख लूंगा, जलखु भी...
देव कुमार के
देवास्त्र से तेज वायु निकलकर, जमीन पर पड़े पत्तों को हवा में उड़ाने लगी, और पत्तों से घिरे दैत्य का रूप साफ झलकने लगा-

और अगले ही पल देवास्त्र से तीव्र किरणों ने निकलकर, जलखु भी दैत्य को विखंडित कर दिया-
आऽऽऽह!
अब तेरी संजीवनी भी तुझे जोड़ नहीं पाएगी, जलखु भी!

वाह, जयंत! तुमने तो इसको किसी कीड़े की भांति मसल डाला!
यह था ही एक कीड़ा गंधर्वी बहुत निम्न स्तर का दैत्य था! न जाने इसको मुझ पर हमला करने के लिए क्यों भेजा गया! और यहां रुकना अब खतरनाक है! चलो, यहां से चलते हैं!
पर अब हम वायु मार्ग से जाएंगे! नीचे न जाने कौन सा जाल और बिछा हो!

मैं तुमको रास्ते में गंधर्व चोटी पर छोड़ता जाऊंगा!
संयोग की बात देखो! आज मैंने पहली बार असुरों का जिक्र किया, और नाम लेते ही शैतान आ धमका!
शैतान में सिर्फ यही तो एक खास बात होती है, गंधर्वी! नाम लो और उपस्थित... आऽऽऽ ह!
क्या हुआ, जयंत? तुम एकाएक कराह क्यों उठे!
पता नहीं क्यों मेरा सर एकाएक चकराने लगा है गंधर्वी?
मु... मुझे चक्कर आ रहे हैं! म... मैं बेहोश... हो रहा हूं!
जयंत के कान आवाज नहीं सुन पा रहे थे। और उसका शरीर जमीन से टकराने के लिए बढ़ रहा था—
जयंत बचो!
ओह! यह जयंत को क्या हो गया? अवश्य यह उसी जलखुंभी के वार का असर है! मुझे यह सूचना तुरंत देवराज तक पहुंचानी होगी!
चाहे इसके लिए मुझे दंड ही क्यों न भुगतना पड़े!
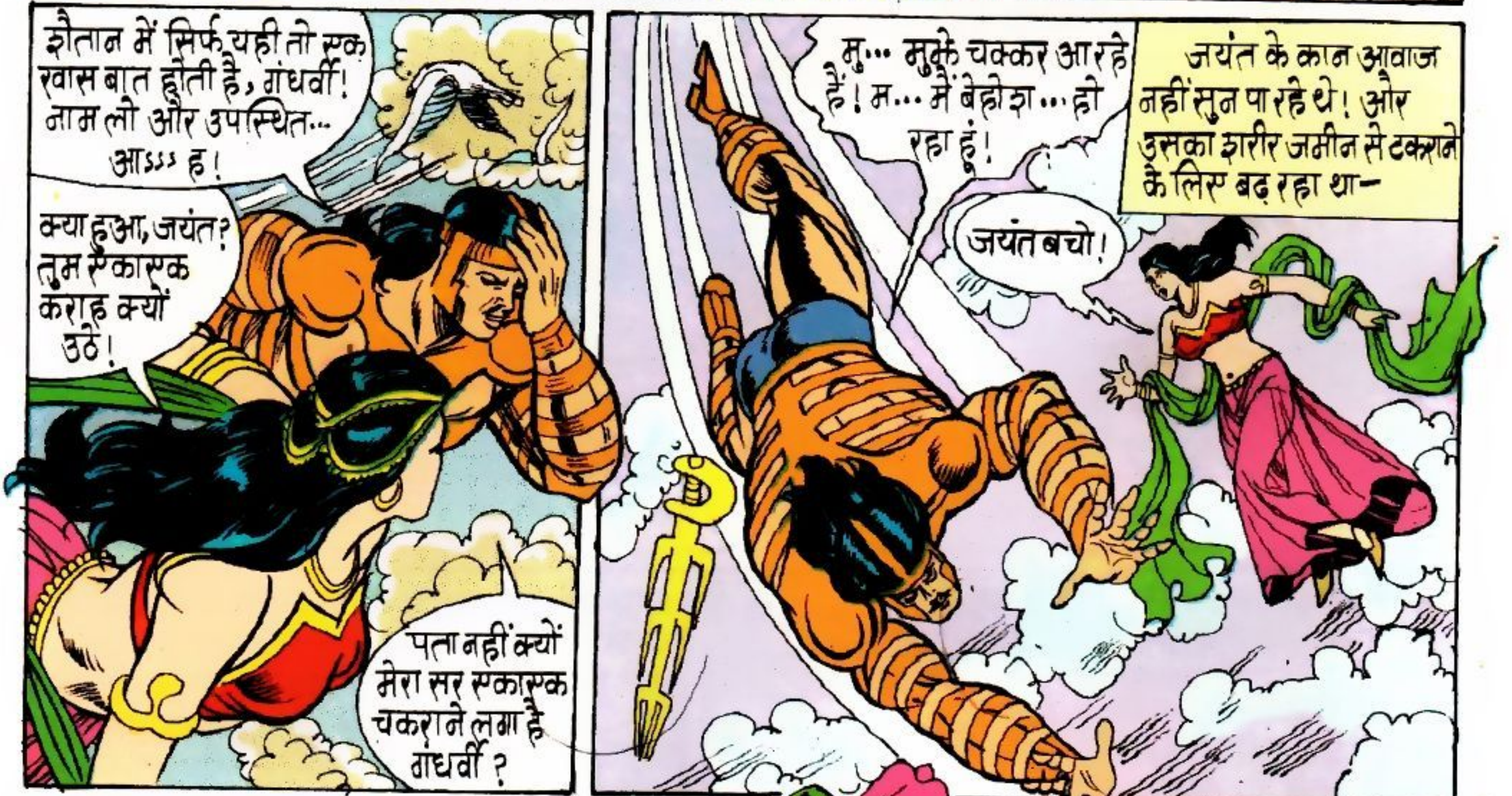
अपनी इस सफलता से असुर झूम उठे थे-
सफलता ने हमारे कदम चूम लिए हैं असुरराज शंभूक! अब जाओ, खुशियां मनाओ, और पूरे ब्रह्मांड पर राज्य करने की तैयारी करो!
हा हा हा हा हा हा हा हा!
अरे! अगर सिर्फ जयंत पर एक मामूली राक्षस द्वारा वार करने से हम ब्रह्मांड पर राज्य कर सकते थे तो इतने युगों तक देवताओं से लड़ने की क्या आवश्यकता थी?
जयंत सिर्फ बेहोश है, मृत नहीं है! और वह तो मृत हो भी नहीं सकता, क्योंकि उसने भी तो अमृत पिया हुआ है!
उसे मारना हमारा मकसद नहीं है, असुरराज! हमारा ध्येय है कलियुग की अवधि को अनन्त काल तक के लिए बढ़ा देना। ताकि हमारी शक्ति बढ़ती ही जाए, और देवों की शक्ति क्षीण होती जाए!
मुझे तो कुछ समझ में नहीं आ रहा है! जयंत के बेहोश होने का संबंध कलियुग की अवधि से कैसे है? कुछ समझाइए तो सही!
समझाने से तुम कभी समझे हो जो आज समझोगे? देखते जाओ, सब अपने आप समझ में आ जाएगा!
स्वर्ग की सीमा के अंदर घटनाक्रम बड़ी तेजी से चल रहा था-
एक निम्न कोटि के राक्षस का वार मेरे बेटे को बेहोश नहीं कर सकता! बात क्या है गुरु वृहस्पति?
इस... इसका आकार भी बढ़ा लग रहा है! जयंत के पास तो विराट रूप धारण करने की शक्ति भी नहीं है!
इसके शरीर में मुझे किसी अद्‌भुत ऊर्जा का आभास हो रहा है! और शायद उसी कारण...
...इसका आकार तेजी से बढ़ता जा रहा है इन्द्र!
तो कुछ करिए गुरुदेव! इसके शरीर का बढ़ना रोकिए! वरना अनर्थ हो जाएगा!

जयंत का शरीर बढ़ता ही जा रहा था। और देवगुरु बृहस्पति उसे रोकने की पूरी कोशिश कर रहे थे-
लेकिन उनकी कोशिशें नाकाम सिद्ध हो रही थीं-
नहीं, इन्द्र! मैं इसका बढ़ना रोक नहीं पा रहा हूँ! दैत्यों ने इस पर देवों की ही किसी शक्ति का वार किया है! और हम दैत्यों की शक्ति तो काट सकते हैं। पर हमारे पास अपनी शक्ति की काट नहीं है!
अब तो स्वर्ग भी इसके बोझ से कांपने लगा है गुरुदेव! कुछ ही घड़ी बाद पूरा स्वर्ग ही ध्वस्त हो जाएगा!
इसको अंतरिक्ष में प्रक्षेपित करने के अलावा हमारे पास और कोई रास्ता नहीं है!
देवों ने अपनी सामूहिक शक्ति का प्रयोग करके जयंत के अति विशाल शरीर को अंतरिक्ष में भेज दिया-
स्वर्ग तो अभी भी खतरे से पूरी तरह बच नहीं पाया था-
लेकिन स्वयं बचने की चेष्टा में उसने पूरे ब्रह्मांड पर इस खतरे को फैला दिया था-

और ब्रह्मांड पर फैला खतरा हर बीतते क्षण के साथ और फैलता जा रहा था–
देखा असुरराज शंमुक ? ठीक वैसा ही हो रहा है, जैसा मैंने सोचा था! देवों ने जयंत को ब्रह्मांड के केन्द्र में तैरने के लिए छोड़ दिया है! अब इसका आकार बढ़ता जाएगा, और उस महाकाय विशाल शरीर का गुरुत्वाकर्षण इतना अधिक हो जाएगा कि ब्रह्मांड के हर पिंड, ग्रह या तारे सबके घूमने की गति कम होती जाएगी और इस कारण दिन और रातों की अवधि बढ़ जाएगी। सालों की अवधि बढ़ जाएगी। शताब्दियों की अवधि बढ़ जाएगी और युगों की अवधि भी बढ़ जाएगी। और फिर पृथ्वी जैसे ग्रहों की घूर्णन गति लगभग शून्य हो जाएगी और इस युग यानी कलियुग की अवधि अनन्त समय के लिए बढ़ जाएगी! हमेशा के लिए ब्रह्मांड में व्याप्त हो जाएगा कलियुग। और फिर अपनी बढ़ी शक्ति से इस ब्रह्मांड पर राज्य करेंगे राक्षस!
पर आपने जयंत पर ऐसी कौन सी शक्ति से वार कर दिया जो उसे बढ़ाती जा रही है?
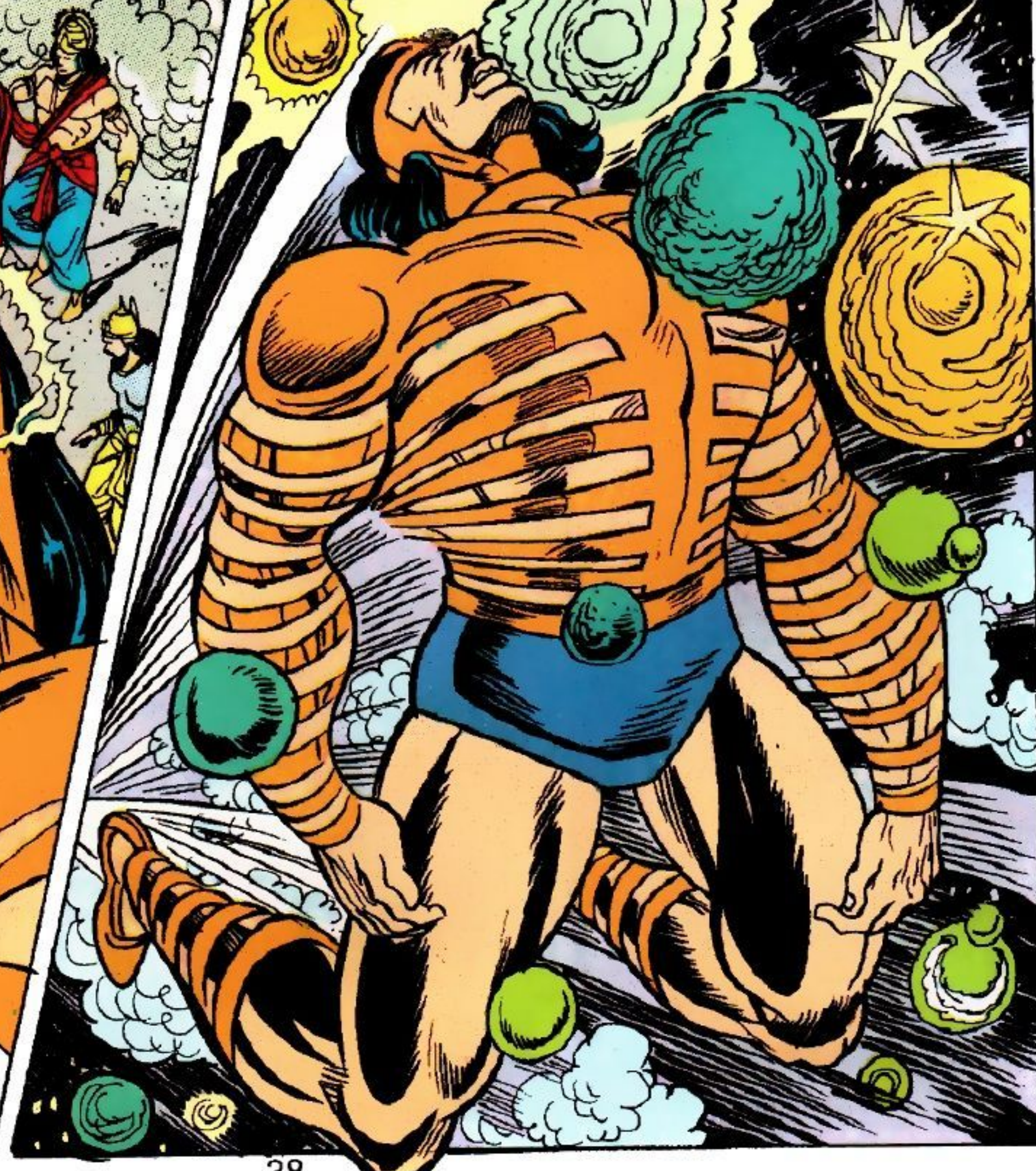
तुमको नागराज की वह 'रक्त बूंद' तो याद है न, जिसे नेवलाग बली लाया था! मैंने उस रक्त में से सर्पों को द्विगुणित करने वाली शक्ति को अलग करके उसे शरीर की कोशिकाओं को द्विगुणित करने वाली शक्ति में परिवर्तित कर दिया था। अब वही देव कालजयी की शक्ति जयंत के शरीर की कोशिकाओं को द्विगुणित करके उसे बढ़ाती जा रही है!
ओह! तब तो आपने राक्षस भेजकर जयंत पर हमला करवाने की परेशानी बेकार ही उठवाई! इस शक्ति को तो हम किसी राक्षस के शरीर में भी प्रविष्ट करा सकते थे!

ओफ़! इसीलिए मैं तुम्हें कोई बात नहीं बताता हूं शंभुक! तू बात को पकड़कर उसे समझदारी की राह से हटाकर बेवकूफी की राह पर ले जाता है। अरे, अगर कोई राक्षस यह विराट रूप धारण करता जाता तो क्या देवता उसे काटकर फेंक नहीं देते!
लेकिन जयंत तो इन्द्र का बेटा है, उसे वे कैसे काट सकते हैं?
ही ही ही! नहीं काट सकते! वह तो बढ़ता ही रहेगा, बढ़ता ही रहेगा!
मुझे क्षमा प्रदान करें गुरुदेव! मैं सचमुच मूर्ख हूं! आपकी चाल नहीं समझ सका!
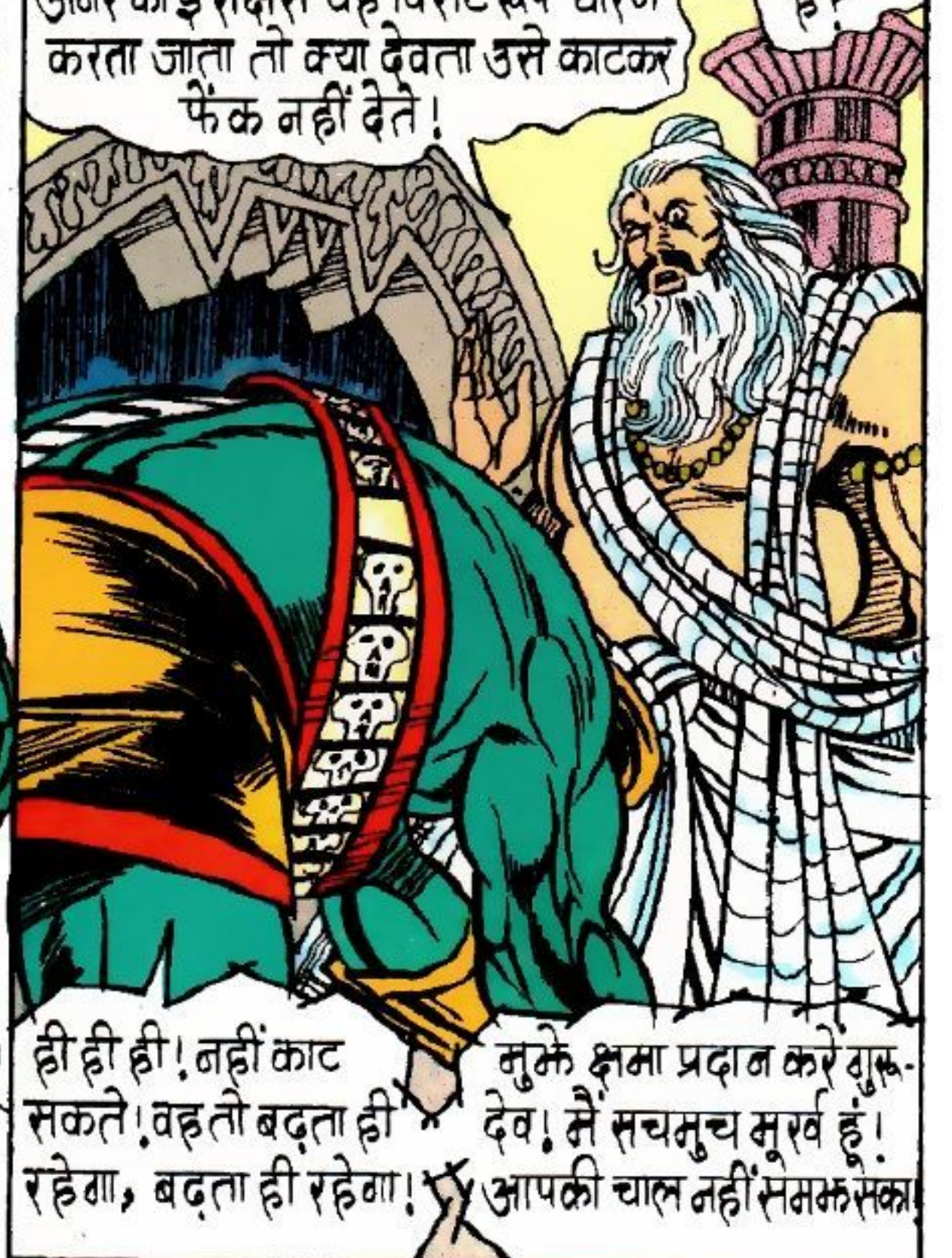
राक्षस प्रसन्न थे और देवता चिंतित-
यह क्या हो रहा है गुरूदेव? क्या सृष्टि का अन्त होने जा रहा है? और वह भी...देवों के हाथों!
नहीं इन्द्र! मैं ऐसा नहीं समझता! सृष्टि समाप्त हुई तो राक्षस भी तो समाप्त हो जाएंगे। और मुझे नहीं लगता कि राक्षस ऐसा आत्महत्या करने वाला वार करेंगे!
फिर वे क्या करना चाहते हैं गुरूदेव?
इसका मुझे आभास नहीं है इन्द्र!
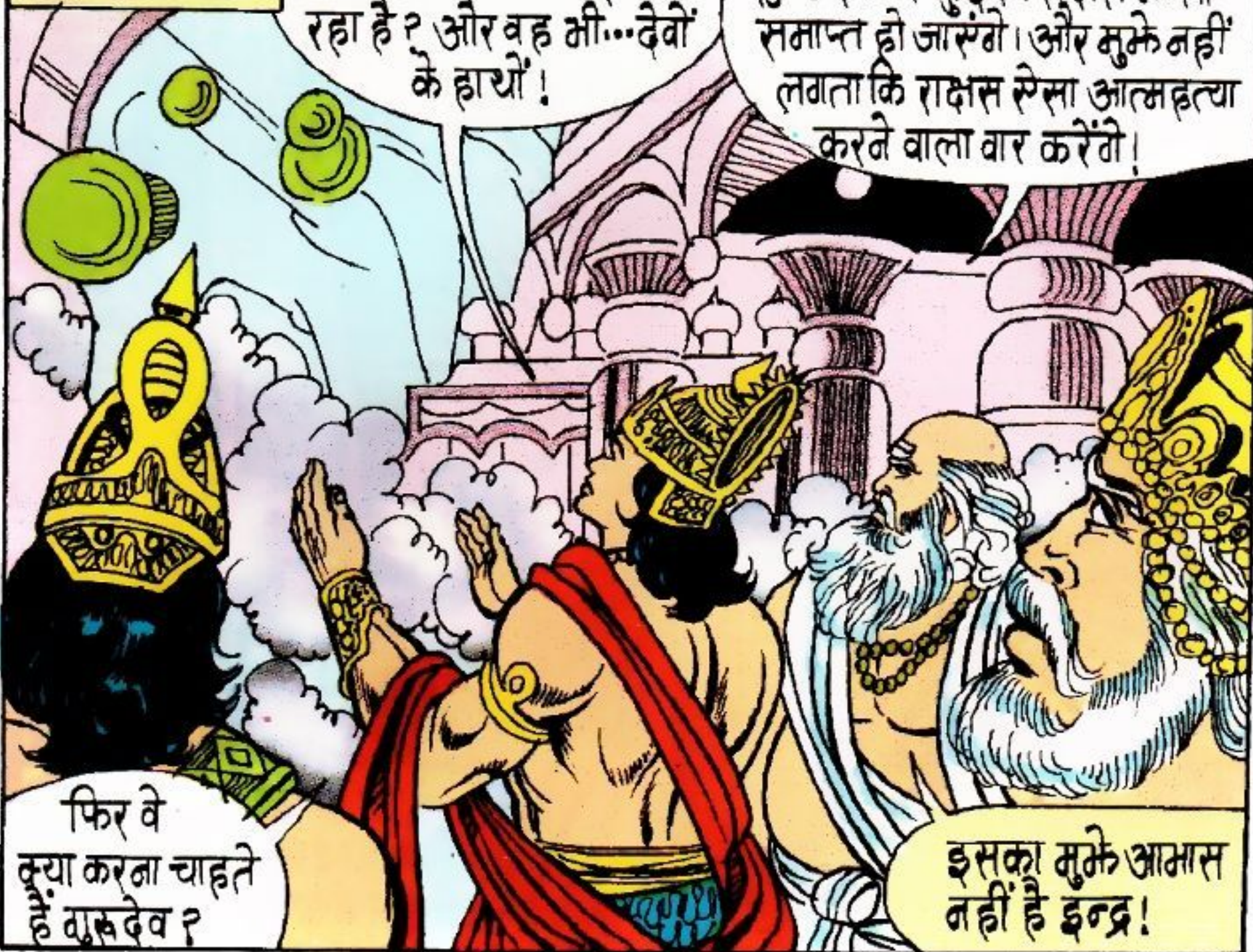
परन्तु राक्षसों के पास देवों की शक्तियों की काट हैं। इस शक्ति की काट भी उनके पास होगी, क्योंकि यह भी देव कालजयी की शक्ति है!
देव कालजयी की शक्ति?
हां! मैंने इसका पता लगा लिया था! अब जैसे ही राक्षसों का इरादा पूरा हो जाएगा, वे जयंत का बढ़ना रोक देंगे!
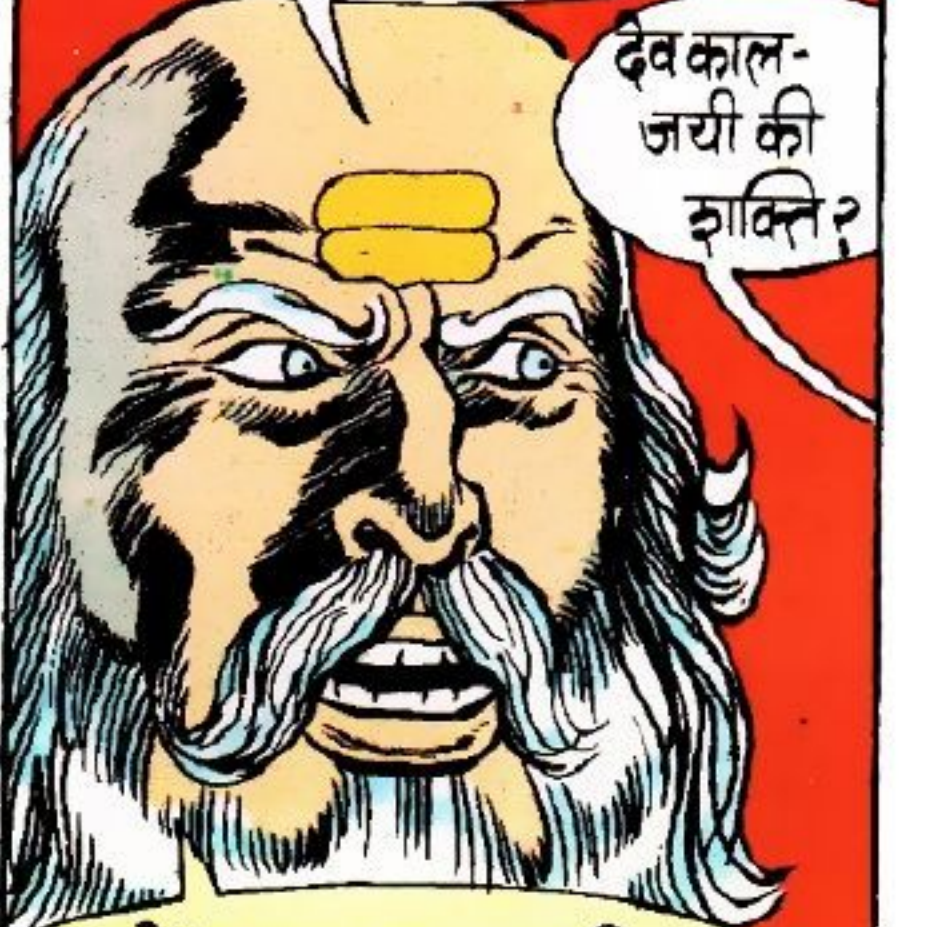
पर राक्षसों का इरादा क्या है, यह हमको नहीं पता!
इरादे कुछ भी हों, पर एक बात आपने एकदम सही कही है। इस शक्ति की काट राक्षसों के पास अवश्य होगी। हमको उन पर हमला करके वह काट छीननी होगी। वैसे भी जयंत पर हमला करके उन लोगों ने ही इस युद्ध की पहल की है!
नहीं इन्द्र! ध्यान रखो यह कलियुग है। अगर अभी असुरों से हमारा युद्ध हुआ तो जीतने की संभावनाएं कम और हारने की ज्यादा हैं। वैसे भी युद्ध में बहुत समय लगेगा, और इतना समय हमारे पास नहीं है!
तो फिर अब हम क्या करें, गुरू बृहस्पति?
एक ही रास्ता है...
... हमको शतरूपा पुंज लाना होगा इन्द्र!
शतरूपा पुंज! पर... पर...
...परन्तु वह तो परम शक्ति महामाया के क्षेत्र में रखा रहता है। यह सच है कि पुंज की शक्ति किसी भी अन्य असुरों या दैवीय शक्ति को काट सकती है, परंतु महामाया के क्षेत्र में तो असुरों का जाना भी निषिद्ध है। और देवताओं का जाना भी! वहां पर जो कभी हमारे साहसी देव योद्धा गए भी तो वापस नहीं आए! ... और जिस परम शक्ति महामाया ने ब्रह्मा, विष्णु और महेश जैसे ईश्वरों को भी शक्तियां दी हैं, उनके निषिद्ध क्षेत्र में हम भला कैसे जा सकते हैं?
हम नहीं जा सकते, और न ही असुर! यह तो हमारे ग्रंथों में लिखा हुआ है, और यह नियम हम दोनों की भलाई के लिए ही है। परंतु एक प्राणी के बारे में कुछ नहीं लिखा गया है।
देवों और असुरों के अलावा और कौन सा प्राणी है, गुरूदेव?
मानव! हां इन्द्र, मानव! जो कामदेव और असुर नहीं कर सकते, शायद उसे मानव कर सकें! मानवों ने पहले भी कई बार देवताओं की मदद की है, त्रेता में दशरथ और कैकेयी ने, द्वापर में अर्जुन ने। कलियुग में भी ऐसा ही एक मौका आ गया है, जाओ, पृथ्वी पर हमारे देवों से सम्पर्क करो, और ऐसे विलक्षण मानवों की तलाश करो जो परमशक्ति के सामने खड़े हो सकें!
मैं अपने एक रूप शक्ति को यह काम सौंपती हूं गुरूवर! वह ऐसे मानवों को अवश्य ढूंढ़ निकालेगी!
ठीक है काली, पर जल्दी करना। हमारे पास अधिक समय नहीं है!

नागद्वीप में–
ओह! अब जाकर मेरे शरीर में विष का स्तर भी सामान्य हो गया है, और सूक्ष्म सर्पों की संख्या भी! अब मैं बिल्कुल ठीक महसूस कर रहा हूं!
तुमने बगैर सूक्ष्म सर्पों के, अपनी बुद्धि और हमारी मदद के बल पर उस शक्तिशाली राक्षस को परास्त कर दिया!
परन्तु अगर वह या कोई और राक्षस फिर तुम पर हमला कर बैठा तो?

उसके लिए मैंने आप सबकी इच्छाधारी शक्ति का एक छोटा-छोटा अंश अपने पास ही रख लिया है। वह फिलहाल ऐसे किसी भी दैत्य से निपटने के लिए पर्याप्त है। मैं जानता हूं कि आप लोग भी इस इच्छाधारी शक्ति के बगैर बहुत दिक्कत महसूस करेंगे। पर मैं वादा करता हूं कि ऐसी किसी स्थिति के खत्म होने का आसार मिलते ही मैं यह इच्छाधारी शक्ति वापस कर दूंगा!
इच्छाधारी शक्ति के इस छोटे अंश के बगैर हम सर्प रूप में नहीं बदल पाएंगे नागराज! पर तुम्हारी जान की खातिर हम यह कष्ट उठाने को सहर्ष तैयार हैं!

मुझे आप सबसे इसी सहयोग की आशा थी। पर अब मैं वापस महानगर जाना चाहता हूं!
अरे! यह क्या है?
नागराज का शरीर एक चमकदार शक्ति पुंज में घिर गया–

और अगले ही पल नागराज उस शक्ति पुंज में घिरा हुआ एक तरफ उड़ता जा रहा था–
य... यह क्या हो रहा है? म... मैं कहां जा रहा हूं!
नागराज को जल्दी ही इस सवाल का जवाब मिल जाना था–

लेकिन उससे पहले यही सवाल कहीं और उठने वाला था–

शाबाश ध्रुव! तुमने हमारे बुजुर्गों की उस कहावत को सही सिद्ध कर दिया है कि मानव अगर चाहें तो देवता से भी ऊपर पहुंच सकते हैं। तुमने जिस तरह से बिना किसी चमत्कारी शक्ति के होते हुए निशाचर और उसके दोनों प्रेतों को हरा दिया, वैसा तो शायद देवता भी न कर पाते!...

... आज तक तो मैं गर्व से यही कहता आया था कि ध्रुव मेरा बेटा है। पर अब से मैं छाती चौड़ी करके यह कहूंगा कि मैं ध्रुव का पिता हूं!

ओह, पापा! मैंने आपको सारी घटना इसलिए नहीं बताई थी कि आप मेरी तारीफों के पुल बांधने लगें! अब बताइए अगर डोगा और लोरी मेरे साथ न होते तो मैं भला क्या कर पाता? ★

उनका साहस और दृढ़ निश्चय भी तारीफ के ही काबिल है ध्रुव!

पर मुझे यह बताओ कि अगर तुम वहां न होते तो वे दोनों भला क्या कर पाते!

ओऽऽऽ मेरा सुपर कमांडो भइया वापस आ गया! पर लगता है कि इस बार पिटकर आया है। थोड़ा सा 'मॉरल डाउन' है! इसलिए पापा तारीफ करके हिम्मत बंधा रहे हैं!

ऐऽऽऽ ध्रुव पिटकर नहीं, पीटकर आता है! पिटती तो तू है!

मैं पिटती हूं? मैं पिटती हूं? किसकी हिम्मत है जो मुझे पीट सके!

कौन पीटता है मुझे? बताओ तो जरा?

मैं!

आऊऽऽऽ देखी पापा! जब बातों में नहीं जीत पाता तो हाथापाई पर उतर आता है! चीटर! आऽऽऽ

अरे, श्वेता जब बोलने पर उतर आती है तो बड़े-बड़ों की धुलाई कर देती है!

सच में, धोबी?

धोबी क्या बुरा काम करता है? कम से कम काम तो करता है!

★ इस संबंध में जानने के लिए पढ़ें-निशाचर

हा हा हा! दुनिया को बचाया! अब तक दस-बारह बार तो दुनिया को बचा ही चुके हो तुम! हाय, अगर तुम न होते तो इस दुनिया बेचारी का क्या होता!
अब आगे क्या करोगे? अब सौर मंडल को बचाओगे, या इस ब्रह्मांड को बचाओगे! देवता लोग हाथ जोड़े तुम्हारे आगे-पीछे घूमेंगे कि ध्रुव भाई बचा लो ब्रह्मांड को! वरना हम तो मर जाएंगे!

क्या गप्प सुनाते हो भइया! एकदम टॉप क्लास! हा हा हा!
श्वेता यह नहीं देख रही थी कि बोलते-बोलते ही उसकी बात सच होने जा रही थी—
अरे! यह क्या हो रहा है? न जाने कहां से रोशनी का एक गोला आकर मुझे अपनी आगोश में ले रहा है।...

...और मुझे उठाकर न जाने कहां ले जा रहा है!
ओऽऽऽ! तुमने तो पेट में दर्द करवा दिया!
पर एक बात है भइया... अरे! भइया कहां गया? लगता है मुझे झेल नहीं सका! वह समझा नहीं कि मैं मजाक कर रही थी!...

...पर इस मजाक में थोड़ा-थोड़ा सच भी था! मुझे पूरा यकीन है कि अगर सच में कभी देवताओं को मानवों की मदद की जरूरत पड़ी तो वे भइया को ही बुलाएंगे! पर देवता कुछ होते भी हैं या नहीं?
यह शक तो मानवों के दिल में हमेशा ही रहा है—

और हमेशा ही रहेगा–
पर कुछ मानव सच्चाई के करीब पहुंच ही जाते हैं–
नागराज और ध्रुव उस 'शक्ति' तक लगभग एक साथ ही पहुंचे थे, जिसने उनको प्रकाश पुंज द्वारा बुला भेजा था–
और उनको बुलावा भेजने वाली यह शक्ति थी–
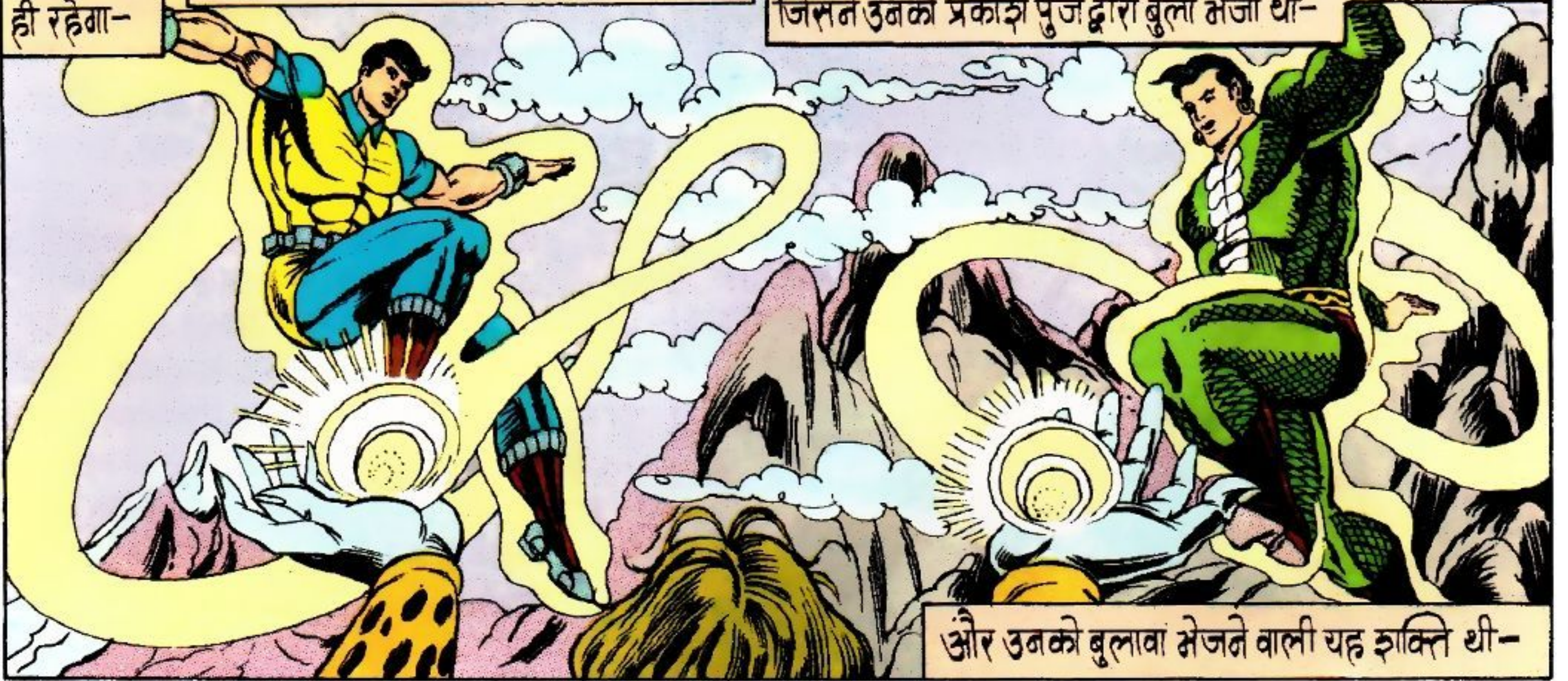
शक्ति, तुम! यह प्रकाश पुंज तुमने भेजा था! और नागराज भी यहां पर है!... यह चक्कर क्या है?
हम अभी कुछ ही घंटे पहले तो मिले थे!
जरूर कोई खास कारण होगा ध्रुव! पहले शक्ति से इस हरकत का कारण तो जान लो!
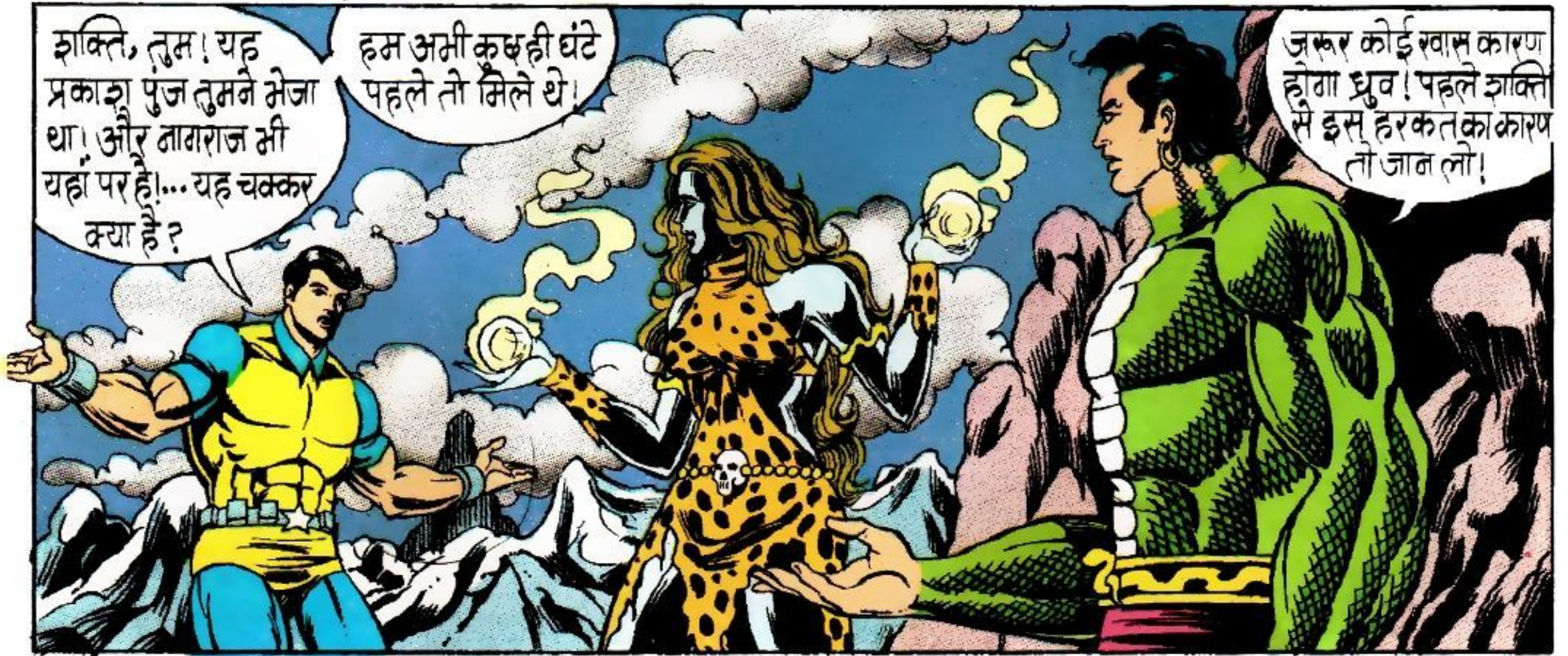
इसका कारण भी तुम ही नागराज! और शायद निवारण भी!
मैं? मैंने क्या किया है, शक्ति? ऐसी कौन सी भूल हो गई मुझसे?

शक्ति नागराज और ध्रुव को देवी काली द्वारा बताया गया सारा घटनाक्रम सुनाती चली गई–
यह तुम्हारी ही शक्ति का परिष्कृत रूप है नागराज, जो जयंत को ब्रह्मांड के विनाश का हथियार बना रहा है! और इस शक्ति को सिर्फ शतरूपा पुंज की शक्ति ही काट सकती है!

★इस संबंध में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें: ध्रुव-शक्ति

शक्ति का विराट रूप, ध्रुव और नागराज को अपनी हथेलियों पर उठाकर बादलों की चीरता हुआ, अंतरिक्ष की गहराइयों में स्थित रोंगटे खड़े कर देने वाले रास्तों को पार करने लगा–

समस्या बहुत गंभीर है शक्ति! अब हमें एक पल भी गंवाना नहीं चाहिए। तुम हमें रास्ता दिखाओ, हम लाएंगे शतरूपा पुंज!
आओ! देवों की शक्ति की मदद से तुम दोनों मेरे साथ अंतरिक्ष में तैर भी सकते हो। मेरे पीछे-पीछे आ जाओ।
मैं अपना विराट रूप भी त्याग रही हूं। तुम दोनों को इस क्षेत्र में लाने के बाद अब उसकी जरूरत नहीं है।
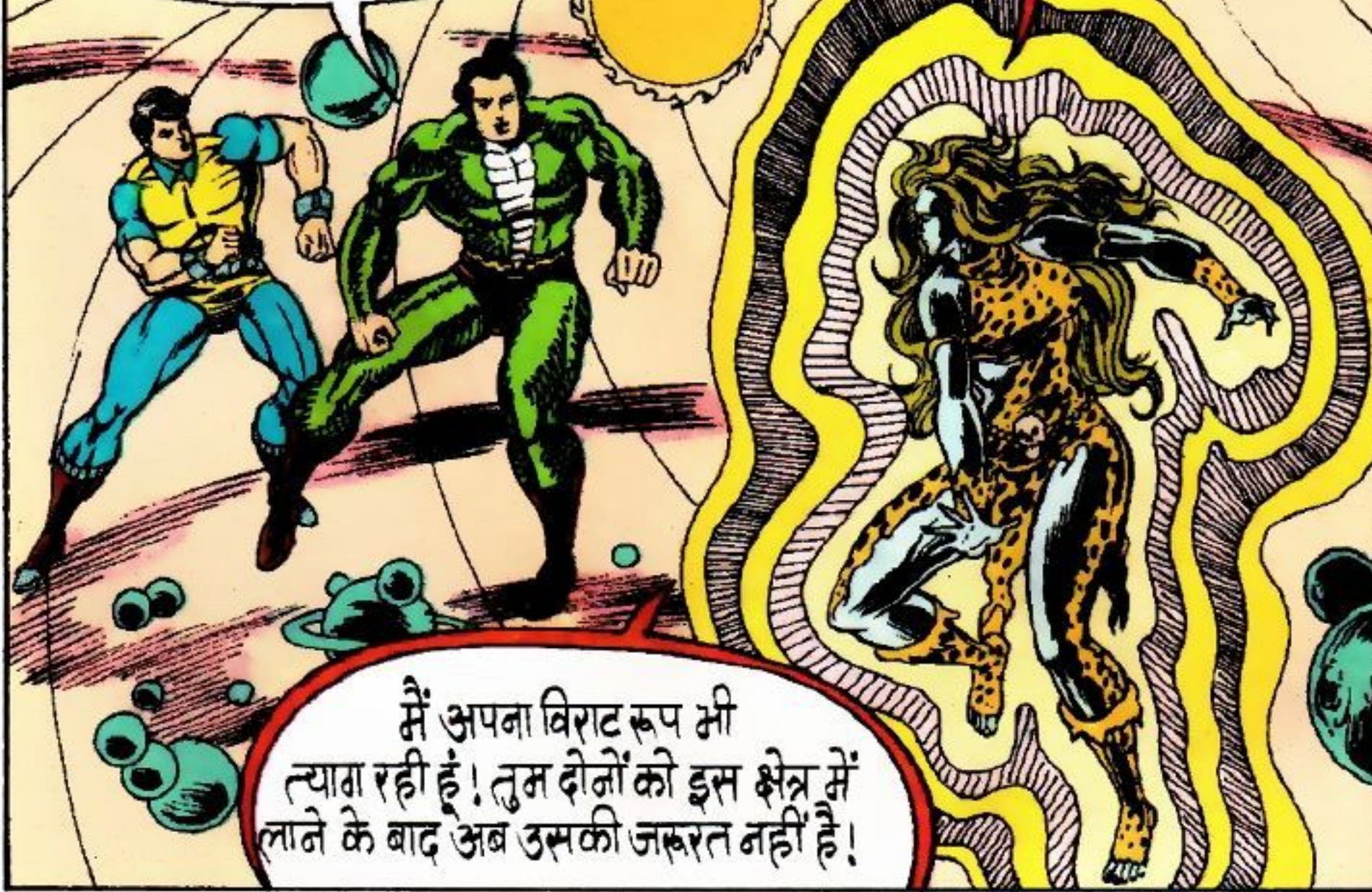
एक दुष्कर यात्रा आरंभ हो गई थी-

और इस यात्रा को सफल न होने देने की तैयारियां भी-
क्या? इन्द्र ने मानवों की मदद ली है? और इनमें से एक मानव वही है, जिसमें कालजयी की शक्तियां थीं। पर वे मानव हमसे तो टकरा नहीं सकते। और उस शक्ति की काट सिर्फ हमारे पास है। उनको अंतरिक्ष के शून्य में अपना सिर पटकने दो। और यहां पर आएं तो आग वगैरह जलाकर रखना। मैंने कभी भुना मानव नहीं खाया।
तुम्हारे अहंकार ने तुम्हारे दिमाग पर पर्दा डाल दिया है शंभूक। तुम भूल रहे हो कि शतरूपा पुंज भी उस शक्ति को काट सकता है। और वे मानव जिस तरफ बढ़ रहे हैं, वह रास्ता शतरूपा पुंज की तरफ जाता है।

पर... पर शतरूपा पुंज तो परमशक्ति के क्षेत्र में रखा है। वहां पर तो न देवता जा सकते हैं, और न हम! फिर मानव कैसे जाएंगे?
क्योंकि परमशक्ति ने मानवों के लिए ऐसा कोई नियम नहीं बनाया है मूर्ख! उसने इसकी जरूरत ही नहीं समझी। सिर्फ यह समझ लो कि मानव परमशक्ति के क्षेत्र में जा सकते हैं।

और न जाने क्या करके वापस आ सकते हैं। उनको रोकना होगा, गुरूदेव! रोकना होगा। उनको परमशक्ति के क्षेत्र में जाने के लिए असुर लोक से होकर जाना पड़ेगा, और यहीं पर उनकी कब्र बना दी जाएगी! बर्फीली कब्र!

ध्रुव और नागराज शक्ति के पीछे-पीछे असुरलोक की सीमा पार कर चुके थे–
संभलकर, नागराज और ध्रुव! असुरलोक की सीमा यहीं से शुरू होती है! देवता इस अवरोध को पार नहीं कर सकते! मैं इस अवरोध को सिर्फ इसलिए पार कर पाई हूं, क्योंकि मैं एक मानव शरीर में वास करती हूं! असुर हमारे आने से भी अंजान नहीं होंगे, और हमारे मकसद से भी नहीं! वे हमको रोकने का पूरा प्रयास करेंगे!...
...और उनसे निपटना आसान नहीं...
...आऽऽऽह!

आऽऽऽह! हिमरिक्ष दैत्यों की टोली हमारे इन्तजार में पहले से ही यहां बैठी थी। और इनका एक ही स्पर्श किसी भी चीज को जमा देने के लिए पर्याप्त है!
मैं एकाएक इतनी ठंडी हो गई हूं कि अपनी ऊष्मा शक्ति का प्रयोग भी नहीं कर पा रही हूं!
मेरी सर्प शक्तियां भी इस अति शीतल स्पर्श से सुषुप्तावस्था में चली गई हैं। मैं इस बर्फीली कैद को तोड़ नहीं पा रहा हूं!
सिर्फ इतना ही नहीं, नागराज! ये हम दोनों को उस विशाल फटते तारे में डालने की कोशिश कर रहे हैं। जिससे या तो हम जल जाएं...
...और या हमेशा के लिए उसकी प्रचंड गुरुत्वाकर्षण शक्ति में कैद होकर रह जाएं!
ध्रुव की चपलता ने उसे अभी तक हिमरिक्षों के चंगुल से बचाया हुआ था-
मैं भी जल्दी ही इन हिमरिक्षों द्वारा पकड़ लिया जाऊंगा, और हमारी अभियान यात्रा शुरू होते ही खत्म हो जाएगी! पर जब चमत्कारी शक्तियों से युक्त शक्ति और नागराज तक बचने का उपाय नहीं सोच पा रहे हैं, तो भला मेरे जैसा मामूली इन्सान क्या कर सकता है? वैसे नागराज और शक्ति दोनों ही कैद से छूटने के लिए भरपूर ताकत लगा रहे हैं! अगर इनको जरा सी मदद मिल जाए तो ये आजाद हो सकते हैं। पर मैं जरा सी मदद भी कैसे कर सकता हूं? मेरे सिग्नल फ्लेयर और फ्लैश बम भी इतनी गर्मी पैदा नहीं कर सकते कि ये बर्फ थोड़ी सी भी पिघल सके! ओऽऽऽ एक तरीका समझ में आ तो रहा है। शायद काम कर भी जाए...
...पर पहले शक्ति को आजाद कराना होगा, ताकि फिर वह नागराज को आजाद करवा सके!...
...मेरी चाल तो बार-बार सफल होगी नहीं!

मैं वार करने के साथ-साथ यह उम्मीद भी करता हूं कि मेरी स्टार लाइन इस हिमरिक्ष की विशाल कलाइयों को पकड़ में ले लगी! आहा! ले लिया! अब नाइलो स्टील की बनी मेरी 'स्टार लाइन' इस बर्फीली कलाई में धंसती चली जाएगी! साथ-साथ कटी बर्फ जुड़ती तो जाएगी! पर वह जोड़ इतना तो कमजोर जरूर हो जाएगा...
...कि शक्ति उसे तोड़ सके!
ई या या ऽऽ ऽऽ ऽऽऽ ह ह ह
धन्यवाद ध्रुव! अब मैं इनको न तो अपने-आपको पकड़ने का मौका दूंगी...
...और न ही नागराज को पकड़े रखने का!
शक्ति के ऊष्मा वार ने नागराज को भी आजाद करवा दिया-
और एक भयंकर युद्ध शुरू हो गया-

हमारे वारों का इन पर कोई असर नहीं हो रहा है! क्योंकि ये हिमरिक्ष बर्फ के बने हैं! और इनके बर्फीले शरीर कट-कट कर भी जुड़ जा रहे हैं, और उष्मा से गलकर भी!
आऽऽ... पर हम तो बर्फ के नहीं बने हैं न शक्ति? हम तो अगर उस फटते तारे में गिर गए जिसमें ये हमें गिराने की कोशिश कर रहे हैं तो हम गलेंगे तो जरूर, पर जुड़ नहीं पाएंगे!
बहुत हो गया ये खेल! अब मैं इन दैत्यों को वैसे ही तोड़कर रख दूंगा जैसे सूआ, बर्फ की सिल्ली को तोड़ डालता है!
अपनी इच्छाधारी शक्ति का इस्तेमाल न करने के कारण मैं तो भूल ही गया था कि मेरे अन्दर नागद्वीप के समस्त इच्छाधारी नागों की इच्छाधारी शक्ति का अंश मौजूद है... यानी मैं विशाल रूप धारण करके बन सकता हूं... ...इच्छाधारी नागराज!
नागराज विशालकाय इच्छाधारी रूप धारण करने लगा-
और अब लड़ाई में दैत्य हिमरिक्षों का पलड़ा हल्का होने लगा-
ये मेरे वारों से टूटकर बिखर तो रहे हैं, पर फिर से वापस जुड़ रहे हैं! ये अनश्वर हैं शक्ति! और संख्या में भी बहुत ज्यादा हैं! अब हम क्या करें?
परन्तु सिर्फ कुछ ही पलों के लिए-

इन कुछ पलों से उबरने के तुरन्त बाद हिमरिक्ष ने शक्ति पर अपना वार कर दिया। और एक फटते तारे के तीव्र गुरुत्त्वाकर्षण क्षेत्र की सीमा पर हो रहे इस युद्ध में पहली सफलता हिमरिक्षों के हाथ लगी—

वार खाकर शक्ति का असंतुलित शरीर गुरुत्त्व क्षेत्र की सीमा को पार कर गया—

और भीषण गुरुत्त्वाकर्षण क्षेत्र शक्ति को अपने अन्दर निगलने लगा—

इस भीषण खिंचाव का प्रतिरोध, शक्ति का शरीर भी नहीं कर पाया—

नागराज! शक्ति तो उस फटते तारे में गिर गई है! अब हम क्या करें? जिसके दम पर हमको यह लड़ाई जीतने का भरोसा था, वही सबसे पहले पराजित हो गई है!

इन हिमरिक्षों की कोई न कोई कमजोरी तो होगी ही ध्रुव! सोचो, इनकी उस कमजोरी को ढूंढ निकालो!...

... वरना जल्दी ही हम भी शक्ति के साथ फटते तारे की सैर कर रहे होंगे!

अंतरिक्ष में तैरते इन राक्षसों की कमजोरी तो सिर्फ एक ही नजर आती है नागराज ! और वह ये कि ये राक्षस विशालकाय और बर्फ के बने होने के कारण जरा सुस्त हैं। ज्यादा फुर्तीले नहीं हैं! पर इस कमजोरी का फायदा उठाकर हम इनसे सिर्फ बच सकते हैं! इनको हरा नहीं सकते!
तो क्या हम इनको देखने और बचते रहने के अलावा और कुछ नहीं कर सकते ?
देखने ? यस ?
मैं इतनी देर से सोच रहा था कि अपने 'सिगनल फ्लेयर' और फ्लैश बमों का क्या इस्तेमाल करूं, आइडिया मिल गया! इन हिमरिक्षों का सारा शरीर तो बर्फ का बना हुआ है ! पर एक चीज बर्फ की नहीं है ! और वह है इनकी आंखें !
इनको और कुछ नहीं तो अंधा तो किया जा ही सकता!
और ऐसा करने में इनकी सुस्त होने की कमजोरी भी हमारे काम आएगी !...
... ये इधर-ऊधर हिल-डुल कर हमारे वार से बच नहीं पाएंगे!
यह काम तो मेरे सर्प भी कर सकते हैं। नागफनी सर्प!
नागराज की कलाई से नागफनी सर्प निकलकर—
देव कालजयी से वरदान स्वरूप मिले विशेष नागफनी सर्प!
वही काम करने लगे जो ध्रुव के सिगनल फ्लेयर कर रहे थे—
लेकिन मुख्य समस्या वहीं की वहीं थी, जिससे निपटने का रास्ता न तो नागराज निकाल पाया था और न ही ध्रुव-
ओह ! मेरे सिगनल फ्लेयर तो खत्म हो गए हैं नागराज! और अभी भी कई हिमरिक्ष बचे हुए हैं!
ये हिमरिक्ष काफी दूर-दूर फैले हुए हैं। नागफनी सर्पों को भी इन सभी तक पहुंचने में दिक्कत हो रही है !
और अभी भी कई हिमरिक्षों की आंखें सलामत हैं!

तभी असुरलोक की सीमा के अन्दर फैले अंधकार को चीरता हुआ, प्रकाश का एक तीव्र पुंज चमक उठा-
एकाएक चमके इस प्रकाश ने असुर हिमरिक्षों के साथ-साथ ध्रुव और नागराज की आंखों को भी चौंधिया दिया-
लेकिन ध्रुव और नागराज की प्रकाश की आदी आंखें असुरों की अंधकार में रहने वाली आंखों की अपेक्षा जल्दी देखने लायक हो गईं-
यह क्या है नागराज?
पता नहीं ध्रुव! यह प्रकाश उसी फटते तारे से बाहर निकला है! कहीं यह कोई नई मुसीबत न हो!
आने वाली 'मुसीबत' मुसीबत तो अवश्य थी! पर नागराज और ध्रुव के लिए नहीं बल्कि असुरों के लिए! क्योंकि आने वाली मुसीबत थी-
शक्ति! तुम तारे की भीषण गुरुत्वाकर्षण शक्ति से बाहर निकल आईं! कमाल है!
दिक्कत तो बहुत हुई ध्रुव! पर जब मैं तारे की तरफ गिर रही थी, तब मुझे प्रकाश रूप में बदलकर गुरुत्व शक्ति से बाहर निकलने का ख्याल आया। पर ऐसे तारे प्रकाश किरणों तक को खींच लेते हैं!
इसी कारण मुझे गुरुत्व क्षेत्र से निकलने में परेशानी तो हुई, पर मैं आखिरकार सफल हो ही गई!
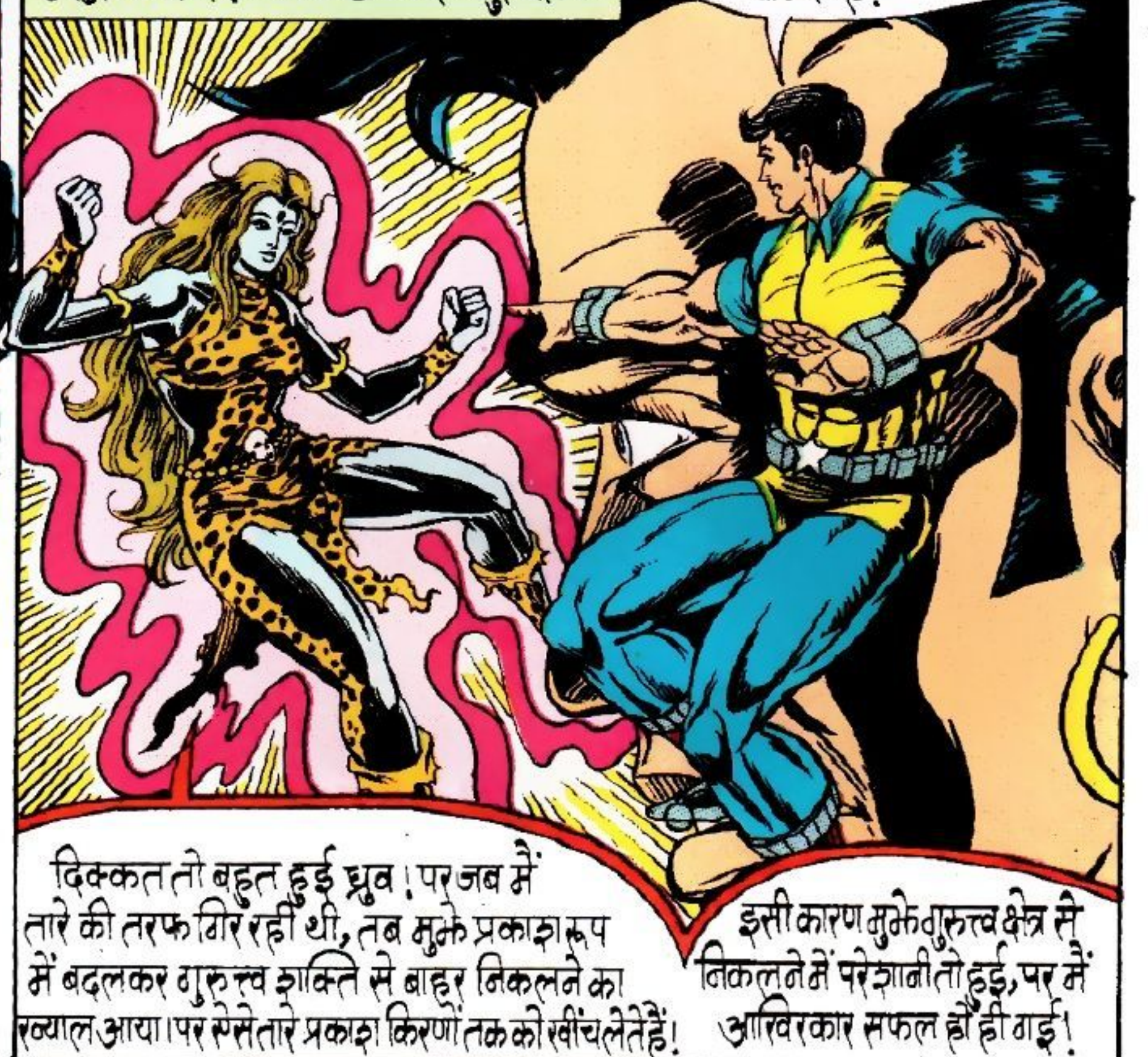
और बाहर आते-आते तुम दोनों द्वारा राक्षसों को अंधा करने की कोशिश भी मुझे नजर आ गई! तो मैंने इन सबको एक साथ कुछ देर के लिए अंधा कर दिया! अपने प्रकाश की चमक से! पर इसका कोई फायदा नहीं होगा ध्रुव! आंखें जाने के बाद ये अपनी दूसरी इन्द्रियों से हमारा पता लगा लेंगी!

नागराज ठीक कह रहा था! ये अनश्वर हैं। इनकी आंखें जाने के बाद भी इनको कैसे मारा जा सकता है? वैसे फिलहाल तो इनकी आंखें जल्दी ही मेरे प्रकाश की चमक से उबर जाएंगी। उसके बाद क्या होगा?

बाद में जो होगा सो तो होगा ही शक्ति! फिलहाल तो ये ऐसे स्थिर खड़े हुए हैं, जैसे कैरम बोर्ड पर गोटियां रखी रहती हैं! बिना हिले-डुले!

कैरम बोर्ड! नागराज, शक्ति, मिल गया इनको खत्म करने का रास्ता! और वह भी एक साथ!

और नागराज की अद्भुत नागशक्ति तथा ध्रुव की जुपिटर सर्कस में सीखी गई अद्भुत कलाबाज़ी की कला मिलकर एक घातक संयोग पैदा करने लगी–
नागराज का विशाल शरीर, अत्यधिक तेज गति से हिमरिक्षों के शरीरों से एक खास कोणों पर टकराने लगा। ठीक वैसे ही जैसे बिलियर्ड की सफेद 'स्ट्राईकर' बॉल अन्य बॉलों से टकराकर उनको पॉकेट में डाल देती है–
इस बार फर्क सिर्फ इतना था कि सफेद स्ट्राईकर बॉल नागराज का शरीर था, अन्य बॉल हिमरिक्षों के शरीर थे, और पॉकेट फटता हुआ तारा थी–
ध्रुव का हाथ नागराज के शरीर को वह दिशा दिखाता जा रहा था जिस पर चलकर नागराज हिमरिक्षों को टक्कर मारकर...

एक खास दिशा में मोड़ता जा रहा था! ठीक वैसे ही जैसे बिलियर्ड की सफेद स्ट्राईकर बॉल अन्य बॉलों को पॉकेट की तरफ मोड़ देती है! पॉकेट में गिरने के लिए! और इस स्थिति में पॉकेट था, वह फूटता तारा–
हिमरिक्षों के शरीर तेजी से उस तारे के भीषण गुरुत्वाकर्षण की सीमा रेखा को पार करके अन्दर गिरने लगे और तारा तेजी से उनको केन्द्र की तरफ खींचने लगा–
वाह, ध्रुव! यह बिलियर्ड वाला खेल तो बड़ा मजेदार लगता है! मैं जब भी पृथ्वी पर जाऊंगी एक बार खेलूंगी जरूर!
जरूर खेलना! पर नागराज को साथ जरूर रखना! ये बिलियर्ड का एक्सपर्ट है!
मैं तो इसको दिशा सिर्फ इसलिए दिखा रहा था, क्योंकि खुद टक्कर मारने के लिए सही दिशा का अंदाजा लगाना जरा मुश्किल होता है!
पर तुम्हारे आइडिए की दाद तो देनी ही पड़ेगी ध्रुव! ...
...एक ही बार में सारे के सारे हिमरिक्ष तारे की तरफ मुड़ गए! पहला खतरा तो हमने पार कर लिया!
असुरलोक के शासक तक यह सूचना पहुंचते देर नहीं लगी–
दैत्यराज! असुरपति! अशुभ सूचना है! मानवों ने हिमरिक्षों की पूरी टुकड़ी को नष्ट कर दिया है! वे सब फटते तारे में गिरकर गल गए!
हिमरिक्षों की टुकड़ी को नष्ट कर दिया? मानवों ने? यह नहीं हो सकता! अवश्य ही उनके पास कोई देव भी रहा होगा। पर हिमरिक्ष तो देवों पर भी भारी पड़ते हैं! कैसे हुआ यह सब?
कोई एक देवी तो थी मानवों के साथ, असुरपति!
परन्तु मुख्य हमला तो मानवों ने ही किया था। देवी तो मात्र सहायता कर रही थी!
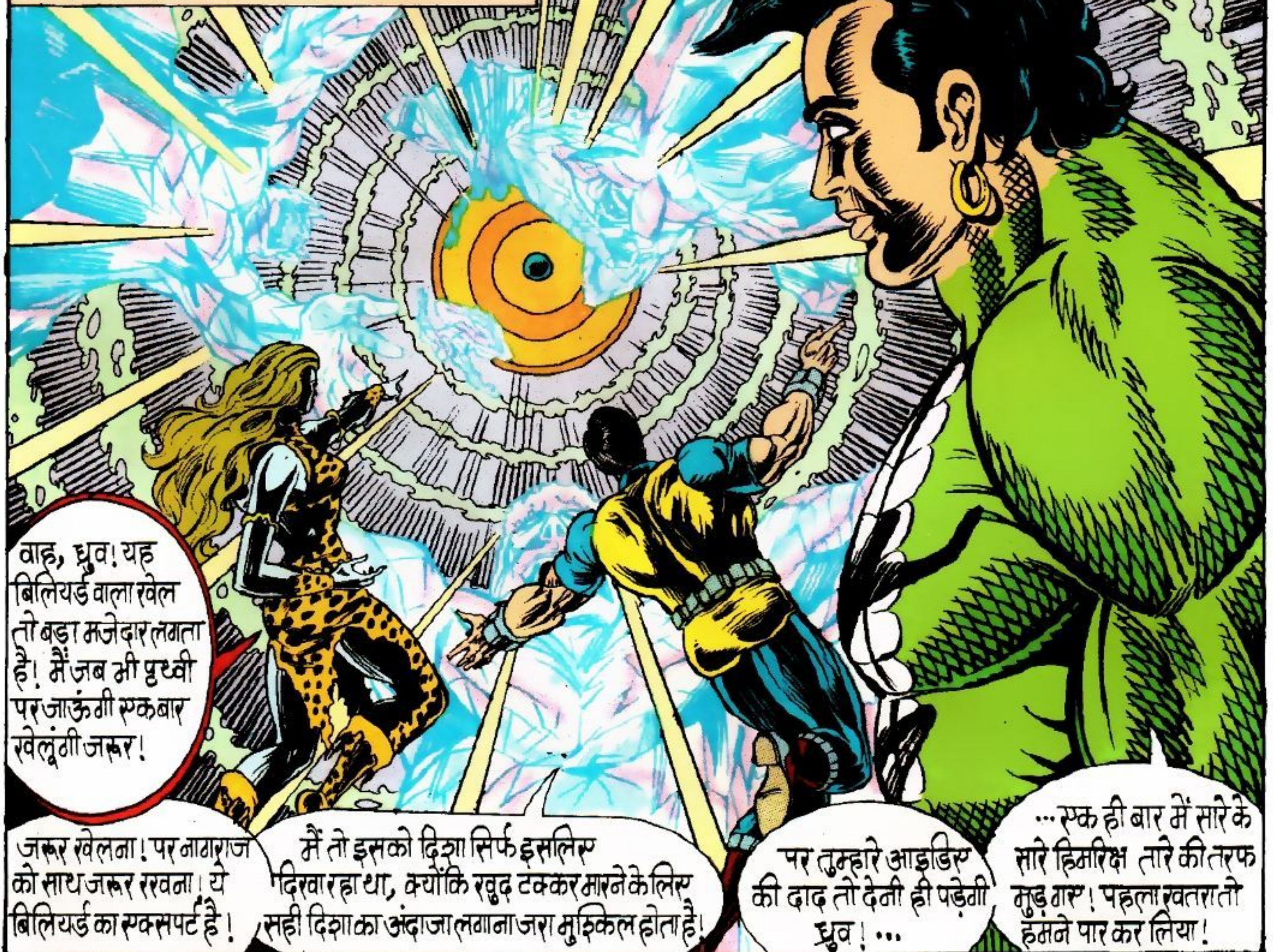
मानवों से मुझे ऐसी आशा नहीं थी! मुझे तो इस सूचना पर अब तक विश्वास नहीं आ रहा है! दो मानव... दो तुच्छ मानव हिमरिक्षों को कैसे हरा सकते हैं?
हम असुरों की हार का कारण तुम जैसे शासक ही रहे हैं शंभूक! जो अपने दुश्मनों को सदैव 'तुच्छ' समझने की भूल करते हैं! ध्यान रखो, देवों से निपटना आसान है, परन्तु मानवों से नहीं! क्योंकि मानव के अन्दर सुर और असुरी दोनों ही प्रकार के गुण होते हैं। अब वे जैसे-जैसे असुरलोक के अन्दर घुसते जाएंगे, असुरी भावनाएं प्रबल होती जाएंगी! तब उनको रोकना और मुश्किल होगा!
वे असुरलोक की सीमा भी पार कर चुके हैं! और पहला अवरोध भी! अब उन को असुरलोक के द्वार में घुसने से रोका नहीं जा सकता!
तो फिर हम क्या करें, गुरु शुक्राचार्य? इनका स्वागत करें? इनके गले में मालाएं डालें...
...नहीं, गुरुदेव! इनको तो मैं रोककर ही रहूंगा! पर अब किसी असुर टुकड़ी को नहीं भेजूंगा!
कुछ परम शक्तिशाली दैत्यों को भेजूंगा, जो उन मानवों की खोपड़ियां काटकर स्वर्गलोक के द्वार पर टांग आएं!
असुर टुकड़ियों को क्यों नहीं भेजोगे वत्स?
क्योंकि देव इस स्थिति का फायदा उठाकर असुर लोक पर भी हमला कर सकते हैं गुरुदेव! और उसके लिए हमको असुर टुकड़ियों की जरूरत पड़ेगी!
उत्तम! अति उत्तम! हम तुम्हारे विचारों से प्रसन्न हुए, वत्स!...
...पर एक काम करो! उन दोनों मानवों को अलग-अलग कर दो! तब उनकी शक्ति आधी हो जाएगी, और उनकी मौत आसान...
...असुरलोक के दो प्रवेशद्वार हैं! हालांकि दोनों ही परमशक्ति के क्षेत्र तक पहुंचते हैं! परंतु बीच में वे कहीं नहीं मिलते! दोनों मानवों को अलग-अलग प्रवेश द्वार से आने के लिए विवश कर दो!
ठीक कहा गुरुदेव! मैंने तो ऐसे दो महाबलवान असुरों को चुन भी लिया है, जो इन मानवों का रास्ता रोकेंगे!

तुम्हारे बगैर? पर हम असुरलोक से परमशक्ति के क्षेत्र तक जाने वाला रास्ता कैसे ढूंढेंगे? और असुरलोक में हमारी असुरों से भिड़ंत होगी ही होगी! हम उनसे निपट सकते हैं। हमें विश्वास है! परन्तु उसके लिए हमको उनकी शक्तियां और कमजोरियां जाननी होंगी। वह हमको कौन बताएगा?

मेरा शक्ति मुंड! पृथ्वी पर मुझे अपनी शक्तियों को संचित रखने के लिए इसकी आवश्यकता पड़ती है! पर स्वर्ग में इसकी जरूरत नहीं पड़ेगी! यहां मेरी शक्तियां अपने-आप ही संचित रहती हैं! यह मुंड मेरी शक्तियों से सम्पन्न है। यह तुम्हारे साथ असुर लोक में जाएगा? तुम्हें रास्ता भी बताएगा, और असुरों के विषय में भी जानकारी देगा। साथ ही साथ इसके द्वारा तुम लोगों से मेरा संपर्क भी बना रहेगा! ★

पर, यह तो दैवीय शक्तियों से युक्त है। क्या यह असुरलोक के द्वार के पार जा पाएगा?

वैसे तो नागराज भी दैवीय शक्तियों से युक्त है। पर यह मानव है, और असुर लोक में जा सकता है। वैसे ही यह मुंड है! देव नहीं जो द्वार के पार न जा सके!

ठीक है शक्ति! हम चलते हैं!

और कसम खाते हैं कि या तो शतरूपा पुंज लेकर आएंगे, या वापस नहीं आएंगे!

परम शक्ति तुम दोनों का कार्य सफल करे मानवों!

दोनों मानव एक असंभव कार्य को संभव बनाने के लिए बढ़ चले-

और चालें चलनी शुरू हो गईं-

इस मानव के अंदर घुसते ही द्वार का रास्ता इतना छोटा कर देना कि दूसरा मानव न घुस पाए!

हालांकि ज्यादा देर तक यह द्वार छोटा नहीं रह सकता पर उतनी देर में ही दूसरा मानव हड़बड़ाकर दूसरे द्वार में घुसने की कोशिश जरूर करेगा!

★पाठकों की जिज्ञासा के लिए यह स्पष्ट कर दें कि चंदा एवं शक्ति दो अलग व्यक्तित्व हैं। चंदा पूर्ण मानव है और शक्ति पूर्ण देवी। चंदा और शक्ति को एक दूसरे का रूप समझकर भ्रमित न हों। शक्ति वह देवी रूप है जो चंदा के शरीर में रहता है।

नागराज के अन्दर प्रवेश करते ही द्वार सिकुड़ना शुरू हो गया-
सिर्फ 'शक्ति मुंड' ही बड़ी मुश्किल से अन्दर घुस पाया-
यह क्या शक्ति? यह द्वार तो जैसे ... बन्द हो रहा है!
मुझे यह नहीं पता था कि असुर यह द्वार बन्द भी कर सकते हैं! मुझे तो यही पता था कि वे द्वार पर तिलिस्म लगा सकते हैं, पर इसे बन्द नहीं कर सकते!
एक दूसरा द्वार भी तो है। मैं उससे अन्दर जाऊंगा शक्ति!

नहीं ध्रुव! यह जरूर असुरों की कोई चाल है। मुझे जरा सोचने का मौका दो! रुक जाओ!
नहीं, शक्ति! अगर यह चाल है तब तो मेरा तुरंत जाना और जरूरी हो जाता है! नागराज की जान खतरे में हो सकती है!
पर इस द्वार से जाकर तुम उसे मदद पहुंचा भी नहीं सकते, ध्रुव! इस द्वार का रास्ता उस द्वार के रास्ते से नहीं मिलता है!
मैं नागराज को ढूंढ लूंगा शक्ति! पर मैं इस दूसरे द्वार के भी छोटे होने का इन्तजार नहीं कर सकता! मैं और देर नहीं कर सकता!

ठीक है! तुम्हारी बात तर्क संगत है! पर 'शक्ति मुंड' तो नागराज के साथ ही चला गया है! पता नहीं तुम दोनों की मुलाकात हो न हो! इसीलिए मैं शक्ति-मुंड का एक प्रतिरूप तुम्हारे साथ भी भेज रही हूं!
ओ, हां! धन्यवाद शक्ति! अपने गाइड के बारे में तो मैं भूल ही गया था!

ध्रुव का शरीर, दूसरे द्वार में शक्ति मुंड के साथ-साथ धंसता चला गया! असुरराज की चाल कामयाब हो गई थी-
नागराज और ध्रुव अलग-अलग हो गए थे-
हा हा हा! बड़े हड़बड़ी में रहते हैं मानव! देखा हो गए न अलग-अलग! अब दोनों मरेंगे! भयानक मौत मरेंगे! और ऐसे असुरों के हाथ मरेंगे, जिनके हाथों कई देवता जिन्दा लाश बनकर रह गए हैं! अमृत ने उनको मरने नहीं दिया, और हमारे असुरों ने उनको जीने नहीं दिया!
अब देखिए तमाशा, गुरुदेव! दो चूहों की मौत का तमाशा! शेरों के हाथों!

तमाशा तो जरूर शुरू होने वाला था! पर चूहा कौन था, और शेर कौन, इसका फैसला तो समय को ही करना था-

आऽऽऽह! यह मैं कहां आकर गिरा हूं? चारों तरफ का वातावरण चमकदार रोशनी से भरा हुआ है! ...

★विस्तार से जानने के लिए पढ़ें: नागराज और नगीना

ओह! 'शक्ति मुंड' एकदम सही कह रहा है। एक परछाई मुझे उसी किरण की तरफ धकेल रही है। मैं अपने-आपको इस किरण में गिरने से रोक नहीं सकता। बचने का सिर्फ एक ही रास्ता है ...
और वह यह कि मैं अपने शरीर को इच्छाधारी कणों में बदलकर इस किरण को अपने शरीर से बिना नुकसान पहुंचाए आर-पार निकल जाने दूं!
...कि इस स्थिति में मैं सिर्फ तीन पलों तक रह सकता हूं! और इस बचाव की मुद्रा में रहते हुए मैं आक्रमण नहीं कर सकता! वैसे आक्रमण करूं भी तो क्या?
ताड़
इधर नागराज एक अत्यन्त विषम परिस्थिति में फंस गया था-
लेकिन मुख्य समस्या यह है...
और उधर ध्रुव भी अपने आपको एक अजीबो गरीब वातावरण में पा रहा था-
यह सब क्या है, तंत्र मुंड? द्वार से पार होते ही ये हम कहां आ गए? यह तो किसी महाविशाल इलेक्ट्रॉनिक बोर्ड का सर्किट लग रहा है!...
ओह! यानी हम तड़ित गिरी दैत्य के क्षेत्र में आ गए हैं...
...यह दैत्य जब भी कहीं भी किसी से भी लड़ता है तो वातावरण में ऐसे ही एक विद्युत तंत्र का निर्माण कर देता है!
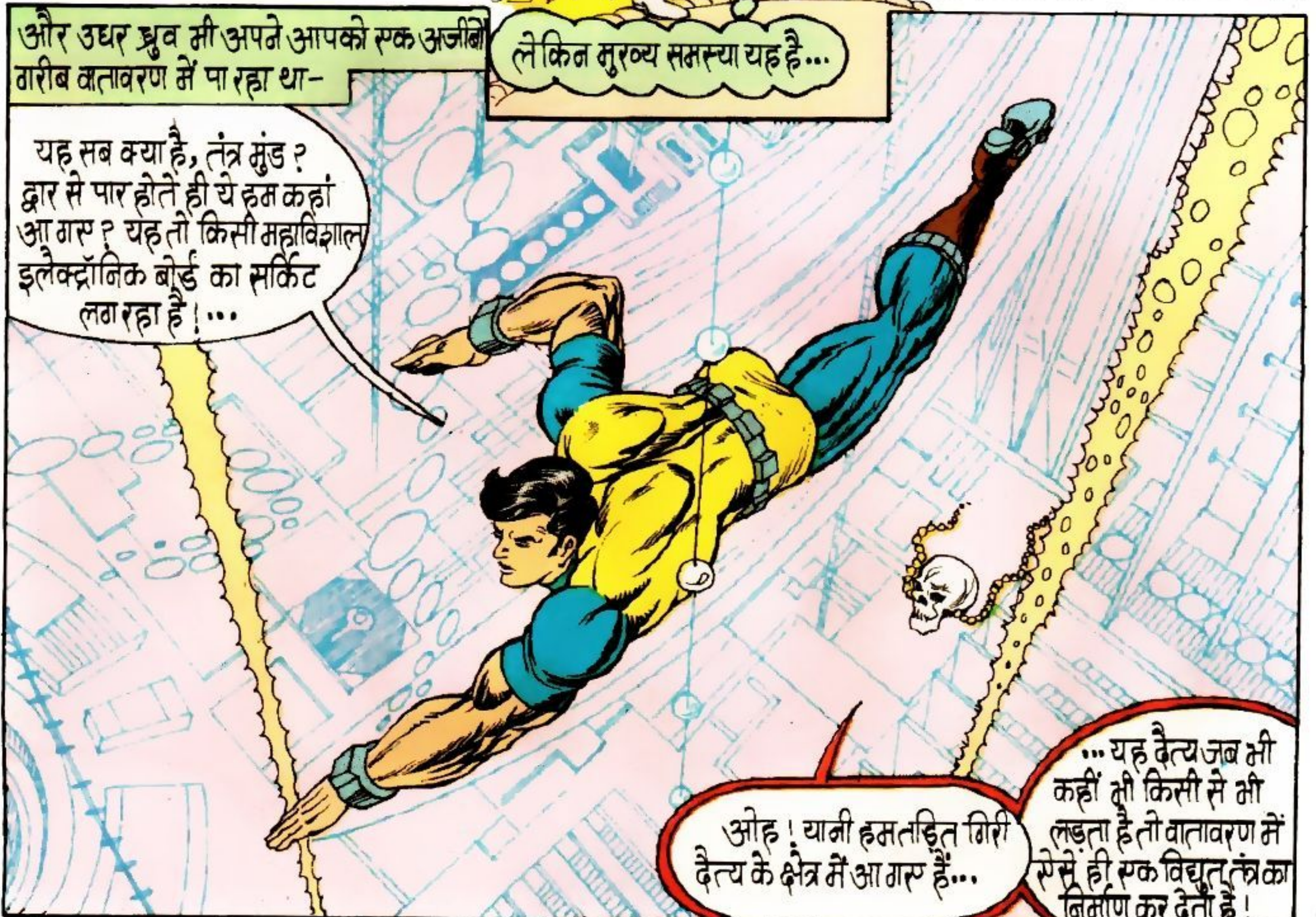
पर वह... क्या नाम बताया... हां तड़ित गिरी है कहां पर? वह कहीं नजर नहीं आ रहा है! क्या तुम बता सकते हो कि वह इस वक्त कहां पर है?
बता तो सकता हूं ध्रुव, पर कोई फायदा नहीं होगा! क्योंकि जब तक मैं तुमको उसकी स्थिति बता पाऊंगा...

चिड़ चिड़ कड़ड़ किर्र्र ! हीर्र्र्र र्र ही ही ही!
...तब तक वह तुम पर वार कर चुका होगा!
आऽऽऽह
देखो, ध्रुव! यह दैत्य दरअसल इसी विद्युत तंत्र के अंदर विद्युत ऊर्जा के रूप में रहता है!
और इस कारण इसकी गति भी विद्युत की गति के समान ही है!

इसी कारण जब तक मैं तुमको इसकी स्थिति बताऊंगा तब तक तो यह कई योजन की दूरी तय कर चुका होगा!
पर इससे निपटने का कोई न कोई रास्ता तो होगा ही शक्तिमुंड! देवों ने कभी न कभी तो इस दैत्य को मात दी ही होगी! कैसे हराया था उन्होंने तड़ित गिरी को!
तड़ित गिरी को हराने का कोई भी तरीका मुझे नहीं मालूम है, ध्रुव! क्योंकि आज तक देव कभी तड़ित गिरी को पराजित नहीं कर पाए!

ओह! यानी तड़ित गिरी अभी तक 'अनडिफीटेड' चैम्पियन है! तब तो जब तक कोई तरीका समझ में न आए तब तक कोई ऐसा स्थान ढूंढना होगा! जिसके आसपास कोई विद्युत तंत्र न हो! यानी इस तंत्र के अन्दर कोई खुली जगह!

जैसे यह जगह! इस विद्युत तंत्र का कोई भी पुर्जा या तार यहां से इतनी दूर है कि तड़ित गिरी पुर्जे या तार से निकल-कर मुझे छू नहीं सकता! यानी मैं थोड़ी देर के लिए सुरक्षित हूं!
नहीं ध्रुव! तुम कहीं पर भी सुरक्षित नहीं हो! क्योंकि तड़ित गिरी सिर्फ छूकर नहीं...
...बल्कि दूर से भी विद्युत ऊर्जा का वार कर सकता है!
आऽऽऽह! ऐसे तो यह मेरी जान निकाल लेगा! हर वार के साथ मेरी एनर्जी खत्म होती जा रही है! इसको इस तंत्र से बाहर निकालना ही होगा ताकि ये विद्युत पाए और मैं इस पर वार कर सकूं!
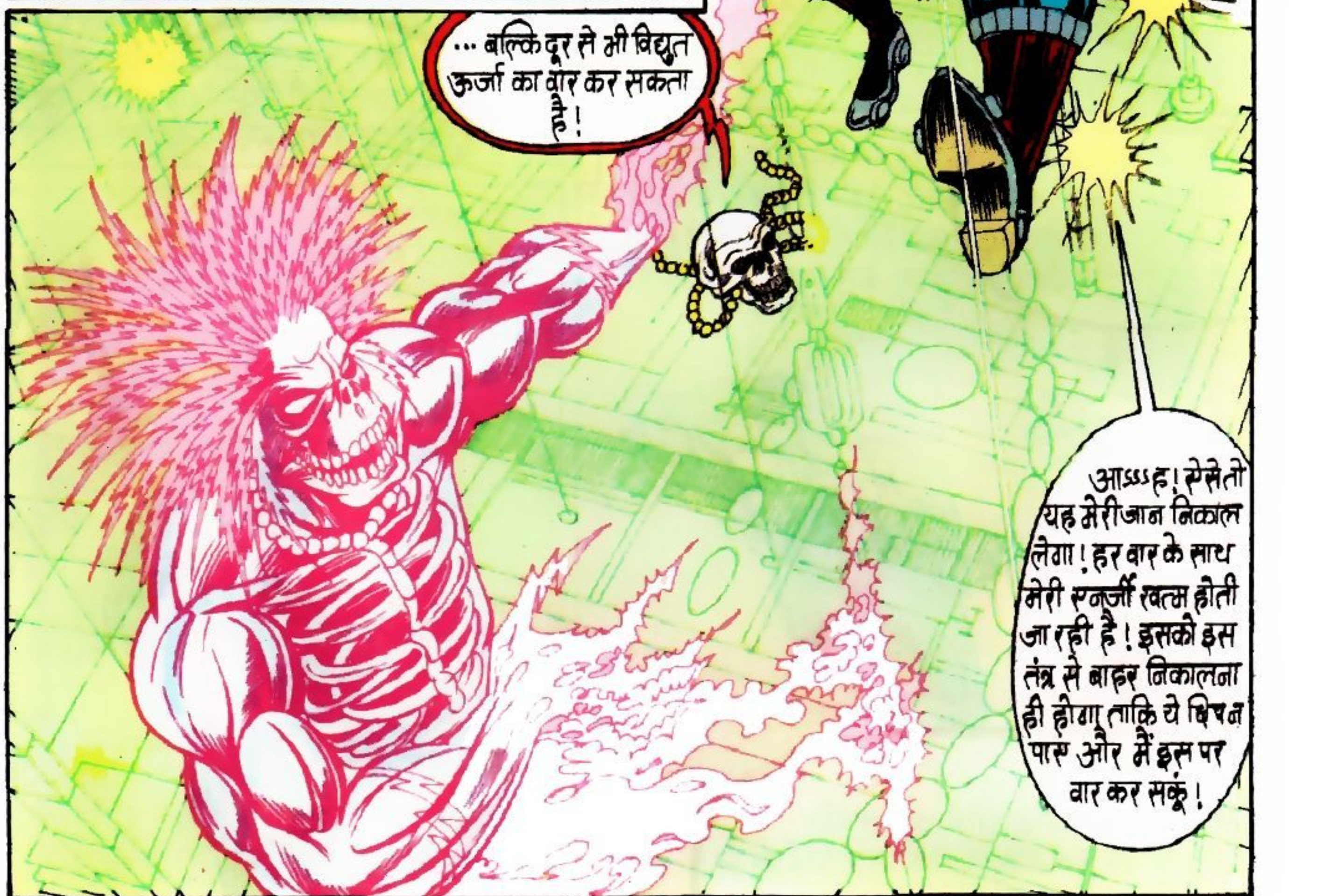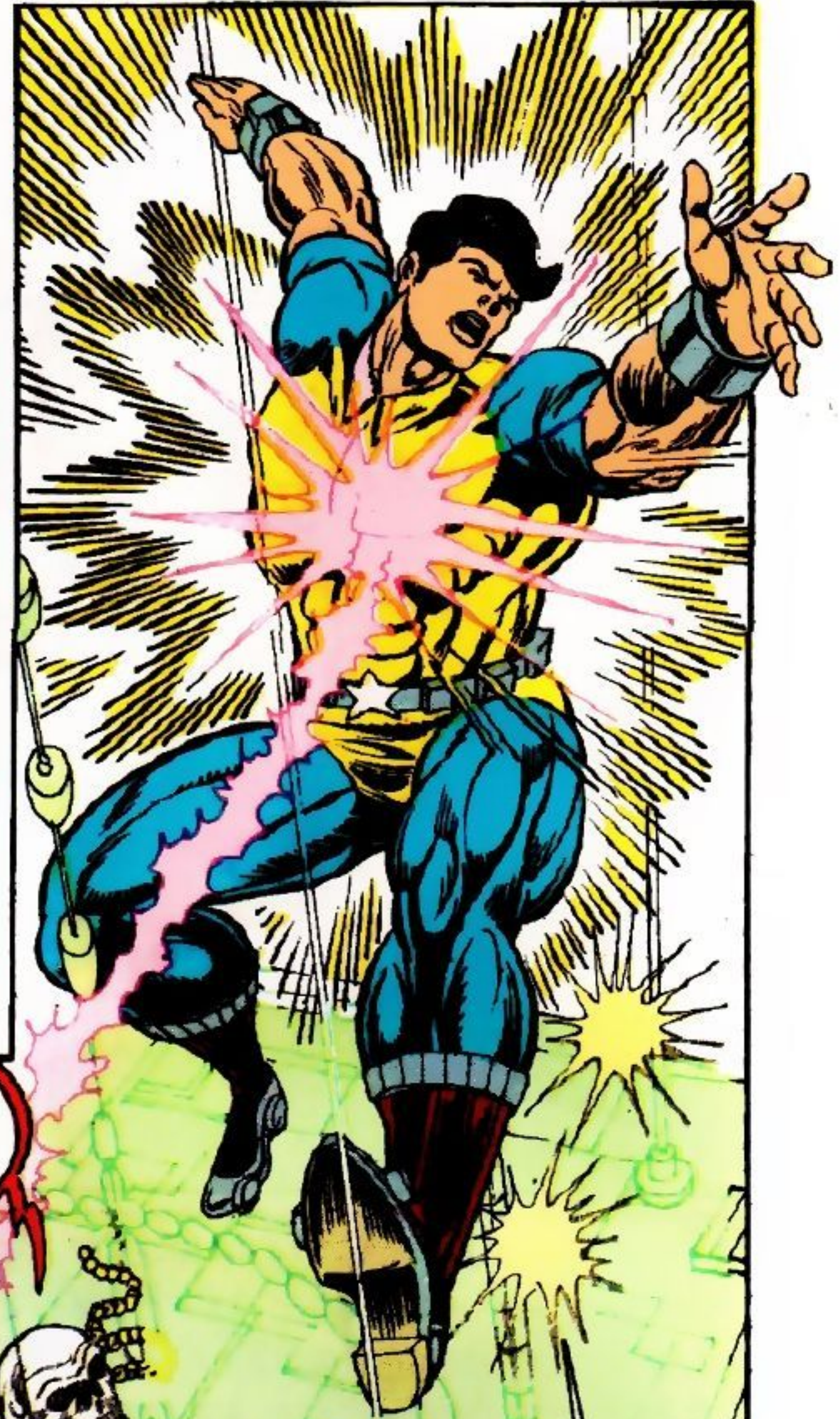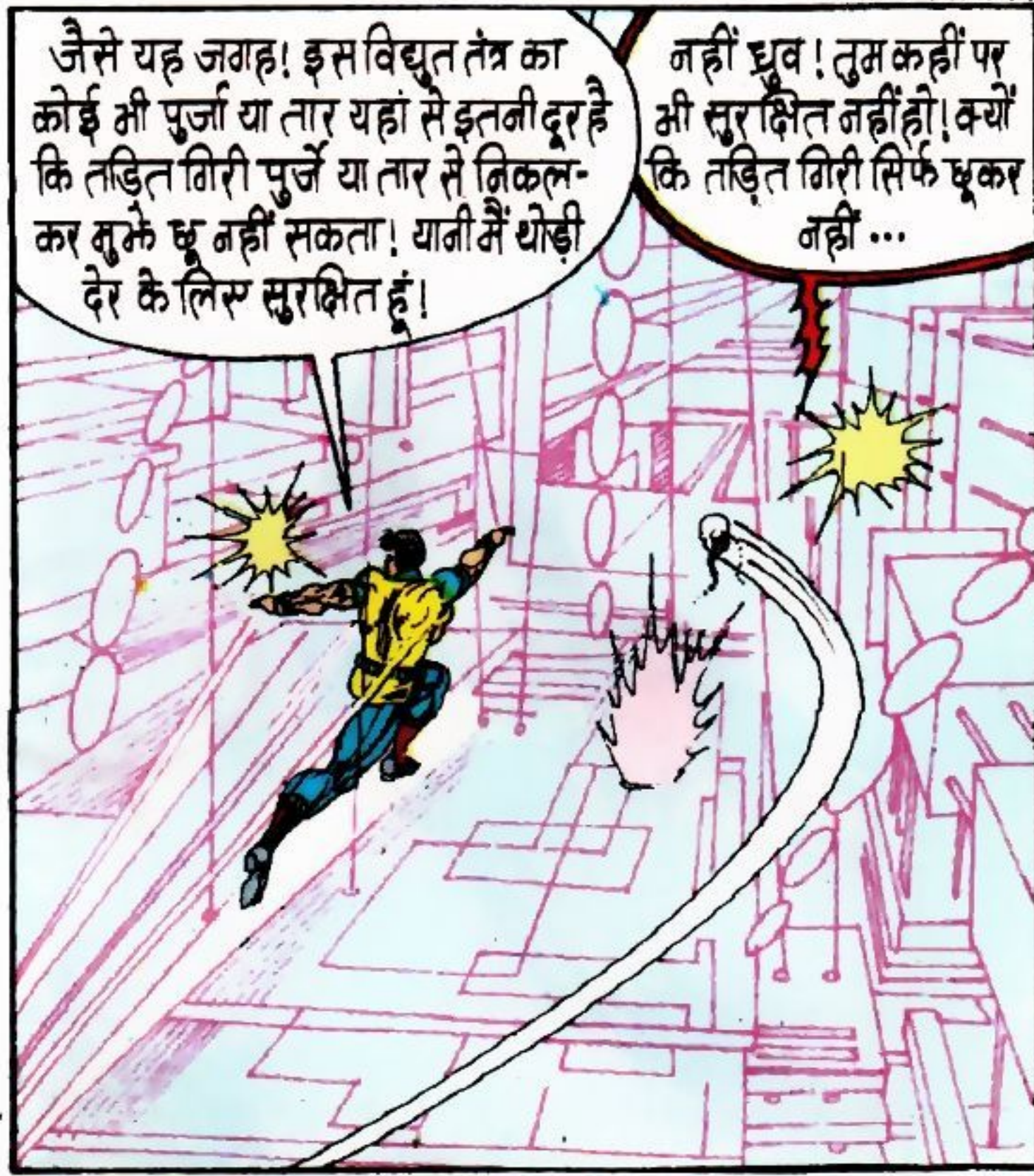
ओऽऽऽ! एक रास्ता है! इस दैत्य की कमजोरी यह है कि ये एक विद्युत सर्किट में रहता है। और विद्युत सर्किट के पुर्जे आपस में किसी न किसी प्रकार से जुड़े रहते हैं! ज्यादातर केसों में तार से! यानी अगर मैं इस तार को ऊपर- नीचे से काट दूं...
... तो इस तार का संपर्क बाकी सर्किट से टूट जाएगा, और फिर तड़ित गिरी इसी तार के टुकड़े में कैद होकर रह जाएगा!
ऐसा नहीं होगा ध्रुव! देवता भी इस पर ऐसा ही वार कर चुके हैं!...
... तार का यह टुकड़ा गिरते ही इस विद्युत तंत्र के किसी न किसी भाग से तो टकराएगा ही न! ...
... बस वह स्पर्श होते ही तड़ित गिरी फिर से इस तंत्र में समा जाएगा!
देखा! चला गया न तड़ित गिरी फिर से इस तंत्र के अंदर!
ओऽऽऽ! और इस तार को मैं पकड़े रख नहीं सकता! क्योंकि ऐसा करने से मैं खुद तड़ित गिरी के पास जाकर उसका काम और अपनी मौत, दोनों ही काम आसान कर दूंगा! तुम यह काम नहीं कर सकते, शक्ति मुंड?
नहीं, ध्रुव! मैं तुम्हारा मात्र पथप्रदर्शक हूं! इस युद्ध में मैं हिस्सा नहीं ले सकता! वैसे भी असुरलोक के अन्दर मेरी शक्तियां उतनी कारगर सिद्ध नहीं होंगी!
पर कुछ न कुछ उपाय तो सोचना होगा ही शक्ति मुंड! वरना थोड़ी देर में मेरी शक्ल भी तुम्हारे जैसी हो जाएगी! आऽऽऽह!
ध्रुव इस विशाल विद्युत तंत्र से बाहर निकलने का रास्ता तलाश रहा था-

और असुरलोक के ही एक दूसरे भाग में नागराज, छईयां छईयां से जान बचाता फिर रहा था-

शक्ति मुंड, इस राक्षस की कोई तो कमजोरी बताओ? यहां पर आकर तो देवों द्वारा दी गई मेरी उड़ने की शक्ति भी समाप्त हो गई है! वरना मैं उड़कर इस दैत्य तक पहुंचकर अपनी विषफुंकार का प्रयोग कर सकता था!

असुरलोक के इस भाग में देवों की कई शक्तियां निष्क्रिय हो जाती हैं! और रही कमजोरी की बात तो इस दैत्य की परछाईयां ही एक कमजोरी हैं। अगर इन परछाईयों का स्पर्श इसके शरीर से हो जाए तो वह परछाई इसी के शरीर में समाकर समाप्त हो जाएगी!

वाह! बहुत अच्छा तरीका बताया! अब यह भी बता दो कि मैं परछाईयों को पकड़ूं कैसे?

और उसे पकड़कर छईयां छईयां के शरीर तक फेंकूं कैसे?

यह सोचना तुम्हारा काम है नागराज! आखिरकार देवों ने मदद तुम से मांगी है। मुझसे नहीं!

तो वे उसी सूर्य तारे की सीध में छईयां छईयां की तरफ बढें, जिनसे ये परछाई बन रही है!

इससे पहले कि छईयां-छईयां कुछ समझ पाता-

दो परछाईयां उसके शरीर से आ चिपकी थीं-

दों परछाईयां एक बार फिर असंतुलित छईयां-छईयां की तरफ लपकीं-

और फिर उसके शरीर से चिपककर उसमें गुम हो गईं-

अब सिर्फ दो परछाईयां बची थीं। पर छईयां-छईयां अब नागराज को कोई मौका देने वाला नहीं था-

बस, मानव! अब तू नहीं बचेगा! अपनी चार गायब परछाईयों के बदले, मैं तुझे अपनी परछाई बना लूंगा!

ओह! इसने तो हमले अचानक तेज कर दिए हैं। अब मुझे अपना ध्यान परछाईयों से हटा-कर खुद बचने पर लगाना होगा!

तुम में तो काफी आश्चर्यजनक शक्तियां हैं नागराज! तुम उनका प्रयोग क्यों नहीं करते! विषफुंकार, विषदंश, सम्मोहन और इच्छाधारी शक्ति! इनमें से किसी भी शक्ति का तो प्रयोग करो!
इन शक्तियों का प्रयोग करने के लिए छईयां-छईयां काफी दूर है शक्ति मुंड! और रही इच्छाधारी शक्ति की बात तो उससे मेरा शरीर बड़ा हो जाएगा, और फिर इस किरण को अपना निशाना ढूंढने के लिए ज्यादा मेहनत नहीं करनी होगी! ...
एक सूर्य तारा होता तो मैं ग्रहण लगने की दुआ भी मांगता! पर यहां तो छः- छः सूर्य तारे हैं! ग्रहण लगेगा भी तो कितनों को?
ग्रहण! वाह शक्ति मुंड!
तूने तो सचमुच अपनी खाली खोपड़ी का इस्तेमाल कर लिया!

अगर इन सभी सूर्य तारों को ग्रहण लग जाए तो ये परछाईयां गायब हो जाएंगी! और फिर मुझे सिर्फ इसकी किरण से बचना होगा ... यानी तब मेरे जीतने की संभावनाएं बढ़ जाएंगी!
और ये ग्रहण मेरी सर्प सेना लगाएगी, मेरे विशेष नागफनी सर्पों के नेतृत्व में!

मेरे नागफनी सर्पों, तुमको अति तीव्र गति से घूमते रहना होगा, ताकि यह 'सर्प चकरी' हवा को काटती हुई हवा में स्थिर रह सके! ठीक किसी हैलीकॉप्टर की तरह!
हैलीकॉप्टर क्या? अच्छा! वह पृथ्वी वाला उड़न यंत्र! समझा!
समझ गए! वेरी इंटेलीजेंट, खाली खोपड़ी! पर यह ग्रहण सिर्फ छईयां-छईयां के लिए लगेगा!

सिर्फ कुछ ही पलों बाद छईयां-छईयां को नागराज के इस वार का मतलब समझ में आ गया—
ओह! इस नागराज के सर्प एक चकरी के रूप में सिर्फ उन दोनों सूर्यों की रोशनी मुझ तक पहुंचाने से रोक रहे हैं!
जिनकी परछाईयां भूमि पर बन रही हैं!

परन्तु तेरा यह वार सफल नहीं होगा नागराज ! मैं सूर्यतारे की ग्रहण लगा रही तेरी 'नाग-चकरियों' की पल भर में परछाई बनाकर अपने शरीर में समा लूंगा ! और सूर्य तारे फिर से आज़ाद हो जाएंगे !...और उतनी देर में तू मेरा कुछ बिगाड़ नहीं पाएगा। क्योंकि तू दूर से वार कर नहीं सकता, और उड़कर मुझ तक पहुंच नहीं सकता !
यह छईयां-छईयां कह तो सच रहा है! पर ये भूल रहा है कि इतनी देर तक न तो ये खुद मुझ पर वार कर पाएगा, और न ही मुझ पर वार करने के लिए इसकी परछाईयां मौजूद रहेंगी !
और रही उतनी देर में इस तक पहुंचने की बात तो यह भी सत्य है कि यहां पर मेरी उड़ सकने की शक्ति निष्क्रिय हो गई है !
पर मैं विशालकाय इच्छाधारी रूप धारण करके इस तक आराम से पहुंच सकता हूं !
इच्छाधारी नागराज !
नागराज का शरीर एक पल बीतने के साथ ही विशाल रूप धारण करके छईयां-छईयां के करीब पहुंच रहा था-
और छईयां-छईयां के काम पूरा कर पाने से पहले ही नागराज उस पर हमला बोल चुका था-
फू ऊ ऊ ऊ
नागराज की उस अति तीव्र भीषण विष फुंकार ने छईयां-छईयां को मारा या बेहोश तो नहीं किया, पर उसके सर को चकरा अवश्य दिया-

और इससे पहले कि छईयां-छईयां अपने चकराते सिर को संभालकर वार कर पाता, नागराज का विशाल मुक्का उसे, उसी सूर्य में भेज चुका था, जिसकी किरणों ने उसे परछाई बनाने की इजाजत दी थी-
छईयां-छईयां की आखिरी चीख के साथ-साथ-
शंभूक की चीख भी निकल गई-
नहीं! यह नहीं हो सकता। छईयां-छईयां मामूली मानव के हाथों नहीं मर सकता! जो देवों तक से पराजित नहीं हुआ, वह एक मानव के हाथों मृत्यु को प्राप्त हो गया!
मानव अधिक खतरनाक सिद्ध हो रहे हैं वत्स! शायद इसलिए क्योंकि देवों की तरह चमत्कारी शक्तियां पास में न होने के कारण ये मानव, बुद्धि का प्रयोग कर रहा है। और बुद्धि से ज्यादा घातक हथियार और कुछ नहीं होता!
खैर! देखते हैं कि दूसरा मानव क्या कर रहा है?
जहां तक मैं जानता हूं, उसके पास कोई चमत्कारी शक्ति नहीं है! वह अपराजित तड़ितगिरी के हाथों अवश्य मरेगा!
शुक्राचार्य अपनी ही कही बात भूल रहे थे। 'बुद्धि' से ज्यादा चमत्कारी शक्ति और कोई नहीं होती। और यह शक्ति ध्रुव में कूट-कूट कर भरी थी-
शक्तिमुंड! अगर यह एक विद्युत तंत्र है तो इसमें बहने वाली विद्युत का कोई न कोई स्त्रोत भी अवश्य होगा! बताओ, कहां पर है वह स्त्रोत?
आओ! वह भी दिखा देता हूं। पर उससे कोई फायदा नहीं होगा।
क्योंकि उस विद्युत स्त्रोत को किसी भी प्रकार से छू पाना असंभव है। और बिना छुए वह स्त्रोत नष्ट नहीं हो सकता!
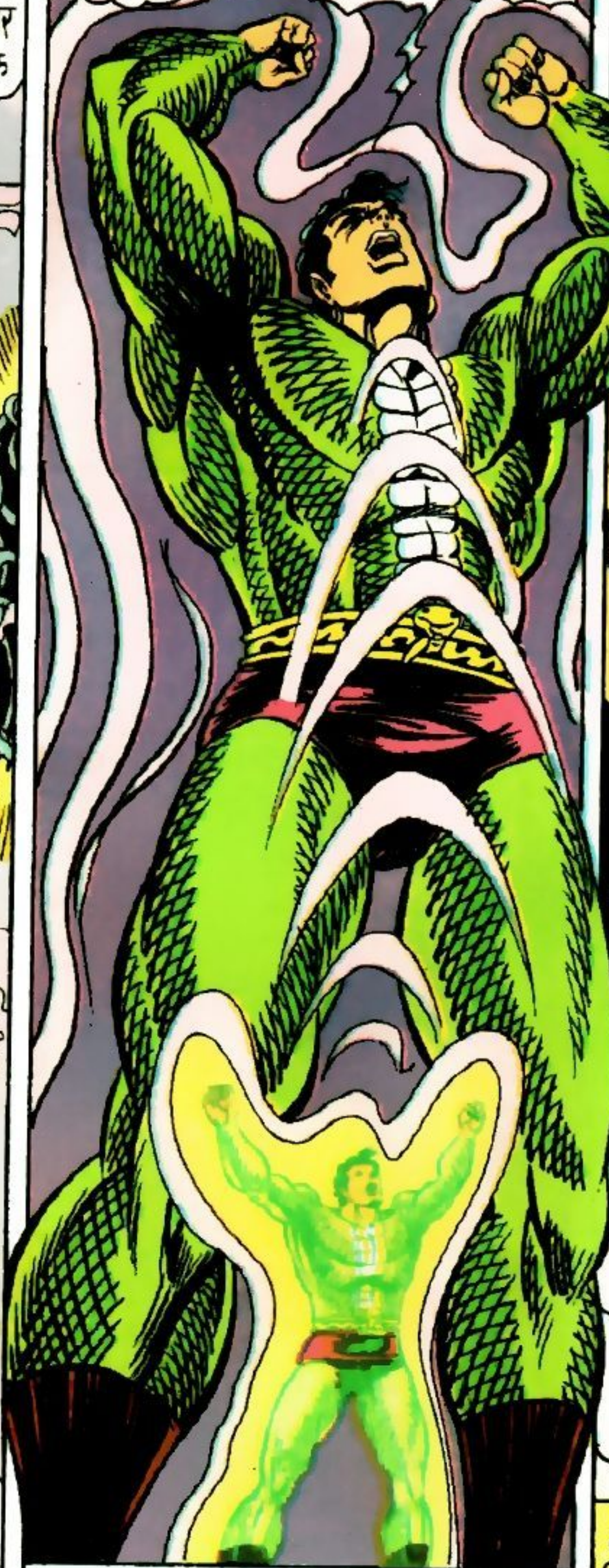
...इसको हटाने का तरीका तो बाद में सोच लेंगे! पर पहले तड़ित-गिरी के ध्यान बंटाने का रास्ता तो सोचो। वरना वह तुमको इतना मौका देगा ही नहीं कि तुम इस क्रिस्टल के आस-पास फटक भी सको!

आऽऽऽह। यह पहले ध्यान दिलाना चाहिए था न? पर इस तड़ित गिरी का क्या करूं? यह तो इस विशाल विद्युत तंत्र में कभी इधर तो कभी उधर घूमता रह सकता है! इसको किसी चक्कर में फंसाऊं भी तो कैसे?...

...चक्कर! आहा। एक चक्कर है तो शक्ति मुंड! तुम एक काम करो! मुझे इस विद्युत तंत्र का आखिरी छोर दिखाओ! और भगवान से प्रार्थना करो कि वह इस क्रिस्टल से ज्यादा दूर न हो!

दूर नहीं है। है तो पास में ही! पर तुम करना क्या चाहते हो? कभी विद्युत स्रोत दिखाओ, कभी सबसे दूर का बिन्दु दिखाओ! तुमने मुझे सचमुच का गाइड समझ लिया है क्या?
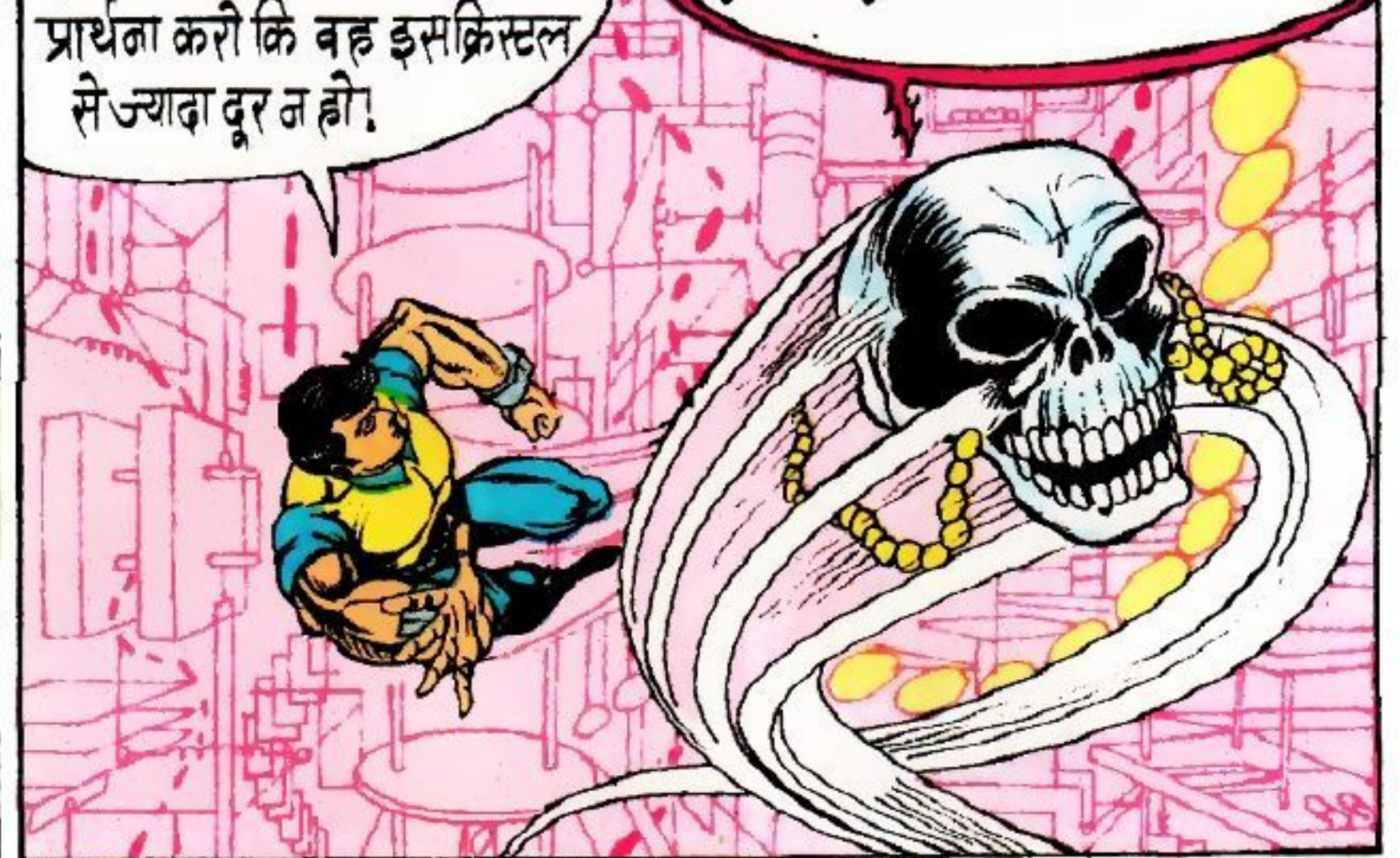
'स्टार लाइन' क्या? अच्छा, वह डोरी, जिस पर तुम लटककर उड़ने की कोशिश करते हो! लेकिन यहां पर तो तुम अपने-आप उड़ रहे हो! डोरी की क्या आवश्यकता है?

ओफ्फ! इस डोरी से मैं और भी बहुत सारे काम करता हूं शक्ति मुंड! और इस समय मैं इसका इस्तेमाल इस विद्युत तंत्र को 'शॉर्ट सर्किट' करने के लिए कर रहा हूं!

शॉर्ट सर्किट? वह क्या... अच्छा जाने दो! अभी करोगे तो अपने आप पता चल जाएगा!

दिल छोटा मत करो शक्ति मुंड! मैं तुमको समझा देता हूं कि मैं क्या करने जा रहा हूं!

देखो हर विद्युत तंत्र में विद्युत दो छोरों के बीच में ही बह सकती है। एक विद्युत प्रवाह करने वाला छोर, और दूसरा निष्क्रिय या 'न्यूट्रल' छोर! पृथ्वी पर इस दूसरे वाले छोर को पृथ्वी से सटाकर भी रखा जाता है, जिसे 'अर्थिंग' करना कहते हैं! इस तंत्र में तड़ित गिरी ने भी इस दूसरे छोर से 'अर्थिंग' दी हुई है! उस दूर ग्रह से इस विद्युत तंत्र के आखिरी छोर को जोड़कर!

अब अगर इस न्यूट्रल छोर को और क्रिस्टल को जोड़ दिया जाए तो 'शॉर्ट सर्किट' हो जाएगा!

और यह विद्युत तंत्र नष्ट हो जाएगा!

समझे?

नहीं समझे!

वो देखो! मैंने अपनी स्टार लाइनों को जोड़ कर इतना लम्बा कर लिया है कि वे क्रिस्टल तक पहुंच जाएं!

ध्रुव की कलाई से स्टार लाइन निकल कर क्रिस्टल की तरफ लपकी—

और दोनों छोर आपस में जुड़ते ही पूरा विद्युत संयंत्र शॉर्ट सर्किट होने लगा—

वाह! मैं शक्ति देवी से प्रार्थना करूंगा कि थोड़ा सा विज्ञान वह मुझे भी सिखा दे! यह तो जादू से भी अच्छा है। पर कोई खास फायदा नहीं होगा ध्रुव! क्योंकि तड़ित गिरी एक नए विद्युत तंत्र को फिर से खड़ा कर लेगा!

मुझे इसका भी आभास है शक्ति मुंड! इसीलिए दूसरा विद्युत तंत्र खड़ा होने से पहले ही मुझे इस क्रिस्टल को हटाना पड़ेगा!

पर कैसे?

बिना स्पर्श किए वह कैसे हटेगा?

इसका सिर्फ एक ही तरीका है! और उसको एक बार में ही सफल बनाना होगा! क्योंकि मुझे दूसरा मौका नहीं मिलेगा!
दूसरा मौका कैसा? अभी तो पहला ही मौका नहीं मिला है!
ऐसा कहते हैं शक्ति मुंड! कहावत है! और सिर्फ एक ही मौका इसलिए है, क्योंकि मेरे पास सिर्फ दो ही स्टार लाइनें बची हैं! बाकी तो इस शॉर्ट सर्किट में जलकर नष्ट हो गई हैं!
तुम 'स्टार लाइन' से क्रिस्टल को हटाओगे? अरे, पलभर के लिए क्रिस्टल से तुम्हारा स्पर्श होते ही तुम्हारा ढांचा तक नहीं बचेगा!
ऐसा नहीं होगा, शक्ति मुंड! मैंने दोनों स्टार लाइनें आपस में जोड़ दी हैं! पर पहले मुझे इस क्रिस्टल के जोड़ों को जरा ढीला करना होगा!
हवा में सरसराते हुए 'स्टार ब्लेड' क्रिस्टल के चारों तरफ धंसकर जोड़ों को ढीला करने लगे-
अब ध्रुव अपने वार के लिए तैयार था-
दो जुड़ी स्टार लाइनों में से एक स्टार लाइन का मुक्त छोर हवा को काटता हुआ क्रिस्टल में धंसने के लिए लपका-
परन्तु इससे पहले कि स्टार लाइन का स्पर्श क्रिस्टल से हो पाता-
स्टार लाइनों का दूसरा सिरा भी हवा में तैर गया! और उसका निशाना था विद्युत तंत्र का वह हिस्सा जो अब तक तो नहीं फटा था, पर जिसका फटना अवश्यंभी था-
स्टार लाइन ने अपने दोनों निशानों को लपेट में ले लिया था-
अगले ही पल विद्युत तंत्र का वह हिस्सा फट पड़ा-
और उस धमाके से उस हिस्से के टुकड़े हवा में उड़े और साथ ही साथ स्टार लाइन को भी खींचते ले गए-

और इस झटके ने, क्रिस्टल को भी अपनी जगह से खींचकर अंतरिक्ष में उछाल दिया-
और इस अभिरक्षित हिस्से में गुरुत्त्व बल मौजूद न होने के कारण क्रिस्टल अंतरिक्ष में तैरता चला गया-
वाह, ध्रुव! कमाल कर दिया तुमने! तड़ित गिरी के विद्युत तंत्र की जड़ को ही उखाड़ दिया!
कमाल होना तो अभी बचा है, शक्ति मुंड! ...
...क्योंकि अब तड़ित गिरी इस तंत्र से बाहर आ जाएगा और फिर मैं उससे कैसे निपटूंगा ये मुझे नहीं पता!
उसका तरीका सोचने की आवश्यकता ही नहीं है ध्रुव! क्योंकि तड़ित गिरी की शक्ति उसके शरीर में बहती विद्युत ही थी!... अब जब वह विद्युत ही समाप्त हो गई तो तड़ित गिरी की शक्ति भी समाप्त हो गई है!
अब तो तुम्हारा सिर्फ एक मुष्टि प्रहार ही इसके लिए पर्याप्त होगा!
वाह! क्या बात बताई है शक्ति मुंड! यह तो सचमुच एक ही वार में चित्त हो गया! अब तू अपने गाल पर खाल उगा ही ले, शक्ति मुंड!
शंभूक इस दृश्य पर यकीन नहीं कर सका-
तड़ित गिरी परास्त हो गया! असंभव! यह नहीं हो सकता! मुझे दृष्टि भ्रम हो रहा है!
यह भ्रम नहीं है शंभूक! दरअसल तुम वह देख रहे हो जो तुम देखना नहीं चाहते!
ये दोनों मानव बुद्धि का प्रयोग कर रहे हैं। ब्रह्माण्ड के सबसे घातक अस्त्र का!...
... मेरा सुझाव है कि तुम इनका रास्ता रोकने की कोशिश मत करो! इनको सीधा परम शक्ति के क्षेत्र में भेज दो ...

और आशा करो कि परम शक्ति के क्षेत्र से ये वापस न आ सकें! अपने योद्धाओं की संख्या कम करने का कोई फायदा नहीं है!
आप... आप ठीक कह रहे हैं गुरूदेव! मैं तुरन्त असुरलोक के दोनों क्षेत्रों से परम शक्ति के क्षेत्र तक जाने वाला द्वार खोल देता हूं! इसके बाद स्वयं परम शक्ति ही इससे निपट लेगी!
नागराज, खुद भी बाहर निकलने का रास्ता तलाश कर रहा था-
अब हम कहां जाएं शक्ति मुंड? यहां से बाहर जाने का तो कोई रास्ता ही नजर नहीं आ रहा है!
हर असुर का असुरलोक में अपना एक क्षेत्र होता है नागराज! और उस क्षेत्र के द्वार पर वही असुर अवरोध लगा सकता है!
और जब वह असुर परास्त हो जाता है तो वह द्वार अपने आप ही खुल जाता है, यहां भी ऐसा ही होना चाहिए!
लो! हवा में एक द्वार खुल रहा है! हमको इसी के पार जाना पड़ेगा... पर दूसरी तरफ क्या होगा, यह मैं भी नहीं बता सकता!
हमारे पास सोचने का वक्त नहीं है शक्ति मुंड! चलो!
नागराज और शक्ति मुंड बिना सोचे उस द्वार में प्रवेश कर गए-
तड़ित गिरी के क्षेत्र से बाहर जाने वाला द्वार भी खुल गया था-
ए... एक पल रुक जाओ ध्रुव! मैं जरा झांक कर देख तो लूं कि उस पार क्या है? हो सकता है कि उस पार हम किसी खौलती भट्ठी में जा गिरें!
ताक-झांक बुरी बात है, शक्ति मुंड! वैसे भी उधर भट्ठी हो या बर्फ, हमको तो द्वार के पार जाना ही है!
आओ!
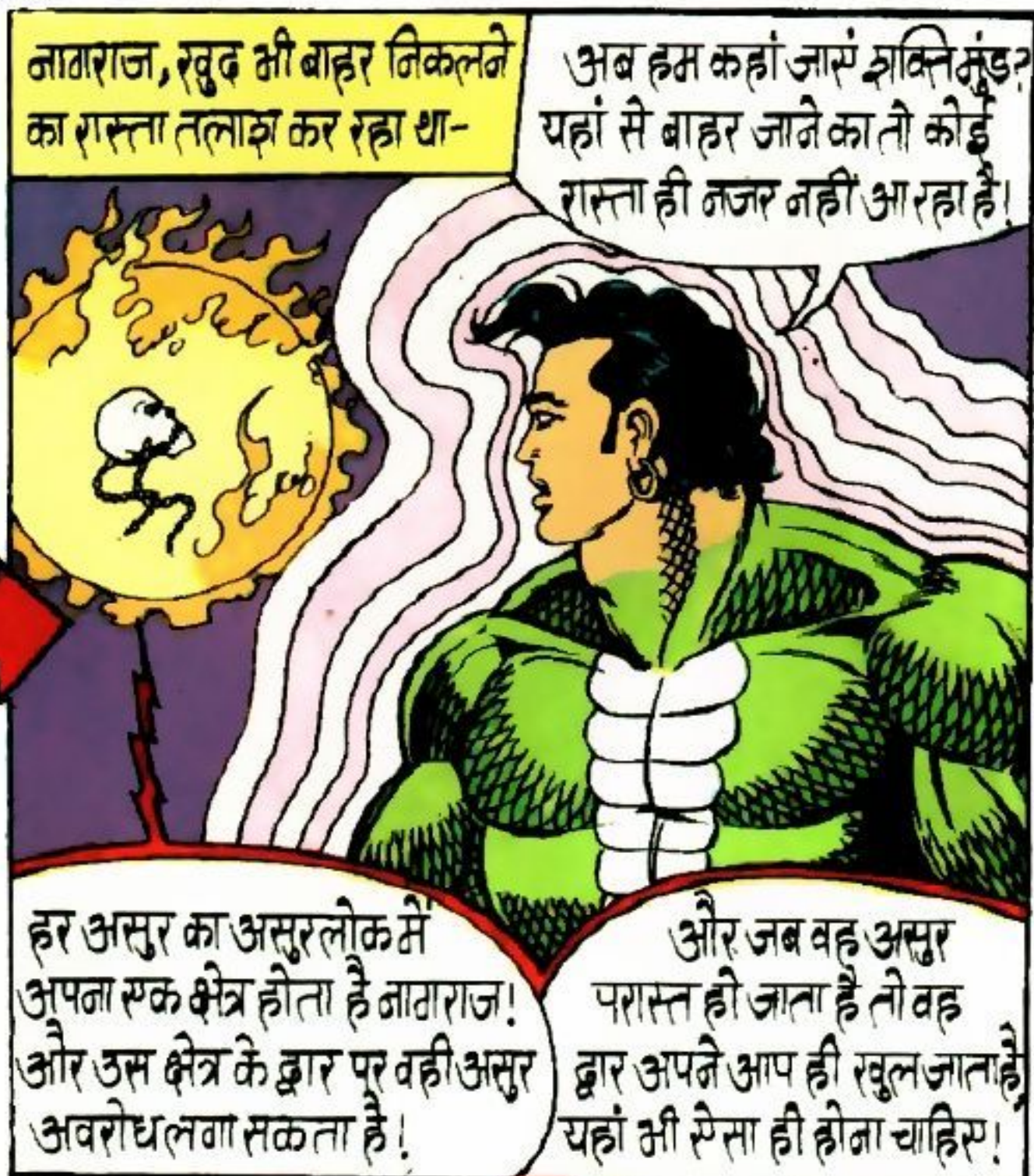
दोनों द्वार, एक ही क्षेत्र में खुलते थे-
ध्रुव!
नागराज! शुक्र है भगवान का कि तुम ठीक-ठाक हो! हमको अलग-अलग करना शायद असुरों की चाल थी!
मुझे भी यही लगता है, ध्रुव! पर वे सफल नहीं हो सके! न वे तुमको नुकसान पहुंचा पाए और न ही मुझको!
पर अब हम कहां आ गए हैं?
जवाब, एक-दूसरे से जुड़कर एकाकार हो रहे शक्ति मुंडों से मिला-
अरे! हम तो परम शक्ति के क्षेत्र में पहुंच गए हैं नागराज और ध्रुव! बड़ी जल्दी आ गए हम यहां तक!
अद्भुत स्थान लग रहा है यह!... अब हम किस दिशा में जाएं शक्ति मुंड? कहां मिलेगा शतरूपा पुंज?
वह कहीं पर भी हो सकता है ध्रुव! पर वह दिखेगा तभी जब परम शक्ति चाहेगी!
तो फिर यही बता दो कि परम शक्ति से साक्षात्कार कहां पर हो सकता है?
परम शक्ति तो ब्रह्माण्ड के कण-कण में रहती है नागराज! यहां पर भी हर जगह परम शक्ति है! जब वे उचित समझेंगी स्वयं प्रकट हो जाएंगी!
थोड़ा सा आगे बढ़ते ही नागराज और ध्रुव दोनों ही स्तब्ध रह गए-
ये लोग कौन हैं? कैसे प्राणी हैं ये?
ये वो देव और असुर हैं जिन्होंने परम शक्ति की आज्ञा के बगैर इस क्षेत्र में घुसने की कोशिश की। और शक्तियां पाने के लिए!

ध्रुव और नागराज उस दिशा की तरफ घूमे! और अपने आप ही पहले उनके घुटने झुकते चले गए और फिर उनके सिर-

आहा! एकाएक अत्यन्त शान्ति का आभास हो रहा है! आपके दर्शन होते ही सारी इच्छाएं और कामनाएं समाप्त हो गई हैं! प्रणाम स्वीकार करें परम शक्ति!

और हमारे अपराध का दंड, शक्ति मुंड को न दें। यह तो मात्र पथ-प्रदर्शक है! हमारे यहां आने का निर्णय हमारा अपना था। स्वतंत्र निर्णय!

परन्तु हमको दंड का भागी समझने से पहले हमारे यहां आने का कारण जान लीजिए! हम यहां पर ...

...तुम शतरूपा पुंज लेने आए हो! जिससे कि तुम जयंत को फिर से सामान्य रूप में ला सको! हमको पता है!... वैसे तो यहां पर आने वाले हर प्राणी के लिए सिर्फ एक ही दंड है! दो बार चार युगों तक की कैद! और वह भी इसलिए, क्योंकि वे सभी मुझसे किसी न किसी प्रकार की शक्ति मांगने आए थे... परन्तु मैं अपने द्वारा रचित ब्रह्माण्ड में सन्तुलन चाहती हूं। देव या दैत्य किसी को भी अतिरिक्त शक्ति देकर असंतुलन फैलाना नहीं चाहती।

क्षमा करें परम शक्ति! परन्तु हमको बुद्धि प्रदान करके आपने पहले से ही पर्याप्त शक्ति दे रखी है! और अगर ब्रह्माण्ड ही नहीं रहेगा तो हम किसी भी शक्ति का क्या करेंगे?
आप हमें शतरूपा पुंज को ही अपने आशीर्वाद के रूप में प्रदान करें ताकि हम आपकी इस ब्रह्माण्ड की रचना को नष्ट होने से बचा सकें!
यह कार्य तो हम स्वयं भी कर सकते हैं। फिर तुमको शतरूपा पुंज सौंपने की क्या आवश्यकता है?

परन्तु तुम स्वयं नहीं आए हो! देवों ने तुमको भेजा है! और यह शक्ति तुमको स्वयं के लिए भी नहीं चाहिए। इसलिए देवों के लिए शतरूपा पुंज हम नहीं दे सकते!... हां, पर चूंकि यहां तक आने के लिए तुमने अपने प्राणों की जो बाजी खेली है...
...उससे हम अति प्रसन्न हुए हैं! तुम दोनों अपने लिए जो शक्ति चाहो मांग लो!
चाहे पृथ्वी का राज्य, आकाश गंगा की सम्पत्ति या फिर अमरत्व! जो चाहे मांग लो!
आपको यह कार्य करना होता तो यह कार्य बहुत पहले ही हो जाता! स्पष्ट है कि देव और असुर दोनों ही आपके लिए दो पुत्रों के समान हैं! और इस कारण देवों का या असुरों का पक्ष लेना आपके लिए कठिन है!
धन्य हो मानवों! आज मुझे आभास हो रहा है कि मेरी रचना मानव भी मेरा तीसरा पुत्र बनने के सर्वथा योग्य है! तुम्हारे स्वार्थ रहित स्वभाव एवं तर्क संगत वार्तालाप ने मुझे प्रसन्न कर दिया है। पर बिना परीक्षा लिए हम तुम्हारे हाथों में शतरूपा पुंज नहीं सौंप सकते! एक अन्तिम परीक्षा तो तुमको देनी ही होगी!
देखो! यह है शतरूपा पुंज का वृक्ष! इसमें शतरूपा पुंज के सौ प्रकार लगे हुए हैं! यह वृक्ष कुछ ही समय तक प्रकट रहेगा! और उस कुछ समय में तुमको शतरूपा का वह प्रकार ढूंढ निकालना है, जो तुम्हारे मतलब का है!

परन्तु परम शक्ति... अरे! परम शक्ति अदृश्य हो गई!
पर भई, मेरी जान बख्शती गई! तुम दोनों का बहुत-बहुत धन्यवाद! वरना मैं कम से कम दो-तीन युगों तक तो इस जलन को भोगता रहता!
इतने आभारी हो तो कुछ काम करके भी दिखाओ! यहां पर तो सौ-सौ शतरूपा पुंज हैं! पता लगाओ कि इनमें से हमारे मतलब का शतरूपा पुंज कौन सा है?...

...और वह भी जल्दी से जल्दी! कहीं ये पेड़ भी अदृश्य हो गया, तो सारी यात्रा बेकार हो जाएगी!
कैसे पता लगाऊं? किसी भी एक शतरूपा पुंज को स्पर्श करते ही मेरी सारी शक्ति नष्ट हो जाएगी! दूसरे को तो मैं जांच भी नहीं पाऊंगा!
फिर क्या करें? ये सारे तो देखने में एक जैसे ही लग रहे हैं!
बन गया काम ध्रुव! हमको वही खास शतरूपा पुंज चाहिए जो जयंत के विराट रूप की शक्ति को नष्ट कर दे!

वही शक्ति जिसे मेरे रक्त में घुली शक्ति से तैयार किया गया है! अब मैं विराट इच्छाधारी रूप धारण करने के बाद एक-एक करके इन पुंजों को छूऊंगा! और जो पुंज मुझे छोटा कर देगा, वही हमारे मतलब का शतरूपा पुंज होगा!
इच्छाधारी नागराज!
परन्तु नागराज इससे तो तुम्हारी सारी इच्छाधारी शक्ति नष्ट हो जाएगी...
...और वह तुमको फिर शायद कभी नहीं मिलेगी!

कोई बात नहीं ध्रुव! यह तो सिर्फ इच्छाधारी शक्ति है! इस अभियान की सफलता के लिए तो मैं अपनी जान भी कुर्बान कर सकता हूं!
विराट इच्छाधारी नागराज तेज गति से वृक्ष में लटके शतरूपा पुंजों को छूने लगा—

और बावनवें प्रयास में उसकी कोशिश रंग ले आई—
मेरी इच्छाधारी शक्ति नष्ट हो गई है ध्रुव! मेरा आकार अपने-आप छोटा होता जा रहा है! यानी यही है शतरूपा पुंज का वह रूप है, जिसकी हमें तलाश है! ले चलो इसे!
तुम ही इसको क्यों नहीं उठा लेते नागराज?

और असुर लोक में शंभूक क्रोध से थर-थर कांप रहा था-

बस, गुरूदेव! अब आप और कुछ नहीं सोचेंगे! और न ही मुझे कोई सलाह देंगे! पानी गले के ऊपर तक आ गया है!... अब असुरराज शंभूक खुद जाएगा इन मानवों को मौत के घाट उतारने! जयंत को मैं कभी छोटा नहीं होने दूंगा! कभी नहीं!
सुनो शंभूक! रुको! जोश में मत आओ!... ओफ्फ! अब ये नहीं रुकेगा!
असुरराज शंभूक ने स्वयं हमले की कमान संभाल ली थी-
उन मानवों को समाप्त करने के लिए जिनका इस वक्त स्वागत हो रहा था! एक महादुष्ट अभियान को सफलता पूर्वक पूरा करके सकुशल वापस आने की खुशी में-
मुझे तो अपनी आंखों पर भरोसा नहीं हो रहा है! तुम दोनों शतरूपा पुंज लेकर वापस आ गए! इस वक्त मुझे अपने आप पर सिर्फ इसलिए गर्व हो रहा है कि मेरा चुनाव गलत सिद्ध नहीं हुआ!
ये प्रशंसा पत्र हमको फिर कभी दे देना शक्ति! फिलहाल तो इस शतरूपा पुंज का इस्तेमाल जयंत को सामान्य आकार का करने में कर लो?
यह तो मामूली काम है! इस शतरूपा पुंज को जयंत के मुख या नाक के अंदर डालना होगा, ताकि यह जयंत के शरीर के अंदर जाकर द्विगुणित होने वाली शक्ति को नष्ट कर दे! और साथ ही साथ उस शक्ति द्वारा खुद भी नष्ट हो जाए!
जयंत के अंदर की शक्ति नष्ट नहीं होगी...
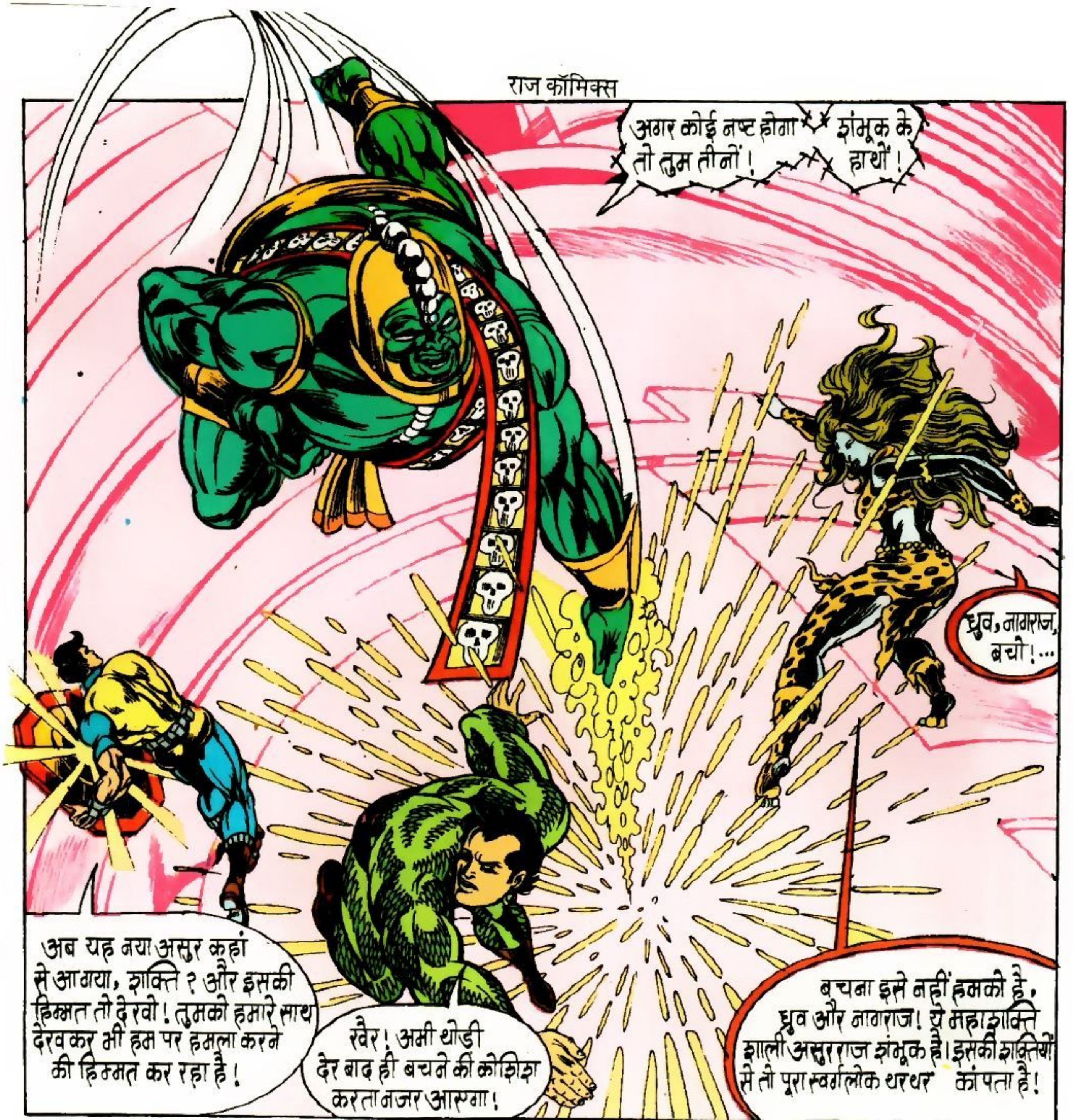
अगर कोई नष्ट होगा तो तुम तीनों!
शंभूक के हाथों!
ध्रुव, नागराज, बचो!...
अब यह नया असुर कहां से आ गया, शक्ति? और इसकी हिम्मत तो देखो! तुमको हमारे साथ देखकर भी हम पर हमला करने की हिम्मत कर रहा है!
खैर! अभी थोड़ी देर बाद ही बचने की कोशिश करता नजर आएगा!
बचना इसे नहीं हमको है, ध्रुव और नागराज! ये महाशक्ति शाली असुरराज शंभूक है। इसकी शक्तियों से तो पूरा स्वर्गलोक थरथर कांपता है!
तो फिर हम क्या करें?
तुम दोनों जयंत के मुख तक जाकर शतरूपा पुंज को उसके अंदर डालो! तब तक मैं इसको रोके रखती हूं!
तू? तू मेरे सामने क्या टिकेगी शक्ति? तेरी ऊष्मा शक्ति को तो मैं पलभर में राख का ढेर बना दूंगा!
परन्तु मेरा पहला कार्य शतरूपा पुंज का प्रयोग होने से रोकना है! मैं तो चला मानवों के पीछे!

शक्ति तुझे 'उन मानवों' के पीछे जाने देगी तब जाएगा न शंभूक?
शक्ति के अनेक रूपों ने शंभूक को चारों तरफ से घेरकर वार करना शुरू कर दिया-
परन्तु शंभूक उन सभी अग्नि लहरों को पानी की तरह पी गया-
और फिर वही अग्नि लहर एकजुट होकर शक्ति की तरफ लपकी-
आऽऽह! यह प्रचंड ऊष्मा तो मुझको तक सुलगाए दे रही है! आऽऽऽह!
अब तू सुलगती रह शक्ति! पर घबरा मत! तेरी यातना ज्यादा देर तक नहीं चलेगी! क्योंकि मैं वापस आकर सबसे पहले तुझे ही समाप्त करूंगा!
नागराज और ध्रुव को बीच में ही रुक जाना पड़ा-
ए शंभूक!
असुरराज शंभूक, बोलो कीड़ों! मन तो कर रहा है कि तुम दोनों को अभी मसल दूं पर अब देवताओं का समूह आता ही होगा! उससे पहले मुझे शतरूपा पुंज को नष्ट करना है!
शतरूपा पुंज को तुम नष्ट नहीं कर सकते शंभूक! यह परम-शक्ति की शक्ति है!
शक्ति नहीं, शक्ति की काट बोलो मानव! मैं इस पर अपनी शक्तियों से वार करूंगा! यह मेरी शक्तियां काटता जाएगा, और साथ ही साथ इसकी शक्तियां भी नष्ट होती जाएंगी!
आऽऽऽह! पर इससे तो तुम्हारी शक्तियां भी नष्ट हो जाएंगी शंभूक! फिर तुम देवताओं से कैसे लड़ोगे? ऐसा मत करो!
मुझे समझा मत, मानव!
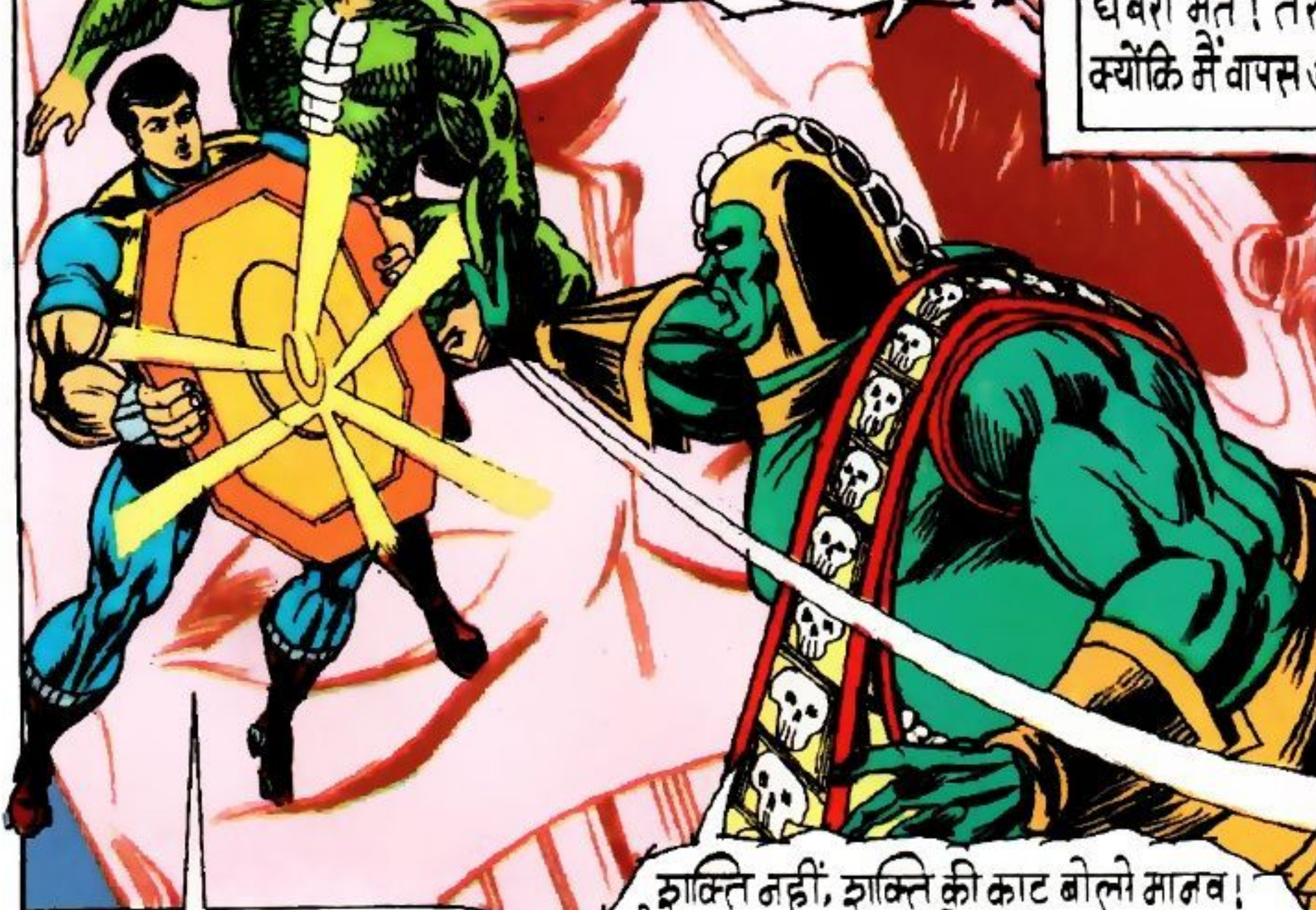
मेरी शक्तियां नष्ट तो जरूर ही जाएंगी, पर मैं देवताओं के आने से पहले ही काम पूरा करके यहां से खिसक लूंगा! और फिर गुरु शुक्राचार्य यज्ञ के द्वारा मेरी शक्तियों को फिर से मेरे शरीर में उत्पन्न कर देंगे!
शंभूक की आंखों से किरणें निकलकर शतरूपा पुंज पर गिरती रहीं, और शंभूक तथा शतरूपा पुंज दोनों की ही शक्ति एक-दूसरे को काटकर समाप्त करती रहीं। तब तक, जब तक-
शतरूपा पुंज की चमक पूरी तरह से समाप्त नहीं हो गई-
हा हा हा हा! शंभूक सफल हुआ! शतरूपा पुंज की शक्ति नष्ट हो गई। अब जयंत को ठीक कर सकने की शक्ति सिर्फ असुरों के पास है। और उसका प्रयोग हम तभी करेंगे, जब देवता घुटने टेक देंगे। हा हा हा हा!
ओफ! सब खत्म हो गया ध्रुव? हमारी सारी मेहनत, देवताओं की सारी आशाएं और ब्रह्माण्ड की हम पर टिकी सारी उम्मीदें...
...एक साथ समाप्त हो गई!
तुमने इसका प्रलाप शायद ध्यान से नहीं सुना नागराज!
जयंत को सामान्य आकार का कर सकने की शक्ति इनके पास है!... बस, हमको इतना करना है कि हम असुरों को उस शक्ति का प्रयोग करने पर मजबूर कर दें!
पर ये हम करेंगे कैसे?
ध्यान से सुनो!...
ध्रुव, नागराज को अपनी योजना समझाता चला गया-
और अगले ही पल दोनों शंभूक पर एक साथ टूट पड़े थे-
तूने अपनी शक्तियों को नष्ट करवा के बड़ी गलती की है शंभूक! अब हम तुमको देवताओं के आने तक यहां से जाने नहीं देंगे!
मैं भी आ गई हूं! और मैंने सारा घटनाक्रम देख भी लिया है। अब यह दुष्ट हमारा बंधक बनकर ही रहेगा!...
...अपनी ही आग बुझाने में मुझे वक्त लग गया!
पर अब मैं ठीक हूं!
अरे, तुम कीड़ों ने शक्ति खत्म होने का मतलब यह लगा लिया...
...कि मैं शक्तिहीन हो गया! अरे मुझमें अभी भी इतनी शक्ति तो बची ही है कि तुम तीनों को मसल सकूं!
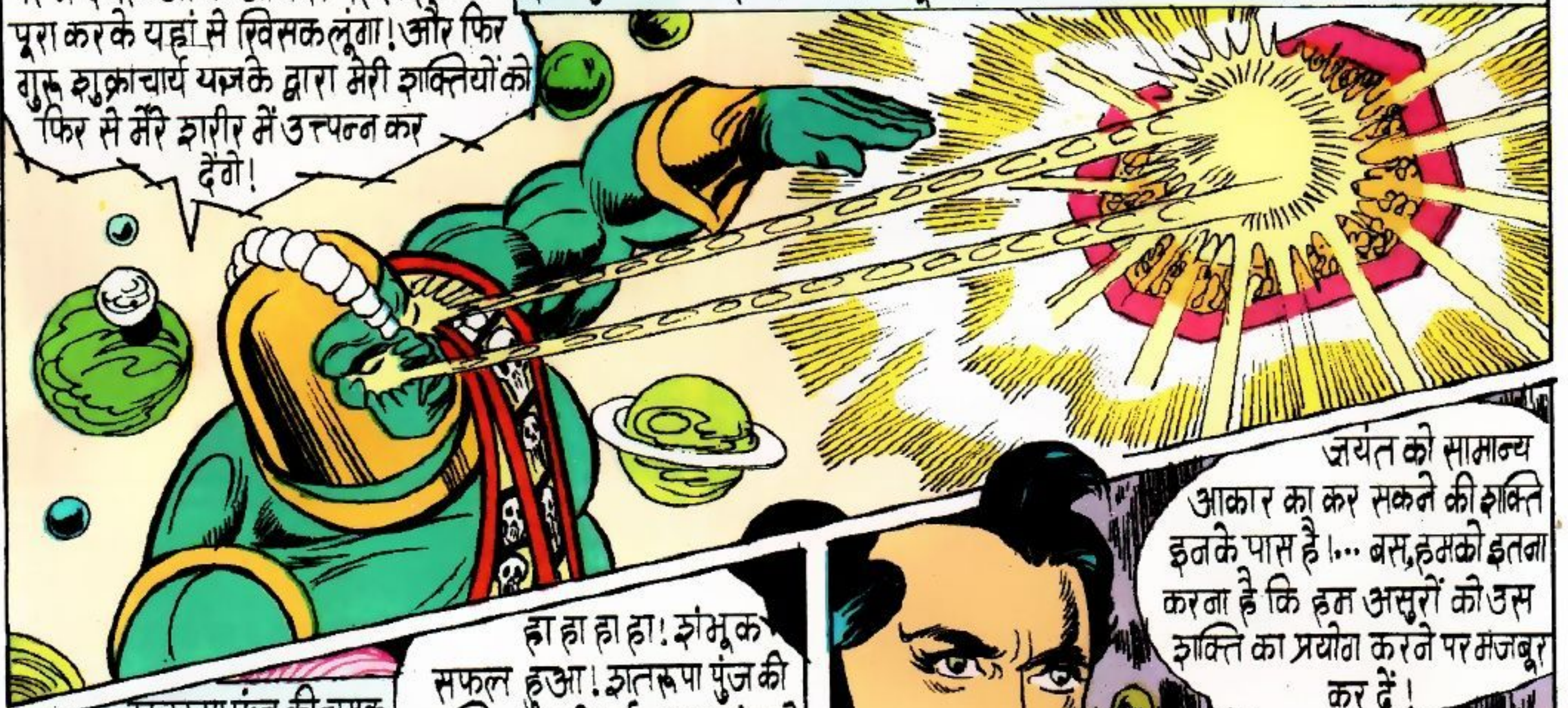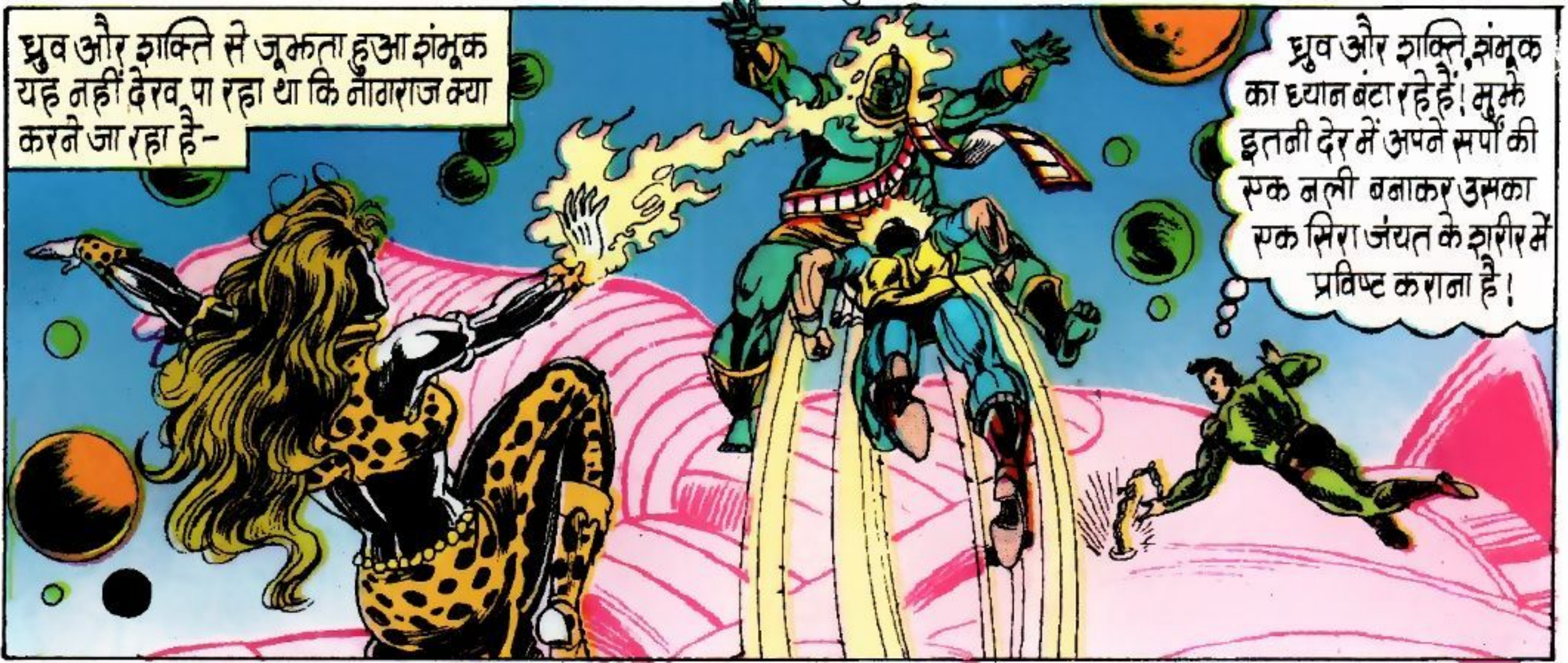
और दूसरा शंभूक के जिस्म में। मेरे सर्प चबा-चबाकर शंभूक के शरीर के अंदर जाने का रास्ता बना लेंगे! और फिर विशाल जयंत के शरीर का खून, दबाव मारता हुआ शंभूक के शरीर के अंदर प्रविष्ट हो जाएगा। और जयंत के खून में मिली शक्तियां, शंभूक के शरीर के अंदर पहुंच कर वही असर पैदा करने लगेंगी, जो जयंत के शरीर पर हो रहा है!

दिव्य दृष्टि से सब कुछ देख रहे गुरु शुक्राचार्य क्रुद्ध हो उठे-

मूर्ख कहीं का! मुझसे बगैर विचार-विमर्श किए निकल गया! अब भुगत रहा है! पर अब मैं क्या करूं? शंभूक के लिए 'शक्ति काट' का प्रयोग करता हूं तो वह जयंत वाली द्विगुणित शक्ति भी काट देगा! क्योंकि दोनों एक ही शक्तियां हैं!

सिर्फ एक ही रास्ता है! इससे पहले कि शंभूक बेहोश होकर देवों का बंधक बन जाए, मुझे 'शक्ति काट' का प्रयोग करना ही पड़ेगा!...
ओउम! चंड मुंड कापालि के शक्ति प्रदानम् करोति! ह्रोऽऽऽऽ ह्रीम नष्टम भवति शक्ति नष्टम भवति! समापनम!
शुक्राचार्य के हाथों से 'शक्ति काट' की किरणें निकलकर-
जयंत के विशाल शरीर में, मुख में, और विशाल हो रहे शंभूक के मुख में प्रवेश करके 'द्विगुणित-शक्ति' को नष्ट करने लगीं-
और दोनों के शरीर तेजी से सामान्य रूप में आने लगे-
साथ ही साथ शंभूक का शरीर भी गायब होने लगा-
ओह! लगता है गुरु शुक्राचार्य अपनी शक्तियों से शंभूक को दूर प्रेषित कर रहे हैं!...
... अब हम इसे नहीं पकड़ सकते! ओफ़!

उसका भाग जाना ही बेहतर है शक्ति! क्योंकि अब वह हमको मुंह दिखाने लायक नहीं रहा।
देवराज!
देवराज यानी...
देवराज इन्द्र! ओह!

हमारा प्रणाम स्वीकार करें देवराज!
हम तुम्हारा प्रणाम स्वीकार करने के योग्य नहीं रहे मानवों! आज तुमने देवताओं की सहायता नहीं, बल्कि देवताओं की रक्षा की है! हां, पर हम तुम्हारा धन्यवाद जरूर अदा करेंगे! हमको पता चला है कि असुरों की यह योजना कलियुग को हमेशा के लिए स्थिर रखने की थी! पर जो काम सतयुग, त्रेता, द्वापर में न हो सका वह कलियुग में हो गया। सिर्फ मानवों के हाथों असुरों की पराजय!
अगर हम कभी तुम्हारे काम आ सके तो तुम्हें सिर्फ हमारा ध्यान करने की आवश्यकता पड़ेगी! हम तुरन्त उपस्थित हो जाएंगे!

अब काली के रूप वाली शक्ति तुमको वैसे ही पृथ्वी पर वापस पहुंचा देगी, जैसे यहां तक लेकर आई थी!
देवों के धन्यवाद सहित हमारे पुत्र को बचाने के लिए हमारा व्यक्तिगत धन्यवाद भी स्वीकार करो! विदा!
स्वर्गलोक में तो शान्ति छा गई थी-

परन्तु असुरलोक में अशान्ति का राज था-
आईई ऽऽऽ यह आप क्या कर रहे हैं गुरुदेव! मैं... मैं तो असुरराज हूं! असुरराज! आप मुझे किसी शिशु की तरह क्यों मार रहे हैं?
पटाक

असुरराज? तू तो सूअरराज होने के योग्य भी नहीं है! बिना मुझे बताए भागा खड़ा हुआ शतरूपा पुंज नष्ट करने! और हमारी सारी योजना नष्ट करके वापस आ गया!
इस बार क्षमा कर दें गुरुदेव!
आगे से नित्य क्रिया करने भी आपसे पूछकर ही जाऊंगा!

और पृथ्वी पर नागद्वीप में–
नागराज! तुम वापस आ गए! पर तुम एकाएक चले कहां गए थे? तुम सकुशल तो हो न?
सकुशल हूं! पर आप सबसे इस बात के लिए क्षमा चाहता हूं कि आपकी इच्छाधारी शक्तियों का अंश मुझसे कहीं ...अ... खो गया है! उसके हर्जाने के रूप में आप जो कहेंगे, मैं करने को तैयार हूं!
यह अवश्य परम शक्ति की कृपा के फलस्वरूप हुआ है! उन्होंने मुझे धर्म-संकट में पड़ने से बचा लिया! आपको शत-शत बार नमस्कार है, परम शक्ति!
यह तुम क्या कह रहे हो नागराज! हमारी इच्छाधारी शक्ति तो अपने-आप ही वापस हमारे शरीर में आ गई थी!
हम तो सोच रहे थे कि जब तुम आओगे, तो तुमसे पूछेंगे कि ऐसा कैसे हो गया?
...गपोड़ी नम्बर वन!
हा हा हा हा हा हा हा हा हा!
और राजनगर में–
अरे! अभी-अभी तो तुम यहां नहीं थे? मैंने तुम्हारी खोज में सोफे तक उधेड़ डाले! दरवाजे की घंटी तक नहीं बजी!
खिड़की से कूदकर आते हो क्या? खैर छोड़ो! बताओ इस बार राजनगर को बचाया या पृथ्वी को?
ब्रह्माण्ड को! देवताओं ने बुलाया था!
हांय!
बन गई नई पिक्चर...
समाप्त.